ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

कार्तिक-मार्गशीर्ष, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ६ अंक ३ नवंबर 2012

संपादक : सिमरजीत सिंह एम. ए., एम. एस सी.
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919

एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

नैनी द्रिसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ सिरि कालो ॥
रूपु रंगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥१॥
प्राणी हरि जपि जनमु गइओ ॥
साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइओ ॥१॥रहाउ॥
तन महि कामु क्रोधु हउ ममता कठिन पीर अति भारी ॥
गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इन बिधि तरु तू तारी ॥२॥
बहरे करन अकलि भई होछी सबद सहजु नही बूझिआ ॥
जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गुर अंधु न सूझिआ ॥३॥
रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥
प्रणवति नानक गुरमुखि छूटसि राम नामि लिव लागी ॥४॥ (पन्ना ११२५)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'भैरउ' राग के अंतर्गत दर्ज उपरोक्त शबद में जीव को सचेत करते हुए श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि हे जीव! तेरे नेत्रों में देखने की ताकत नहीं रही, तेरा बदन कमज़ोर हो गया है, बुढ़ापे ने तुझे घेर लिया है, तेरे सिर पर काल खड़ा आवाजें दे रहा है अर्थात् तेरा अंतिम समय आने वाला है; न तेरा रूप ही आध्यात्मिक हुआ है, न तेरे पर दैवी रंग चढ़ा है, न तेरे हृदय में दैवी आनंद बना है, ऐसे में यमों का जाल तुझे कैसे छोड़ेगा? हे प्राणी! हरि का सिमरन किया कर। हरि के सिमरन के बिना तेरा जीवन व्यर्थ जा रहा है। परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना तू इस सांसारिक माया-मोह से छूट नहीं सकता और तेरा जीवन अकारण चला जाएगा। गुरु जी का फरमान है कि हे जीव! तेरे शरीर में काम, क्रोध, हउमै का प्रबल ज़ोर है तथा धन-सम्पदा एकत्र करने की प्रबल चाह है। इन सब विकारों के होते हुए तुझे चाहिए कि तू गुरमुख बनकर प्रभु-नाम-सिमरन कर, यही तुझे पार लगाने कि विधि है। हे जीव! प्रभु-नाम-सिमरन, प्रभु-कीर्ति सुनने से तेरे कान वंचित ही रहे; तेरी बुद्धि शिथिल हो गई है; प्रभु-यश के शांत रस को तू समझ नहीं सका है। अपने मन के पीछे लगकर (मनमुख बनकर) तूने अपना अमूल्य जन्म-पदार्थ गंवा लिया है तथा गुरु की शरण में न आने के कारण तुझे आध्यात्मिक जीवन की समझ नहीं पड़ी। शबद की अंतिम पंक्तियों में गुरु जी समझा रहे हैं कि जो मनुष्य तृष्णा से निर्लेप रहता है तथा अडोलता की अवस्था में टिका रहता है वही प्रभु-नाम के साथ सांझ कायम कर लेता है; वही गुरमुख अवस्था को पा लेता है तथा उसी का जीवन सफल होता है।

बेगम पुरा सहर को नाउ

शुरू से ही संसार में ऐसे मनुष्यों की बहुसंख्या रही है जो अपने स्वार्थी स्वभाव के कारण दूसरों का हक छीनते रहे हैं। इतिहास ऐसी करतूतों की कहानियों से भरा पड़ा है। पहले मनुष्य ने पशुओं को वश में करके उनसे काम लेना आरंभ किया। जब वह बढ़ती उम्र के कारण काम देने से मज़बूर होता तो उसे सड़कों पर ठोकरें खाने के लिए छोड़ दिया जाता। ताकतवर मनुष्य अपने से कमज़ोर मनुष्यों को गुलाम बनाकर उनसे अपनी सेवा करवाता रहा। ऐसा करने का कारण आर्थिक खुशहाली एवं मौज-मस्ती का जीवन व्यतीत करना था। फिर बहुत-से ताकतवरों ने मिलकर फौजें कायम कर लीं। कमज़ोरों को अपने अधीन करके अपने-अपने इलाकों की सीमाएं बढ़ानी शुरू कर दीं, किंतु मनुष्य की मानसिक भूख कभी नहीं मिट सकी। कइयों ने तो पूरी दुनिया पर ही अपनी हकूमत करने की ठानी। इस कार्य के लिए उन्होंने असंख्य बेगुनाहों का खून बहाया और चारों ओर अंधेरगर्दी मचा दी। ऐसे ही समय में प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी भूले-भटकों को सत्य का मार्ग दिखाने के लिए प्रकट हुए। भाई गुरदास जी इसी दृष्टांत के प्रति लिखते हैं-- *"सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।"* एक-दूसरे का हक छीनने के प्रति गुरबाणी का फरमान है-- *"हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥"* श्री गुरु नानक देव जी ने अपने रास्ते से भटक चुकी जनसाधारण को और उनके अगुओं को जगह-जगह जाकर सत्य का मार्ग दिखाया तथा दीन-दुखियों का भला करने में लगाया। इस शृंखला को आगे बढ़ाते हुए दूसरे गुरु साहिबान ने भी जनसाधारण की भलाई के लिए सत्य पर पहरा देने वाला एक वर्ग खड़ा कर लिया। लालची एवं दुनिया में अंधेरगर्दी फैलाने वाले लोगों की नज़रों में ये कांटे की तरह चुभने लग गए। इसके परिणामत: श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी हक-सच की रखवाली के लिए एक संत-सिपाही की जरूरत को महसूस करते हुए शस्त्रधारी सिक्खों को अस्तित्व में लाये। अब सच की रक्षा के लिए मर-मिटने वालों की फौज तैयार हो गयी। दूसरी तरफ कौम को गुलाम बनाने का प्रचलन भी बढ़ता गया। सत्ताधारियों ने तलवार के बल पर उनसे अनैच्छिक टैक्स उगराकर, आर्थिक रूप से कमज़ोर करके अपने धर्म में मिलाकर गुलाम बनाना शुरू कर दिया। नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने उनके इस ज़ालिमाना कृत्य के विरुद्ध ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की। परिणामत: गुरु जी को दिल्ली के चांदनी चौंक में बलिदान देना पड़ा। गुरु जी की कुर्बानी रंग लायी। दशम पातशाह द्वारा साजी खालसा फौज जुल्म के विरुद्ध डट गयी तथा बाबा बंदा सिंघ बहादर की जत्थेदारी तले हलेमी राज्य कायम हो गया। यह इंसाफ-पसंद लोगों की विजय थी। इसी तरह खालसा फौजों ने अति यातनाओं को झेलते हुए लोगों के लिए उनके अपने राज्य के रूप में सिक्ख राज्य कायम किया। किंतु घटिया वृत्ति के लोगों को यह राज्य कब सहनीय था? उन्होंने अपनी भेड़िया चालें चलकर इस राज्य में फूट डालकर इसको खत्म कर दिया। परिणामस्वरूप भारतवासी फिर से हाकिमों (अंग्रेजों) के गुलाम हो गए। इन सबके बावजूद श्री गुरु नानक देव जी की सत्य-मार्ग पर चलने की दी गयी जीवन-घुट्टी इन पंजाबी लोगों की रगों में समा चुकी थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा की गयी पालना सदका यह खालसा फौज जुल्म के आगे झुकने वाली कहां थी? अत: इनके द्वारा सत्य के मार्ग पर चलते हुए मानवीय आज़ादी के लिए कुर्बानियां करने का दौर फिर से शुरू हो गया। यही कारण है कि अकेले पंजाब के लिए ही नहीं बल्कि समस्त भारत के लोगों की आज़ादी के लिए सबसे ज्यादा कुर्बानियां पंजाबी

शूरवीरों ने ही कीं। इनकी पृष्ठभूमि में गुरु साहिबान की शिक्षाओं का ही असर था।

समय के साथ-साथ लालच वृत्ति वाले लोगों की लालची मानसिकता फिर बढ़ने लगी। बहुसंख्यक भाईचारे के लोगों ने अल्पसंख्यक लोगों को दबाकर रखने की गलतफ़हमी मन में पाल ली। परिणामत: १९८४ ई में देश की राजधानी दिल्ली में एक बहुसंख्यक वर्ग के लोगों द्वारा सरकार की शह पर अल्पसंख्यक वर्ग को लूटा और मारा-पीटा गया। इनको आर्थिक तौर पर कमज़ोर करने के लिए इनकी जायदादें तक लूट लीं। गलों में टायर डालकर इनको बेरहमी से जलाया गया। इनकी बहनों-बेटियों का अपमान किया गया। इस समय में ऐसे भले सज्जन भी थे जिन्होंने अभी गुरु साहिबान की शिक्षाओं को भुलाया नहीं था। इन भले पुरुषों ने इस मुश्किल समय में इन संकटग्रस्त लोगों की मदद भी की।

आज के दौर में फिर अंतर्दृष्टि डालने की आवश्यकता है। मनुष्य अपने अहंभाव के अधीन दूसरों को गुलाम बनाता-बनाता प्रकृति को भी अपना गुलाम बनाने लग गया है। हर तरफ खुद की उन्नति व खुद की आर्थिक खुशहाली का शोर मचाया जा रहा है। प्रत्येक मनुष्य अपने सुखों के लिए प्रकृति के साथ खिलवाड़ कर रहा है। बहुत-से फैक्ट्री मालिकों द्वारा अपनी आर्थिक खुशहाली की न मिटने वाली भूख के कारण प्रकृति के अमूल्य स्रोत पानी को ज़हरीला किया जा रहा है। अपने सुख-आराम के लिए अपनी रिहायशों को वातावरण के अनुकूल बनाकर तथा अपनी हउमै की संतुष्टि हेतु घर के प्रत्येक सदस्य द्वारा अलग-अलग महंगी गाड़ियों का अनावश्यक प्रयोग करके प्राकृतिक वायु को ज़हरीला किया जा रहा है। पैसे की भूख ने मनुष्य को अपनों से दूर कर दिया है। अपने माता-पिता ही बच्चों को बोझ लगने लग गए हैं। इंसान ने अपनी मनपसंद औलाद पैदा करने के लिए मशीनें बना ली हैं। जन्म के बाद लड़कियों को मारने वाले पापी लोग अब जन्म लेने से पूर्व ही लड़कियों का कत्ल करने लग गए हैं। परिणामत: पुरुष-स्त्री जनसंख्या के अनुपात में असंतुलन आ गया है, जिससे समाज में अवर्णनीय बुराइयों का फैलाव बढ़ रहा है। अपनी आर्थिक खुशहाली के लिए मनुष्य ने वातावरण की सुंदरता बढ़ाने वाले वृक्षों की अनावश्यक कटाई कर अपनी मृत्यु को खुद न्यौता दिया है। नशे का व्यापार बढ़ता जा रहा है। भू-माफिया, नशा-माफिया, देह-व्यापार के अड्डे, मानवीय-समगलिंग, रिश्वतखोरी और अन्य भी कई प्रकार के माफिये अस्तित्व में आ गए हैं। इस बरताव से चाहे मनुष्य ने तिजोरियां भरकर अल्प समय में ही खुशफहमी हासिल कर ली है परंतु साथ ही पूरी दुनिया को नाशवानता की ओर भी धकेल दिया है। अपनी आर्थिक उन्नति की आड़ में फसलों पर किए जा रहे अनावश्यक ज़हर के प्रयोग ने देश के बहुत बड़े इलाके को कैंसर-पीड़ित इलाका होने का अभिशाप दिला दिया है। रिश्वतखोरी ने हमारे रक्षकों का खून ही सफेद कर दिया है। इंसाफ के लिए मनुष्य कोट-कचहरी में धक्के खाने के लिए मज़बूर है। इन सभी अलामतों से छुटकारा पाकर ही हम आज अच्छा समाज सृजित कर सकते हैं, जिसके लिए गुरबाणी हमारे लिए मार्गदर्शक है। सत्य के मार्ग पर चलकर ही हम अनेकों आने वाली मुसीबतों से छुटकारा पा सकते हैं। गुरबाणी का फरमान है :

बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु ॥ खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ दोम न सेम एक सो आही ॥
आबादानु सदा मसहूर ॥ ऊहां गनी बसहि मामूर ॥२॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ महरम महल न को अटकावै ॥
कहि रविदास खलास चमारा ॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥ *(पन्ना ३४५)*

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी

-डॉ. हरमहेंद्र सिंघ*

मध्य काल में भारतीय धर्म और दर्शन को नई दृष्टि देने में श्री गुरु नानक देव जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मध्य काल के पुनर्जागरण की भूमिका का सरलीकरण भी श्री गुरु नानक देव जी ने ही किया है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का केंद्र-बिंदु 'किरत करना, नाम जपना और वंड छकना' के व्यवहारिक दर्शन में छुपा हुआ है।

श्री गुरु नानक देव जी ने मध्य काल के समाज को ऐसे रास्ते पर चलाने की कोशिश की जिसका सीधा रिश्ता आदमी की उस खोई हुई पहचान को वापिस लाने के साथ था, जिसका पतन अंधविश्वास, गले-सड़े रीति-रिवाजों तथा बुरे आचरण के कारण हो चुका था। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के अमर संदेश ने उन्हें फिर से अपने अस्तित्व की पहचान नई जीवन-दृष्टि से करवाई। श्री गुरु नानक देव जी अकाल पुरख की सत्ता को आदमी के दुख-दर्द के साथ जोड़कर नए आध्यात्मिक चिंतन की इस प्रकार शुरूआत करते हैं कि निर्गुण पद्धति मूल भक्ति का आधार बन जाती है। 'जपु जी साहिब' में जिस ऊंचे आचरण का पक्ष श्री गुरु नानक देव जी लेते हैं वह पाखंड की दीवार को तोड़ता है तथा ईश्वर की रज़ा में रहकर उन आशीर्वादों को ग्रहण करने की प्रेरणा देता है, जिनके कारण सच्चा इंसान गुरमुख की पदवी पा लेता है।

भक्ति आंदोलन दक्षिण में पैदा हुआ था। १५वीं शताब्दी में उत्तरी भारत में इस आंदोलन ने क्रांतिकारी परिवर्तन किए। भक्त कवियों का एक ध्येय यह भी था कि वे जात-पात का खंडन करेंगे, रंग और नस्ल के भेद को नहीं मानेंगे तथा भाषा और लिपि की दीवार को फांदकर घर-घर में मानवता के धर्म को फैलायेंगे। संतों का यह सपना उत्तरी भारत में उस समय साकार हुआ जब श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में इन मूल्यों को समर्थन मिला। श्री गुरु नानक देव जी देशों की सीमाओं को लांघकर ऐसे इंसानी सरोकारों का समर्थन करते हैं जिन्होंने पूरे विश्व की सोच को नई जीवन-दृष्टियों से जोड़ा। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का उद्देश्य सत्य के पुजारी बनकर आदर्श मानव के भावों को प्रकट करना था। उनकी बाणी के इन सरोकारों को सभी धर्मानुयायियों ने खुले दिल से स्वीकारा। ऐसे कार्य श्री गुरु नानक देव जी जैसे महान संस्कृतिवेत्ता ही कर सकते थे।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी ने राजनीति और समाज के क्षेत्र में भी नई जीवन-जांच को उभारा। बाबर के आक्रमण की तीखी आलोचना हमें श्री गुरु नानक देव जी की बाणी में ही मिलती है। उनके द्वारा बाबर के जुल्मों के विरुद्ध उच्चारित बाणी ऐतिहासिक दृष्टि से ऐसा सामाजिक दस्तावेज है जिसमें बाबर के आक्रमण के कारण भारतीय समाज, विशेषकर स्त्रियों पर हुए जुल्मों का सीधा निषेध

*१२५, कबीर पार्क, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३००१, मो. ९३५६१-३३६६५

है। श्री गुरु नानक देव जी अपनी इस बाणी में भारतवासियों को हिंदोस्तानी कहकर संबोधित करते हैं। मध्य काल में काव्य-चिंतन में यह पहला संबोधन है, जिसमें भौगोलिक एवं कौमीयत के संकल्प को राष्ट्र के साथ जोड़ा गया है। इस दृष्टि से श्री गुरु नानक देव जी पहले राष्ट्रीय चिंतक हैं जो भारत की अखंडता के प्रश्न को अतिरिक्त सम्मान के साथ उठाते हैं। ज्ञान और प्रेम की कसौटी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी की मूल संवेदना है। इस कसौटी पर वही आदमी खरा उतर सकता है जिसकी कथनी और करनी में कोई फर्क न हो। वे सीधे शब्दों में कहते हैं कि अकाल पुरख उन्हें ही अपनी बख़्शीश का आशीर्वाद देगा जो कड़ी आराधना के संघर्ष में खरे साबित होंगे। श्री गुरु नानक देव जी चाहते थे कि जनसाधारण पलायनवादी प्रवृत्ति का शिकार न हो। उनका मानना था कि मुक्ति जंगलों में भटककर नहीं घर-परिवारों में रहते हुए, जीवन के संघर्षों को झेलते हुए ही प्राप्त की जा सकती है। त्याग और सेवा को उन्होंने मानव धर्म का सर्वोच्च आदर्श माना। नारी के प्रति श्री गुरु नानक देव जी का दृष्टिकोण प्रगतिशील एवं विवेकशील था। वे नारी को उच्च सम्मान देने के हक में थे। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का राजनीतिक चिंतन भी क्रांतिकारी था। उन्होंने संस्थागत काजी, मुल्ला, सुल्तान, पुजारी आदि के गलत कामों की खुलकर आलोचना की तथा इन्हें ज़िंदगी की उस हकीकत से भी परिचित करवाया जो इनके कर्त्तव्य-बोध की प्रथम इकाई थी।

श्री गुरु नानक देव जी महान बाणीकार थे। इनकी प्रमुख बाणियों में 'जपु जी साहिब', 'आसा की वार', 'पटी', 'बारह माहा', 'सिध गोसटि' इत्यादि हैं। साहित्यिक दृष्टि से भी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का पंजाब के साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ा। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है। इनके अलावा इनके बाद के सभी गुरु साहिबान ने अपनी बाणी का सृजन करते समय 'नानक' छाप का ही प्रयोग किया है, क्योंकि वे श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा का ही प्रचार-प्रसार करते थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की विचारधारा का केंद्र श्री गुरु नानक देव जी की बाणी की वह धुरी है, जिसकी परिधि में श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित मूलमंत्र का गरिमा संसार है। श्री गुरु नानक देव जी संगीतज्ञ भी थे। वे जब उदासियों पर निकलते थे, भाई मरदाना जी उनके साथ रहते थे। भाई मरदाना जी रबाब बजाया करते थे और श्री गुरु नानक देव जी इलाही बाणी का उच्चारण किया करते थे। श्री गुरु नानक देव जी मध्यकालीन भारत के उच्चतम आदि गुरु हैं। भाई गुरदास जी कहते हैं कि "श्री गुरु नानक देव जी के प्रकट होने पर संसार में व्याप्त कुरीतियों की धुंध विलुप्त हो गई और सृष्टि ज्ञान की रोशनी से आलोकित हो उठी।" उनके आगमन से कला, संस्कृति, धर्म एवं तात्कालिक समाज को नई दिशा मिली। भटके हुए लोगों को श्री गुरु नानक देव जी की बाणी ने नई राह दिखाई। श्री गुरु नानक देव जी का प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय समाज, संस्कृति एवं आध्यात्मिक चिंतन पर है। श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा से एक ऐसी जीवन-दृष्टि का निर्माण हुआ जिससे भारतीय समाज में कई परिवर्तन हुए।

श्री गुरु नानक देव जी ज़िंदगी के व्यवहारिक पक्ष को तरजीह देते थे।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

मानवता के गुरु : श्री गुरु नानक देव जी

-डॉ. सरूप सिंघ*

श्री गुरु नानक देव जी का धरती पर आना अर्थात् जन्म लेना विश्व के धार्मिक इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है, क्योंकि इस प्रकाश पुंज ने संसार में जिन सिद्धांतों, रीति-रिवाजों, उसूलों तथा औपचारिकताओं का प्रचार किया, वे समूचे मानव समाज के कल्याण के साथ जुड़ी हुई हैं। गुरु साहिब ने अपनी मीठी बाणी के द्वारा और प्यार भरे शब्दों से लोगों के मन को निर्मल और स्वच्छ किया। यह भी कहा जा सकता है कि उनका सर्व मानवीय मिशन एक सुंदर फूल की तरह संसार में खिला, जिसने अपनी मनमोहक सुगंध के द्वारा सारे वातावरण को सुगंधित बनाकर रख दिया। उन्होंने अपनी अलौकिक बाणी द्वारा दलीलें (तर्क) देकर जनता को अंधविश्वास, भ्रमजाल आदि के कुप्रभावों से जागरूक करते हुए मात्र एक परमात्मा की पूजा करने का उपदेश दिया। एक ओर तो मनुष्य का सम्बंध अकाल पुरख के साथ जोड़ा, दूसरी ओर समाज में बराबरी के आधार पर समानता और एकता लाने का उपदेश देकर मानव समाज में एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के करीब लाने के लिए ठोस प्रयत्न किए, ताकि समाज में बिना किसी भेदभाव के भाईचारे की भावना पैदा हो जाये तथा आपसी स्नेह और भी बढ़ता रहे। सबसे अधिक इस भावना की उस समय आवश्यकता इसलिए भी थी क्योंकि उस समय समाज में धर्म की मूल भावना लुप्त हो चुकी थी :

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उड़रिआ ॥
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥
(पन्ना १४५)

बाबर के आक्रमण के समय जो अत्याचार हुए उन्होंने मानवीय जीवन को खौफनाक ढंग में बदलकर पशु जीवन में बदल दिया। प्रशासनिक लोग जनसाधारण से घूस लेकर उनके अधिकारों को नष्ट करने में तनिक भी नहीं झिझकते थे। यही नहीं, जात-पात में बंटे लोग कई प्रकार की ज्यादतियों का शिकार हो रहे थे। हर ओर जुल्म, अत्याचार और अन्याय के प्रहार होना एक साधारण-सी बात समझी जाने लगी थी। ऐसे घिनौने और डरावने वातावरण की पृष्ठभूमि में किसी पूर्ण मनुष्य की ओर से कौम को दोबारा जीवित करना, उसके मनोबल को कायम करना, बेहतरीन मानव-मूल्यों को जनसमूह में संचित करके मनुष्य-मात्र को धर्म की छत्र-छाया में लाना एक ऐसा कारनामा था, जिसे पूरा करना खाला जी का वाड़ा नहीं था, परंतु बलिहारे जायें श्री गुरु नानक देव जी पर, जिन्होंने यह बीड़ा उठाया और इसमें हैरानकुन सफलता प्राप्त की। उन्होंने सबको बांटकर खाना, धर्म की कमाई करना, परिश्रम करना, नाम का जाप करना और सबका भला मांगना आदि उपदेश ही नहीं दिये, बल्कि स्वयं इन बातों का आचरण कर एक आदर्श कायम करके दिखाया। जात-पात के अहंकार से भरे लोगों को चेतावनी दी कि इस बात का कोई महत्त्व नहीं कि तुम 'उच्च जाति' या 'ऊंचे खानदान' में पैदा

*५९३, अर्बन अस्टेट-२, फोकल प्वाइंट, लुधियाना-१४१०१०

हुए हो, फैसला तो तुम्हारे किये कामों के अनुसार ही होगा :

सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥
(पन्ना १३३०)

गुरु जी ने समझाया है कि धन प्राप्त करने के लिए मनुष्य घटिया हरकतों तक आ जाता है; इखलाक, सदाचार और धार्मिक उपदेशों को ताक पर रखकर धन-प्राप्ति हेतु नीच हथकंडे अपनाता है, जबकि यह धन साथ नहीं जाता, यहीं धरा रह जाता है :

इसु जर कारणि धणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४१७)

मनुष्य द्वारा की गई कमाई नेक तौर पर किये परिश्रम और सच्चाईपूर्ण व्यवहार पर निर्भर करती है। ऐसी कमाई में से फिर बांटकर खाना है, ताकि कोई भूखा न रहे :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

धन-प्राप्ति के काम में लूट-खसूट तथा दूसरों के अधिकारों को निगल जाने और उनसे दूर रहने के लिए सख़्त चेतावनी देते हुए गुरु जी ने फरमाया है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥
(पन्ना १४१)

श्री गुरु नानक देव जी का उपदेश किसी एक ही जाति, धर्म के लिए नहीं बल्कि हिंदू-मुसलमान सबके लिए है। वे हिंदुओं को अच्छा हिंदू बनने के लिए और मुसलमानों को अपने विश्वास के अनुसार जीवन व्यतीत करने का संदेश देते हैं। मक्का के हाजियों द्वारा यह पूछने पर कि हिंदू अच्छे हैं या मुसलमान, तो आपने फरमाया :

बाबा आखे हाजीआा सुभि अमला बाझहु दोनो रोई।
हिंदू मुसलमान दुइ दरगह अंदरि लहनि न ढोई।
(वार १:३३)

उनकी दृष्टि में अकाल पुरख को प्राप्त करने के लिए मानव-व्यवहार का शुद्ध होना जरूरी है। सच्चाई का मेल सच्चाई से ही हो सकता है। सदाचार, शुभ कर्म अच्छे मानवीय जीवन की मुख्य आवश्यकताएं हैं। इस विषय पर गुरु जी ने फरमाया है-- *"सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥"*

असलियत यह है कि श्री गुरु नानक देव जी का मार्ग सच्चाई का मार्ग है, प्रेम का मार्ग है। आचार में सच्चाई, व्यवहार में सच्चाई, सदाचार में सच्चाई, किरदार में सच्चाई, इंसाफ में सच्चाई वार्तालाप में सच्चाई, राजनीति में सच्चाई, तात्पर्य यह कि सच्चाई के बिना सब कार्य फोकट अथवा अधूरे होते हैं। उन्होंने सच बोलना और सच पर आधारित जीवन-यापन का तरीका स्वयं सच्चा जीवन व्यतीत करके बताया, भले ही ऐसा करने से मलिक भागो नाराज़ हुआ या बाबर गुस्से हुआ। सच के साथ सुमेल करके जीवन की तलखिओं और बुराइयों को गहरी चोट मारी है और उनमें से मूल गुणों के सुमेल वाले जीवन-सिद्धांत के कारण ऐसे मनुष्य का निर्माण आरंभ हो गया जिसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय पूर्णता प्राप्त हुई।

श्री गुरु नानक देव जी ने जीवन के हर पहलू पर लामिसाल प्रवचन हमारे समक्ष रखकर मानव जीवन को इखलाकी तौर पर मालामाल कर दिया। जीवन में सदियों से फैले भ्रमों, गलत रीति-रिवाजों, व्यर्थ के कर्मकांडों को दूर करने के लिए उन्होंने इंकलाबी कार्य किये। अपने विचारों को लोगों तक पहुंचाने के लिए 'प्रेम' और 'नाम' की महिमा का संदेश देने के लिए

उन्होंने लंबी-लंबी प्रचार यात्राएं कीं, भिन्न-भिन्न धर्मों के तीर्थ-स्थानों पर गये, बड़े-बड़े ऋषियों-मुनियों के साथ विचार-विमर्श करके उन्हें अपने विचारों के साथ सहमत किया। उन्होंने मनुष्य-मात्र को समझाया कि यह संसार सच्चे प्रभु की धर्मशाला है, जिसमें मनुष्य को कर्मयोगी की भूमिका निभाने के लिए भेजा गया है, अत: अपने कर्त्तव्य और मूल की पहचान करके अपने मूल स्रोत के साथ एक होने के लिए नेक कमाई करते हुए सेवा और प्रभु का नाम जपने का कर्म करो। सुच्चे मोतियों जैसे अपने अनमोल विचारों को सरल भाषा में लोगों तक पहुंचाने के लिए उन्होंने दो साथी-- भाई मरदाना जी और भाई बाला जी अपने साथ रखे।

संक्षेप में कहा जा सकता है श्री गुरु नानक देव जी के संसार में आने से मानवता को अच्छा जीवन व्यतीत करने का ढंग आया, क्योंकि उन्होंने मानवीय जीवन के हर क्षेत्र को अपनी अद्वितीय विचारधारा, व्यवहारिक शिक्षा, लाभदायक उपदेश और आध्यात्मिक दौलत से भरपूर किया। यही कारण है कि उनके पवित्र वचन धर्मों और जातियों की सीमाओं को पार करके हर मनुष्य के मन पर प्रभाव डालने वाले बन गये। गुरु साहिब के लामिसाल जीवन-सिद्धांतों को भली प्रकार समझकर ही एक प्रसिद्ध शायर सर इकबाल ने उनके बारे में एक लंबी कविता लिखकर उनके प्रति अपना सत्कार प्रकट किया है। कविता का अंतिम पद इस प्रकार है :

फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से।
हिंद को एक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख़्वाब से।

श्री गुरु नानक देव जी की सारी अलौकिक बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शोभायमान है, जो भिन्न-भिन्न रागों में दर्ज है। गुरु जी की बाणी असंख्य प्राणियों को मन की गरीबी, अहंकार की निवृत्ति, बुद्धि व्यवहार की स्वच्छता और मन की एकाग्रता निवाजती हुई आत्मिक शांति और आनंद प्रदान करके उनको अकाल पुरख के साथ जोड़ती है :

"गुरु नानक सभ के सिरताजा।
जिस सिमरे सरे सभ काजा ।"

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी

(पृष्ठ ६ का शेष)

वे चाहते थे कि ज़िंदगी के हर अंधेरे को सच्चाई का सूरज अपनी ऊर्जा से आलोकित कर दे। दुख और सुख तभी तक आम आदमी को प्रभावित कर सकते हैं, जब तक वह आदमी 'नाम' की महिमा से वंचित है। श्री गुरु नानक देव जी ने कुदरत को वह शक्ति माना जिसकी गरिमा सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के आध्यात्मिक बोध में भी तर्कशीलता है। श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का आकाश उन सार्थक सच्चाइयों में रोशन है जिसमें न भय है, न वैर है, न विरोध है और न ही असत्य है। मध्य काल के नए जीवन बोध की यही रस धारा है। वैश्वीकरण के जिस दौर से आज हम गुजर रहे हैं, उसमें श्री गुरु नानक देव जी की बाणी प्रगामी रास्ता दिखा सकती है। उन रास्तों पर श्री गुरु नानक देव जी की बाणी के वे सच्चे दीपक जलाए जा सकते हैं जिसकी रोशनी में भटके हुए राही सही मंजिल की ओर अग्रसर हो सकते हैं। बाणी द्वारा ही पराजित मानसिकता को 'सरबत के भले' में परिवर्तित किया जा सकता है। गुरुपर्व की इस शुभ वेला पर यही श्री गुरु नानक देव जी की बाणी का अमर संदेश है।

श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा

*-श्री हरिचंद स्नेही**

भारतवर्ष सदैव से ही संतों-महात्माओं, ऋषियों-मुनियों का देश रहा है। इसकी गौरवमयी गाथा विश्व के कोने-कोने में गाई जाती रही है। महाभारत-काल के पश्चात् भारत धीरे-धीरे पतन के गर्त में समाने लगा। इसका मूल कारण लोगों का सत्य को छोड़ असत्य का आचरण करना था। अंधविश्वासों और पाखंडों ने डेरा डाल लिया। अत्याचार, अन्याय, अधर्म, अविद्या रूपी भयंकर अंधकार, दीन-दुखियों का तिरस्कार, मिथ्यावाद, आडंबर, स्त्री जाति पर कुठार, धार्मिक कट्टरता, भेदभाव, सती-प्रथा, बाल-विवाह, नवजात बच्चियों की हत्या आदि अनेक कुरीतियों ने भारतवर्ष को दीन अवस्था में लाकर खड़ा कर दिया। इसके अतिरिक्त पंद्रहवीं शताब्दी में मुगल शासकों के अत्याचारों ने मानव धर्म को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया था।

इस दयनीय दशा में देश को एक ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो मानव समाज को धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक भ्रमजाल के साथ-साथ अधर्म, दरिद्रता, निराशा, भय और थोथे कर्मकांडों के पतन के गहरे गर्त से बाहर निकाल सके।

परम पिता परमात्मा की असीम अनुकंपा द्वारा माता त्रिपता जी की कोख से और पिता श्री महिता कालू जी के परिवार में सन् १४६९ ई में तलवंडी (अब श्री ननकाणा साहिब-- पाकिस्तान) में एक दिव्य महान विभूति बाल ने जन्म लिया, जिसका नाम 'नानक' (श्री गुरु नानक देव जी) रखा गया।

श्री गुरु नानक देव जी बचपन से ही प्रतिभाशाली, सत्य के पुजारी, दयावान, दुखियों के कष्ट-निवारक, ब्रह्मज्ञानी, आदि काल से प्रचलित कुरीतियों और पाखंडों का खंडन करने वाले, धर्मात्मा, कर्त्तव्यनिष्ठ, सदाचारी, परोपकारी दानवीर और समस्त सद्गुणों से युक्त नेक इंसान थे। आरंभ से ही गुरु जी का मन सांसारिक, भौतिक सुखों में नहीं लगता था, बल्कि वे तो सदा एक ही परमात्मा की आराधना में परमानंद की प्राप्ति का अनुभव करते थे। उनका कथन था-- ईश्वर एक है, निराकार है, जन्म-मरण से रहित है।

श्री गुरु नानक देव जी के पिता एक प्रतिष्ठित ज़मींदार और पटवारी थे। बचपन में घरेलू काम-काज में दिल लगाने के लिए कुछ राशि पुत्र को देकर सौदा करने की बात कही तो श्री गुरु नानक देव ने भूखे साधु-संतों को भोजन और वस्त्र देकर पिता को कहा कि "पिता जी, मैं तो सच्चा सौदा करके आया हूं। इससे बढ़कर सौदा कोई और हो ही नहीं सकता।" पिता द्वारा खेतीबाड़ी का काम संभालने के लिए किए हुक्म के सम्बंध में गुरु जी ने सांसारिक खेती के आधार पर आध्यात्मिक खेती करने की बात की :

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥
भाउ करम करि जंमसी से घर भागठ देखु ॥

**२१९०, सेक्टर-१२, भाग-१, सोनीपत (हरियाणा), मो ९४१६६-९३२९०*

बाबा माइआ साथि न होइ ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥
(पन्ना ५९५)

"तन को खेत बनाकर मन के हल से खेतीबाड़ी (साधना) करनी चाहिए। उसे श्रम के पानी से सींचना चाहिए। ईश्वर के नाम का बीज बोना चाहिए। संतोष का सुहागा (पटेला) फेर कर मन में नम्रता धारण करके प्रेम की फसल उगानी चाहिए, जो घर-बार को सम्पन्न बना दे। सारे संसार को मोह-माया ने जकड़ रखा है, कोई विरला ही इससे बचा है।"

श्री गुरु नानक देव जी की दिव्य बातें सांसारिक पिता की समझ में नहीं आ रही थीं। उन्होंने सोचा कि यह आम बालकों की भांति शरारती-नटखट नहीं रहता, शायद इसका स्वास्थ्य ठीक नहीं है। पिता ने वैद्य को बुलाया। वैद्य ने नाड़ी देखी, मगर मर्ज को समझ पाने में असमर्थ रहा। गुरु जी ने शबद उच्चारण किया :

वैद बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥
(पन्ना १२७९)

"वैद्य जी मेरे रोग को न आप जान सकते हैं और न ही आपके पास इसका इलाज है। मेरे रोग को तो केवल परमात्मा ही जानता है वही मेरा सच्चा वैद्य है और वही मेरा इलाज कर सकता है।"

संवत् १५४४ के ज्येष्ठ मास में श्री मूल चंद की बेटी माता सुलक्खणी जी के साथ श्री गुरु नानक देव जी का विवाह हुआ। भाद्रपद सुदी नौ, संवत् १५५१ को उनके घर पहली संतान बाबा श्रीचंद ने जन्म लिया तथा संवत् १५५३ में १९ फाल्गुन को दूसरे पुत्र श्री लखमीदास का जन्म हुआ।

श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने मानव-मात्र के कल्याण के लिए ही कार्य किये। उनके मन में किसी के प्रति कोई भेदभाव नहीं था। उनकी बाणी को किसी धर्म, जाति, देश और काल तक सीमित नहीं किया जा सकता। उनकी इसी शख़्सियत के मद्देनजर प्रसिद्ध उर्दू शायर जनाब इक़बाल ने अपने शब्दों में इस प्रकार बयां किया है :

फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से।
हिंद को इक मर्दे-कामिल ने जगाया ख्वाब से।

श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने अपने जीवन में मानव-मात्र को सत्य-मार्ग पर चलने, सांसारिक बंधनों से मुक्ति दिलाने, दुखियों की सेवा करने के लिए चार लंबी प्रचार-यात्राएं कीं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अपने प्रचार-काल में श्री गुरु नानक देव जी ने पाखंडियों को फटकारा। जिनको समाज में नीच और अछूत कहा जाता था उनको उन्होंने गले से लगाया :

-नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥
(पन्ना १५)

-सभ महि जोति जोति है सोइ ॥
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥
(पन्ना १३)

-जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥
सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥
(पन्ना १३३०)

परमात्मा के दरबार में किसी भी व्यक्ति की कुल और जाति को नहीं पूछा जाता। वहां केवल मनुष्य के कर्मों के अनुसार ही निर्णय होता है।

श्री गुरु नानक देव जी से सम्बंधित एक साखी है कि एक बार श्री गुरु नानक देव जी महाराज अपने दो शिष्यों-- भाई बाला जी और भाई मरदाना जी के साथ लाहौर (पाकिस्तान) के निकटवर्ती गांव दीपालपुर पहुंचे। सर्दियों के

दिन थे। शाम का समय था। रात बितानी थी। भाई बाला जी और भाई मरदाना जी को गांव में भेजा कि कहीं रात्रि-विश्राम के लिए स्थान मिल जाए। उन्होंने ग्राम-वासियों से आग्रह किया किंतु सभी ने मना कर दिया। जब गुरु जी को बताया गया तो उन्होंने प्रसन्न-भाव से कहा कि कोई बात नहीं, चलो आगे चलते हैं। गुरु जी गांव से निकलकर अभी थोड़ी दूर ही गए होंगे कि उन्हें दूर एक झोपड़ी दिखाई दी। श्री गुरु नानक देव जी उस झोपड़ी में चले गए। उन्होंने देखा कि एक कोने में दुबककर बैठे व्यक्ति को कोढ़ है और उसके शरीर से मवाद निकल रहा है तथा उसके पास से दुर्गंध आ रही है। गुरु जी ने शिष्यों को कहा, शायद गांव वालों ने हमें विश्राम करने के लिए जगह इसलिए नहीं दी क्योंकि परमेश्वर हमें इस दुखिया के पास भेजना चाहते थे। गुरु जी ने आग जलाई और अपने हाथों से उसके शरीर के मवाद को साफ किया। गुरु जी के हाथों के स्पर्श-मात्र से उसे दर्द से राहत मिली। गुरु जी ने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम नौरंग शाह बताया। गुरु जी अपने शिष्यों सहित उसके पास कुछ दिन रहे। नौरंग शाह की झोपड़ी में से पहले जहां दुर्गंध आती थी वहां अब गुरबाणी-कीर्तन व गुरमति विचारों की आध्यात्मिक सुगंध निकलकर वातावरण को दिव्य मंडल में बदलने लगी। नौरंग शाह को पूर्ण आराम मिलने पर गुरु जी ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा कि आप यहां रहकर सच का प्रचार करें।

श्री गुरु नानक देव जी के काल में स्त्री वर्ग की दयनीय स्थिति थी। शासकों के साथ-साथ आम लोगों द्वारा भी उसका तिरस्कार और उस पर अत्याचार किया जाता था। जो लोग औरत को मंदा समझते थे उन्हीं लोगों को धिक्कारते हुए गुरु जी ने अपनी पवित्र बाणी के द्वारा समझाया :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

उन्होंने स्पष्ट किया है कि औरत की कोख से जन्म लेने के बाद ही मनुष्य आम इंसान के अलावा राजा, महाराजा, त्यागी, वीर और महापुरुष बनता है। फिर औरत को मंदा कैसे समझा जा सकता है? गुरु जी ने ही सर्वप्रथम स्त्री जाति के उत्थान, उद्धार को मुख्य रखकर उसे मान-सम्मान दिलाने की प्रथा चलाई।

श्री गुरु नानक देव जी महाराज को अपनी धर्म प्रचार-यात्राओं में अनेक मुसीबतों और संकटों का सामना करना पड़ा था, किंतु उनकी अपनी सूझबूझ, सद्व्यवहार एवं ईश्वर-भक्ति के बल पर कहीं कोई रुकावट नहीं आई। वे आततायियों को भी स्पष्ट और सत्य की राह बताने से नहीं झिझके। श्री गुरु नानक देव जी महाराज का धर्म प्रचार मुख्यत: तीन सिद्धांतों पर आधारित रहा-- १. नाम जपना, २. किरत करना (परिश्रम की कमाई), ३. वंड छकना (बांटकर खाना)।

श्री गुरु नानक देव जी ने उपदेश दिया कि ईश्वर एक है जो सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है। ईश्वर का नाम सत्य है। वह सारी सृष्टि को रचने और उसका पालन करने वाला है। उसे किसी से भय और वैर नहीं है। उस पर किसी भी काल का प्रभाव नहीं है। वह जन्म-मरण से रहित है। वह स्वयं से प्रकाशमान है और सारे जग को प्रकाशित करता है। उस प्रभु की अनुभूति गुरु की कृपा से ही संभव है। वह परम पिता परमात्मा सत्य था, सत्य है और सत्य रहेगा :

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥
(पन्ना १)

श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने छल, कपट, फरेब, भ्रष्टाचार, अनीति से कमाये हुए धन का भी विरोध किया है :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥
(पन्ना १४१)

गुरु जी के अनेक शिष्यों में से एक ऐसे शिष्य की अगर चर्चा न की जाए तो गुरु-गाथा का एक भाग छूट जाएगा। करतारपुर में अपने शिष्यों को उपदेश देते समय श्री मुकतसर साहिब ज़िले के गांव 'सराय नागा' (मत्ते दी सरां) के एक नौजवान, जिसका नाम 'लहिणा' था, जो अपने साथियों के साथ गुरु जी के उपदेश को धारण करके उन्हीं का सेवक बनकर रह गया। भाई लहिणा जी की सेवा-भावना से प्रसन्न होकर गुरु जी ने गुरगद्दी भाई लहिणा जी को देने का निर्णय किया। गुरु जी ने भाई लहिणा जी को विधिवत ढंग से गुरगद्दी पर बैठाया। वे अब श्री गुरु अंगद देव जी के नाम से लोकप्रिय होने लगे। सन् १५३९ ई में गुरु जी ज्योति-जोत समा गए। श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अंगद देव जी शारीरिक रूप से दो थे, किंतु दोनों में ज्योति एक ही थी। श्री गुरु नानक देव जी के सद्कार्यों और प्रभु-चिंतन-उपदेश ने बाणी रूप में सबके कल्याण के लिए मार्ग दर्शाया। हमें भी परम पिता परमात्मा ऐसी सद्बुद्धि प्रदान करें ताकि हम भी श्री गुरु नानक देव जी की बाणी व जीवन से मार्गदर्शन लेकर अपना मानव जीवन परोपकार और प्रभु-चिंतन में लगाकर सफल कर सकें।

कविता

यह कैसी दीपमाला?

यह कैसी दीपमाला?
लीलती हो चतुर्दिक जब, देश को यह हिंस्र ज्वाला!
फेंक प्रेमामृत घृणा का, भर रहे सब गरल प्याला।
एक भाई ने सिर जब, दूसरे का काट डाला!
यह कैसी दीपमाला?
दीप हैं स्नेहरीते त्याग की बत्ती नहीं हैं।
स्वार्थ का तम हर सके वह, ज्योति अब दिखती नहीं है।
स्वयं ओढ़ी दासता ने जन-गण-मन बांध डाला!
यह कैसी दीपमाला?
जननियों के लाल छिनते, बालकों से गोद छिनती।
विवश बेचारी मनुजता, भटकती है शीश धुनती।
डंस रहे जो सभी को, उन विषधरों को कौन पाला?
यह कैसी दीपमाला?
अमा का तम दूर करने, दीप हम सबने जलाए।
पर हृदय के तिमिर को है कौन ऐसा जो हटाए?
सर्वग्रासी घिर रहा सर्वत्र, जब तम-तोम काला!
यह कैसी दीपमाला?
पुते चूने से सभी के सदन, दिखते आज उजले।
इस हृदय की कालिमा को, कौन पोंछे, कौन बदले?
दुर्भेद्य व्यापक तिमिर से, जब है पड़ा सभी का पाला!
यह कैसी दीपमाला?
धर्म-भाषा-जाति के सब, जब कटेंगे जटिल बंधन।
रुक सकेगा देश में तब, मनुजता का करुणा क्रंदन।
मिलेंगे उन्मुक्त जन-मन, विषमता का तोड़ ताला।
तभी दीवाली फबेगी और सजेगी दीपमाला?

-डॉ. दादूराम शर्मा, प्राध्यापक, महाराजा बाग, भैरोगंज, सिवनी (म. प्र)-४८०६६१, मो: ८८७८९-८०४६७

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'गुरु नानक देव : संदेश' में अंतर्वस्तु के आयाम

-डॉ. कृष्ण भावुक*

भारत भर में सिक्खों के महान गुरुओं ने देश के स्वातंत्र्य संग्राम में तो विशेष राष्ट्रीय चेतना से पूर्ण भूमिका निभाई ही है, इसके साथ ही इनमें से अधिकतर गुरुओं ने गुरमुखी लिपि में ब्रज भाषा जैसी भाषाओं में भी अपनी बाणी का अमृत जनसाधारण को पिलाया है। इस पाठ में सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तक और सर्वप्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी के उन उपदेशों और संदेशों के बारे में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित निबंध 'गुरु नानक देव : संदेश' के आधार पर परिचय प्रस्तुत किया जाएगा। इस निबंध में निरूपित अंतर्वस्तु के धरातल पर श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर दिए गए उपदेशों और उनसे मानव-मात्र को मिलने वाले पाठों या उनसे मिलने वाले संदेशों का विवरण क्रम से शीर्षकों के अंतर्गत आगे प्रस्तुत किया जा रहा है :

१. जातिवादी भेदभाव और शासकों की उच्छृंखलता : गुरु जी ने समाज को जब अनेक जातियों और संप्रदायों में विभक्त देखा, तो उनके मन को बहुत दुख हुआ। धर्म के क्षेत्र में भक्त कबीर जी, भक्त रामानंद जी, भक्त नामदेव जी जैसे संत अपने भक्ति-भाव से पूर्ण पदों आदि से जनसाधारण को अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति के लिए जागरूक कर रहे थे। दूसरी ओर गुरुदेव उस समय के शासकों की निर्दय और निरंकुश क्रियाओं से साधारण लोगों की असहाय और दयनीय स्थिति के प्रति विशेष रूप से चिंतित हो रहे थे। उन्होंने अपनी बाणी द्वारा उन्हें निर्भय, अहंकारहीन और वैरहीन करने का बीड़ा उठा लिया था। उन्होंने लोगों को जीवन में पूरी तरह से निर्भीक होने का पाठ पढ़ाया। भक्ति की विभिन्न प्रणालियों के प्रचलन को उन्होंने देखा और केवल निर्गुणमार्गी भक्ति को ही ग्रहण किया। उस समय केवल उसी भक्ति-मार्ग को मान्यता मिल पाती थी, जो किसी रूप में 'प्रस्थानत्रयी' के द्वारा समर्थित हुआ करता था। इस प्रस्थानत्रयी के अंतर्गत उपनिषद्, श्रीमद्भगवद्गीता और बादरायण व्यास के वेदांत सूत्रों को लिया जाता था।

२. सांप्रदायिकताहीन बाणी : उस समय केवल उसी संत या भक्त को समाज द्वारा व्यापक मान्यता या स्वीकृति मिला करती थी जो अपने स्वरूप और विचारधारा में किसी न किसी चले आ रहे पुराने संप्रदाय से अवश्य जुड़ा हुआ होता था। श्री गुरु नानक देव जी ऐसे प्रथम महापुरुष थे जो किसी संप्रदाय से संबद्ध न थे। गुरु साहिब की सबसे बड़ी देन संप्रदाय से मुक्ति के संबंध में ही मानी जाती है। उनकी बाणी में स्वतंत्र चिंतन और अपने निजी जीवनानुभवों का ही प्राचुर्य था।

३. 'प्रस्थानत्रयी' का परिचय : इसके अंतर्गत वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले तीन ग्रंथों (उपनिषद्, श्रीमद्भगवद्गीता और बादरायण व्यास के द्वारा रचित वेदांतसूत्र) का उल्लेख इससे पहले किया जा चुका है। जिन विचारों या मतों का समावेश 'प्रस्थानत्रयी' में नहीं होता था, उनको लोग गौण और महत्त्वहीन ही समझा करते थे। दूसरी ओर बौद्ध धर्म का पतन हो रहा था और इसीलिए लोगों में अद्वैतवाद, विशिष्टद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद का प्रचार करने वाले संप्रदायों के प्रचारक आचार्यों ने 'प्रस्थानत्रयी' के सभी ग्रंथों, विशेषतः श्रीमद्भगवद्गीता पर टीकायें लिखनी-लिखवानी आरंभ कर दी थीं। इस

*२६१, गली नं. ६, जुझार नगर, पटियाला-१४७००३, मो ९८१५१६५२१०

पृष्ठभूमि में श्री गुरु नानक देव जी और उनके शिष्यों ने समाज में प्रचलित इस परंपरा का विरोध किया और सीधी व सहज बाणी में प्रभु की भक्ति से संबंधित विचारों का प्रचार करना आरंभ कर दिया था। यह उस समाज को श्री गुरु नानक देव जी की एक महती देन मानी जा सकती है।

४. प्रभु के सत्य स्वरूप पर बल : श्री गुरु नानक देव जी ने ईश्वर को अतीत, वर्तमान और भविष्य का एक मात्र सत्य घोषित किया और कहा, *"आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥"* चूंकि अतीत, वर्तमान और भविष्य इन तीनों कालों में ईश्वर की शक्ति होती है, इसलिए उसे 'सत्' कहा गया है। उससे भी आगे बढ़कर परमात्म-तत्त्व को कालस्वरूप माना जा सकता है। उसे योनि के बंधन से परे और स्वयंभू कहा गया, *"अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥"* उस परम तत्त्व को मौन, व्रतादि और दैहिक आचारों से कभी नहीं पाया जा सकता। वह तो केवल 'सत्य' के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

५. नाम, गुण आदि के श्रवण और ध्यान से प्रभु की प्राप्ति : श्री गुरु नानक देव जी का यह दृढ़ विचार है कि प्रभु के नाम, उसके गुणों का श्रवण और उन्हीं का ध्यान करने से जीव उसे पा सकता है। ऐसा करने के बाद इन्हीं सबके बारे में मनन भी करना आवश्यक ठहराया गया है। मनन के द्वारा ही जीव के लिए मोक्ष का वह द्वार आसानी से खुल सकता है, जिसे 'ज्ञान' का नाम दिया जाता है। प्रभु के नाम का स्मरण या चिंतन करते रहने से गुरु का सच्चा शिष्य (सिक्ख) स्वयं भी इस संसार रूपी सागर के पार उतर जाया करता है। ऐसा भक्त इस संसार में अपने हाथ फैलाकर कभी भी भीख नहीं मांगा करता है। जब प्रभु की इच्छा के बिना कुछ संभव नहीं होता है, तब जीव को न तो कभी मौत से डरना चाहिए और न ही इस अपनी नश्वर देह या जीवन का कोई लोभ करना चाहिए। वे कहते हैं, *"मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥ तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥"*

६. सच्चा गुरु ही महारस का दाता : गुरु जी का विचार है कि इस संसार में एक सच्चा भक्त सदैव केवल सत्य के मार्ग से विचलित होने से ही भयभीत रहा करता है। केवल प्रभुस्वरूप सत्य का साक्षात्कार कर लेने वाला भक्त ही पूरी तरह से निर्भय हो जाया करता है। इसी प्रकार ज्ञान के द्वारा प्राप्त होने वाले महारस की प्रवृत्ति कभी भी सांसारिक भोगों में नहीं होती है, क्योंकि *"गिआन महा रसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥"*

७. प्रज्ञा या शुद्ध बुद्धि का रेखांकन : श्री गुरु नानक देव जी ने 'गुरु' को केंद्र में रखकर चलने वाली बुद्धि को ही शुद्ध अर्थात् 'प्रज्ञा' का नाम दिया है। यह गुरु ही है, जो जीव के भीतर को एक ऐसी ज्योति से प्रकाशित किया करता है, जिससे सारा संसार ही प्रकाशित हो उठता है। जो सत्य वास्तविक होता है, वह जीव के क्षुद्र अहंकार-भाव को मिटाकर उसे विश्वात्मा के अस्तित्व के साथ एकरूप कर दिया करता है। सच्चे सुख की प्राप्ति भी उसी स्थिति में संभव हुआ करती है। अनमोल वचन है कि अपने समान ही अन्य सभी प्राणियों को देखना और उनके साथ व्यवहार करना चाहिए। यह कहना भी विचारों के प्रकार पर ही सदैव निर्भर किया करता है।

८. जीवन में ज्ञान की अनिवार्य भूमिका : आचार्य द्विवेदी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी इस बात में पूरा विश्वास रखते हैं कि जो कुछ मानव के इस शरीर में है, ठीक वही इस संसार में भी होता है-- *"जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै॥"* किसी भी बात या वस्तु के बारे में जानना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता है जितना कि अपने ज्ञान को जीवन का एक अनिवार्य अंग बना देना। गुरु जी के वचन हैं, सत्य जब आचरण में रूप ग्रहण करता है, तो धर्म बनता है। जो चीज़ केवल

जानकारी के रूप में कही जाती है, वह 'कथनी' मात्र है। 'करनी' के साथ जब तक वह एकमेक नहीं हो जाती, तब तक वह भार मात्र सिद्ध होती है। वही पुरुष महात्मा होता है, जिसकी कथनी और करनी में भेद नहीं होता।

९. शरणागति का महत्त्व और गुरु : श्री गुरु नानक देव जी ने कभी भी इस बात का दावा नहीं किया कि वे इस संसार का सुधार या उद्धार करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं, क्योंकि इससे जीव के क्षुद्र अहंकार की ही गंध आती है। वास्तव में वे उस प्रभु के श्रीचरणों में पूरी तरह से समर्पण करने और उसी की एक मात्र शरण ग्रहण करने पर बल दिया करते थे।

१०. प्रेम-भाव की साधना का महत्त्व : गुरु जी का दृढ़ विचार है कि प्रेम-भाव की साधना का एक भक्त और जीव के जीवन में सामान्यत: बहुत महत्त्व हुआ करता है। जीवात्मा रूपी सोहागिन नारी अपने प्रभु-प्रियतम के साथ रहकर सदैव उसका सुख भोगा करती है। श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि *"आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥ नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥"*

जिस किसी जीव ने उस परमात्मा के अखंड प्रेम-स्वरूप को ग्रहण कर लिया है, उसने फिर इस संसार में जातिगत और धर्मगत सभी भेदभावों से अपने को परे कर लिया है। अधिकतर ऐसा होता है कि लोग बातें तो जातिगत समानता की ही किया करते हैं, परंतु व्यवहारिक धरातल पर उनके आचार और विचार में धरती तथा आकाश का बहुत बड़ा अंतर हुआ करता है।

११. मानव जाति में सामंजस्य की आवश्यकता : आचार्य द्विवेदी श्री गुरु नानक देव जी के विचारों को आधार बनाकर लिखते हैं कि कुछ लोग विभिन्न धर्मों में समन्वय स्थापित करने के नाम पर बाहरी और ऊपरी आचारों को परस्पर जोड़ने का व्यर्थ कार्य ही करने के प्रयास करते मिल जाते हैं। वास्तव में किसी प्रकार का भी धार्मिक समन्वय करते समय हमें चाहिए कि हम धर्म के मूल तत्त्वों का अवश्य ध्यान रखा जाए। उनका यह सुनिश्चित मत या विचार है कि हमें विश्व भर में मानव-मात्र की एकता पर ही अधिक बल देना चाहिए। हमारे लिए तो वही मानवतावादी दृष्टि अपनाना ही सबसे अच्छा रहेगा जिसके कारण हम बुरे संस्कारों, बुरे विचारों, बुरी शिक्षा आदि के बंधनों से परे हट सकते हैं। श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं अपने जीवन में इसी मूलभूल तत्त्व को ग्रहण किया था।

१२. प्रभु की शरण का ग्रहण और अहंकार का त्याग : मानव को अपने मन से तुच्छ अहंकार, दर्प, लोभ, मोह, ममता आदि के मनोविकारों का नाश करके उस परम तत्त्व की ही सुखदायिनी शरण को ग्रहण करना चाहिए और पूर्ण समर्पण के भाव से अपने आप को उस परम तत्त्व को सौंप देना चाहिए, तभी हमारा यह जीवन सार्थक हो सकता है, अन्यथा नहीं। श्री गुरु नानक देव जी का वचन या सदुपदेश है : *"मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥ हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगहि मानु ॥"*

श्री गुरु नानक देव जी कहते हैं कि जब जीव का सब कुछ उसी परमात्मा का ही दिया हुआ है, तब भला वह घमंड किस बात का करता है? यह जीवन, यह शरीर परमात्मा द्वारा ही तो उसे प्रदान किया हुआ है। ऐसा होने पर फिर वह इसके प्रति ममता या आकर्षण का भाव अपने मन में क्यों रखता है? वे कहते हैं :

तू एवडु दाता देवणहारु ॥
तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥
कीआ गरबु न आवै रासि ॥
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥ *(पन्ना १५४)*

१३. मनमुख और गुरमुख का संकल्प : आचार्य द्विवेदी का वक्तव्य है कि भक्ति-भावना की भूमि में श्री गुरु नानक देव जी ने सभी मानवीय मनोविकारों का निराकरण करके इन लौकिक भावनाओं से

उपजने वाली सभी समस्याओं को सुलझाने का जो प्रयास किया था, वह प्रशंसनीय है। इस चेष्टा में न तो परमार्थ और व्यवहार का कोई परस्पर टकराव या विरोध है और न ही कथनी तथा करनी का कोई अंतर बाधा डालता है। जो जीव अपने मनोविकारों से प्रभावित होकर, उन्हीं के अनुसार इस संसार के कामकाज किया करते हैं, वही जीव 'मनमुख' कहलाते हैं। ऐसे जीवों में अपने परिवार, पदार्थ, संपत्ति आदि के प्रति गहरी मोह-ममता हुआ करती है। वे सदैव 'मेरा-मेरा' के ही अहंवादी मिथ्या चक्कर में पड़े रहते हैं। इसी को तो संसार का जाल कहा जाता है। गुरु के शब्द हैं : *"मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥ नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥"*

इसके ठीक विपरीत जो जीव 'गुरमुख' होते हैं, उनकी मनोवृत्तियां बाहरी संसार के स्थान पर अपने ही मन के भीतर हुआ करती हैं। ऐसे सच्चे जीव ही सदैव हरि-रस पीया करते हैं : *"गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥"*

१४. निर्भयता और निरवैरता का ग्रहण : आचार्य द्विवेदी ने निबंध के अंत में गुरु जी के इस विचार की पुन: अभिव्यक्ति की है कि एक जीव के लिए इस जगत में निर्भय होने के साथ-साथ निरवैर होना भी बहुत आवश्यक हुआ करता है। जीवों को अपने अहंकार को भी त्याग देना चाहिए। केवल सत्यात्मा वाला सच्चा गुरु ही अकेला ऐसा होता है, जिसके प्रेम को पाने का लक्ष्य रखकर जीव अपने जीवन की इस यात्रा को सफल और सार्थक कर सकते हैं।

निष्कर्ष : इस निबंध में विद्वान, उपन्यासकार, निबंधकार, समीक्षक और साहित्येतिहासकार आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने पंजाब और विश्व भर में सिक्ख धर्म के आदि प्रवर्त्तक महान गुरुदेव श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा दिए गए उपदेशों का विवरण देते हुए उनकी बाणी की मुख्य देनों को रेखांकित किया है। उनके विचार इतने स्पष्ट और सुबोध हैं कि कहीं भी उनसे कोई भी वाद-विवाद जन्म लेने की आशंका नहीं है।

कविताएं

गुरबाणी का फरमान

गुरबाणी का है जो फरमान।
सभी से है यह सच्चा, सभी से है महान।
मानस को चाहिए है, वृक्षों-पेड़ों की जीरान।
अपना कर्म कमाते जाना,
चुपचाप सहना दुख नहीं बताना।
पास आने वाले को फल देना,
खाली हाथ कभी न लौटाना।
सारा जीवन लगन में रहना,
पालक के लिए हो कुर्बान जाना।
फिर जीवन का भेदी होना,
फिर जीवन के भेद-मर्म को पाना।
बेशक रहे न जान में जान,
गुरबाणी का है यह फरमान।
सभी से है यह सच्चा, सभी से है यह महान।

सिक्खी की निशानी

सिक्खी की है सबसे बड़ी निशानी।
कुर्बानी करना, करना कुर्बानी।
जंग में जूझते बहादुरों की,
मरहम-पट्टी करनी और पिलाना पानी।
देगों में उबल जाना,
केशों संग खोपड़ी उतरवानी।
वाहिगुरु आराधना,
और पढ़ते जाना बाणी।
सेवा-साधना में रमना,
दिल से सेवा करनी-करानी।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ,
पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला,
गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६

श्री गुरु नानक देव जी

*-स. सुरजीत सिंघ**

मध्य काल में धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से जनमानस का हर क्षेत्र में मान-मर्दन हो रहा था। भारतीय संस्कृति एवं मानवता चीख-चीखकर सहायता हेतु पुकार कर रही थी। ऐसे समय मृतप्राय मानव जीवन में महान देश-भक्त, क्रांतिकारी, सर्वत्यागी एवं समाज-सुधारक श्री गुरु नानक देव जी ने भक्ति एवं शक्ति की संगीतमयी गुरबाणी रूपी अमृत संजीवनी से नये प्राणों का संचार कर एवं सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित कर धर्म, शौर्य और आत्मिक कल्याण को प्रतिष्ठापित कर दिया।

श्री गुरु नानक देव जी आध्यात्मिक संगीत के युगप्रवर्त्तक, संरक्षक हैं, क्योंकि गुरु जी ने ईश्वर-भक्ति और दिव्य गुरबाणी के संदेश को प्रसारित करने हेतु सदैव ही मौलिक रागमयी संगीत के माध्यम का सहारा लिया। गुरु जी ने अपने मौलिक आध्यात्मिक विचारों को बाणी रूप में सांगीतिक शैली में उद्धृत किया, जिससे प्रभावित होकर जनसाधारण के हृदय परिवर्तित हो गये। भील जाति का खूंखार कौडा एवं सज्जन ठग जैसे घोर राक्षसी प्रवृत्ति वाले मानव भी गुरु-कृपा से अमानुषिक कुकृत्य त्यागकर संत-प्रवृत्ति वाले बन गये।

श्री गुरु नानक देव जी का अनुसरण करते हुए अन्य गुरु साहिबान ने भी अपनी दिव्य बाणी का माध्यम रागबद्ध, रूहानी, आध्यात्मिक संगीत ही बनाये रखा। भक्ति राग-गायन ही गुरमति संगीत की आत्मा है, जिसमें ईश्वर-भक्ति, मानव-कल्याण, जन-सेवा एवं समाज-सुधार रूपी प्राणों का संचार हो रहा है। कीर्तन से मनुष्य समस्त व्याधियों से दूर एकाग्रचित्त होकर सीधे परमेश्वर से जुड़ जाता है।

भाई मरदाना जी गुरु जी के प्रति आस्था-श्रद्धा होने के कारण वे जीवन-पर्यंत कीर्तन-गायन के साथ रबाब बजाकर श्री गुरु नानक देव जी द्वारा की जा रही देश-विदेश की विभिन्न आध्यात्मिक यात्राओं में सदैव गुरदेव जी के साथ रहे। रबाब बजाते-बजाते ही जीवन की अंतिम सांस भी गुरु-चरणों में लेकर *"इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥"* के अनुरूप भाई मरदाना जी अपना मनुष्य जीवन सार्थक कर सदा-सदा के लिए अमर हो गये।

***५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७, मो. ९४१३६-५१९१७*

कविता

प्रदूषण बरज़ोर

अंध विकासी आस ने, काल किया विकराल। पग-पग पर ज्वालामुखी, डग-डग है भूचाल।
सांझ सकारे दिख रही, इसके मन की खोट। शिरा धरा की छेदता, करता नभ पर चोट।
इससे उपजे ताप से, उबल रहा संसार। मानो धरती दे रही, अम्बर को अंगार।
छाती ताने बढ़ रहा, दूषण यों बरज़ोर। ठौर-ठौर पर शोर है, धुआं चारों ओर।
मनमानी यों कर रहा, भारी सुविधावाद। अपने मद में कर रहा, जीवन को बरबाद।

-श्री भुजंग राधेश्याम सेन, शिव मंदिर के पीछे, मंगली पेट, सिवनी(म. प्र.)-४८०६६१; मो. ०९३०२६०६०९५

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी में निर्भय तत्व

-डॉ. निर्मल कौशिक*

नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब इतिहास के उन अद्वितीय एवं अप्रतिम व्यक्तित्वों में से एक हैं जिन्होंने विभिन्न युगों में विश्व को विश्वास, सच्चाई, सहयोग, दृढ़ता एवं साहस को अपनाकर जीवन-मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप उन्होंने जिस संघर्ष-पद पर चलकर मानव-जीवन के विरुद्ध एवं आदर्श मूल्यों के प्रति निष्ठा और जागरूकता का परिचय दिया, उसका उदाहरण मानव इतिहास में अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने तप, त्याग और संयम द्वारा भक्ति व ज्ञान का समन्वय करके समाज का नेतृत्व किया और जीवन-यापन में नैतिक मार्ग पर चलने की चेतना एवं रुचि उत्पन्न की।

गुरु जी ने मानव धर्म हेतु अपने जीवन की आहुति देने में तनिक भी संकोच नहीं किया। उनका यह महान बलिदान मानव धर्म की स्वतंत्रता के सिद्धांत की स्थापना हेतु था, किसी वाह्य अथवा आंतरिक शक्ति के प्रभाव अधीन नहीं। उन्होंने उदारता एवं सहनशीलता द्वारा विश्व-व्याप्त भ्रातृ-भाव हेतु अपने बलिदान का आदर्श प्रस्तुत किया। वह धर्म समस्त मानव जाति के लिए है जिसमें मनुष्य को महत्त्व एवं गौरव का अधिकारी समझने का उपदेश है। उनके इस मानव धर्म का प्रथम आधारभूत सिद्धांत है-- *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥"* उनके इस सिद्धांत में उनका सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण स्पष्टत: परिलक्षित होता है। उन्होंने इस सिद्धांत के आधार पर ही धर्म के सारभूत सिद्धांत 'मोक्ष' का विवेचन किया है। उन्होंने मानव जाति में निर्भयता का तत्त्व लाने हेतु मोक्ष को निर्भय पद से अभिहित किया। उनकी बाणी में निर्भय पद भले ही लौकिक अर्थ में हो या अलौकिक अर्थ में, मानव जीवन में उसका अत्यंत महत्त्व है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब का दर्शन निर्भयता के संकल्प पर आधारित निर्भय व्यक्ति का आदर्श प्रस्तुत करता है। इसके लक्षणों में शूरवीर की निर्भयता के साथ-साथ ब्रह्मज्ञानी का सर्वश्रेष्ठ संयम शामिल किया गया है, जो किसी को भी भय न देने का संयम है। गुरु जी अपनी बाणी में ज्ञानी और शूरवीर दोनों को निर्भय पद के अधिकारी बनाया है। साथ ही साथ उन्होंने निर्भयता के दोनों पक्ष भाव शत्रु और मित्र के सम्बंधों में समन्वय का विवेचन किया है।

गुरु जी मानवता के सच्चे पुजारी थे। वे हर मानव को सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में स्वेच्छा अनुसार विश्वास का अनुसरण करने की पूर्ण स्वतंत्रता देने के पक्षधर थे। साथ ही वे सामाजिक अन्याय के प्रबल विरोधी भी थे। उन्होंने मानवता के दमन को खुलेआम ललकारा था और मानव को धार्मिक रूढ़ियों, आडंबरों, कट्टरता एवं राजनैतिक उत्पीड़न

*१६३, आदर्श नगर, ओल्ड कैंट रोड, फरीदकोट-१५१२०३, फोन : ०१६३९-२६३०१७

से बचाने हेतु एक नया संदेश दिया, जो ज्ञानी अथवा महापुरुष की सही व्याख्या प्रस्तुत करने में सार्थक सिद्ध हुआ है। उनके अनुसार :

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ *(पन्ना १४२७)*

अर्थात् मानवता का सच्चा पुजारी न किसी को भय देता है और न किसी के द्वारा दिए गये भय की परवाह ही करता है। हे मेरे मन! उसे ही 'ज्ञानी' पुरुष कहना उचित है।

कहने का तात्पर्य यह है कि किसी को भयभीत करना, किसी से भयभीत होना दोनों ही दशाओं में मानव की दुर्बलता सिद्ध होती है। केवल भक्ति और ज्ञान द्वारा ही इसे दूर किया जा सकता है। ईश्वर का स्मरण ही इस दुर्बलता को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकता है। प्रस्तुत सलोक इसी सिद्धांत की ओर संकेत करता है। इसमें मानसिक और शारीरिक दोनों दुर्बलताओं को भय से दूर रखने का संकेत है, क्योंकि आध्यात्मिक दृष्टि से मृत्यु का भय और व्यवहारिक दृष्टि से शत्रु का भय दोनों ही मनुष्य के लिए हानिकारक होते हैं। जो मनुष्य अपने सदाचार द्वारा शत्रु का मन जीत लेता है और गुरु-उपदेश द्वारा (गुरमुख होकर). विषय-विकारों से निर्लेप होकर ईश्वर-पद 'मोक्ष' अथवा निर्भय पद को पा लेता है, वही वास्तव में श्री गुरु तेग बहादर साहिब के शब्दों में 'ज्ञानी' पुरुष है। ज्ञानी का अर्थ है-- ज्ञानवान, जिसने इस सृष्टि के रहस्य को जान लिया है। गुरु जी ने मानवतावादी सिद्धांत को अपने जीवन के व्यवहारिक पक्ष से पूर्णतः जोड़ लिया था। उन्होंने दूसरों की नीति का सत्कार भी किया और स्वयं अपनी नीति पर चलना अपना अधिकार माना। जहां कई बाहरी वर्गों ने उनके अधिकारों में हस्तक्षेप करने का प्रयास किया, वहां उन्होंने बल प्रयोग को भी उचित समझा। स्वयं किसी को दुत्कारने, गिराने या डराने की बजाए वे सदैव सबके धार्मिक विश्वासों, जीवन-सिद्धांतों और नैतिक विचारधाराओं का आदर करते रहे। इसी जीवन-दृष्टि को अपनाकर उन्होंने अपने धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार और प्रसार किया।

गुरु जी के निर्भय होने के सिद्धांत के प्रथम पक्ष में उनका उदार दृष्टिकोण परिलक्षित होता है तो दूसरे पक्ष में उनका स्वाभिमान झलकता है। देखा जाए तो गुरु जी अपनी जीवन-दृष्टि को सम्पूर्ण मानवता में बिखेर देना चाहते हैं। उन्होंने आवश्यकता अनुसार बल प्रयोग करने को गलत नहीं माना। उनकी दृष्टि में किसी दूसरे का जुल्म सहना और भयतीत होना पाप करने से भी बड़ा पाप है। उन्होंने सिर झुकाने की अपेक्षा सिर कटाने को श्रेयस्कर समझा। गुलाम का जीवन उनकी दृष्टि में नरक से भी बदतर है। अपने धर्म को छोड़ना ईश्वर के प्रति गुनाहगार होना है। उनकी बाणी में बार-बार ईश्वर-स्मरण द्वारा निर्भय पद की दुहाई दी गई है, जिसे उन्होंने ज्ञान की चरमावस्था कहा है। उनकी दृष्टि में ज्ञानवान व्यक्ति ही निर्भय होकर संतुलित अवस्था में किसी का प्रतिनिधित्व करता है और निर्भयता के श्रेष्ठतम नैतिक आदर्श की स्थापना करता है।

नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जीवन इस बात का प्रबल एवं पुष्ट प्रमाण है कि वे भयभीत होने और भय दिखाने, दोनों को अनैतिक स्वीकार करते रहे। आठवें गुरु

के ज्योति-जोत समा जाने पर बकाला गांव में स्वार्थी तथा भ्रष्ट लोगों ने संसार को पथ-भ्रष्ट करने के लिये बाईस झूठी गद्दियां स्थापित कर ली थीं। धीरमल जैसे दुष्ट लोगों ने नवम गुरु जी पर घातक आक्रमण तक करवाने का षड़यंत्र रचा था। तब भी गुरु जी निष्चेष्ठ और स्थिर रहे थे। भाई मक्खण शाह के द्वारा धीरमल को दंडित किये जाने पर भी वे करुणा का ही उपदेश देते रहे थे। कहने का तात्पर्य यह है कि वे न किसी से डरते थे और न किसी को डराना चाहते थे। भयतीत को शरण देना उनके जीवन का प्रथम महत्त्वपूर्ण पहलू था और निडर होकर अन्याय का विरोध करना उनकी प्रकृति थी।

कश्मीर के नवाब के अत्याचारों से आतंकित कश्मीरी ब्राह्मणों को गुरु जी ने निर्भय होने का दान दिया था। शरणागत की रक्षा के लिए निडरता का इससे पुष्ट प्रमाण और क्या हो सकता है कि वे समूचे साम्राज्य के साथ निहत्थे टकरा गये और आत्म-बलिदान तक दे डाला? वे शासक के आतंक के आगे झुकने वाले न थे और न ही अपनी किसी आध्यात्मिक शक्ति के चमत्कार से दूसरे को भयभीत करना चाहते थे। उनकी मान्यता थी कि भय से ऊपर उठकर ही हम सबके साथ समान नाता बना सकते हैं और यही मुक्ति का उचित मार्ग है :

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ *(पन्ना १४२७)*

गुरु जी का जीवन-दर्शन इस बात का साक्षी है कि वैर-भाव का समूल त्याग कर देने वाला व्यक्ति ही जीवन की सार्थकता को पहचानता है और प्रेम-पथ पर अग्रसर होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो निर्भयता ही यथार्थ बल है। निर्भय होना ही परमात्मा का लक्षण है। श्री गुरु नानक देव जी ने मूल-मंत्र में अकाल पुरख को निरभउ और निरवैर कहा है। निरभउ परमात्मा के नामाधार से भय में पनपने वाला जीवात्मा भी निर्भय आचरण करता है। गुरबाणी के अनुसार :

निरभउ होइ भजहु भगवान ॥
साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥ *(पन्ना २०१)*

गुरु जी की पावन दृष्टि में जीवात्मा की निर्भयता नश्वर सृष्टि के प्रति है। वे मानते हैं कि जिस परमात्मा के भय में समूची सृष्टि पनप रही है उससे विमुखता जीव के अज्ञान और बंधन का कारण होगी। यही एक ऐसा स्तर है जहां जीव को निर्भय नहीं होना। परमात्मा के भय में रहने से ही मानव निर्भय होता है, लेकिन स्थिति इसके विपरीत है। मनुष्य-मात्र सांसारिक भय से भयभीत होता है। ईश्वर के प्रति उसका भयमुक्त होना ही उसका माया में लिप्त होना है :

निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिओ न राम जहाजु ॥ *(पन्ना ३३६)*

जो जीव ईश्वर के नाम का स्मरण करते हैं और उसकी शक्ति का भय मानते हैं भाव उसके हुक्म को पहचानते हैं वे उस ईश्वर-पद अथवा निर्भय-पद के अधिकारी हो जाते हैं। उनके भीतर आत्म-प्रकाश और ज्ञान प्रकट होता है। यही उनकी भक्ति का मार्ग है :

जा कै रिदै विस्वासु प्रभ आइआ ॥
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥
(पन्ना २८५)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने निर्भय के इस महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को अपने जीवन में

अक्षरशः उद्घाटित किया और समूची मानव जाति को भी इस पर अमल करने की प्रेरणा दी। गुरु जी के जीवन की अनेक घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं। उनके जीवन का अन्यतम महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका जीवन-बलिदान है। उन्होंने अपना शीश देने से पहले जल्लाद से कहा कि मेरा पाठ समाप्त होने से पहले वार मत करना। ज्यों ही मेरा पाठ समाप्त हो और मैं निरंकार, सर्वभय-भंजन के आगे सिर झुकाऊं तभी तुम वार करना। बलिदान से पूर्व जब औरंगजेब ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया था तब भी उन्हें अनेक प्रकार के लोभ एवं भय दिखाकर उनके अपने उद्देश्य से भटकाने की कोशिश की गई, लेकिन गुरु जी ने उनके सभी दावों को ठुकरा दिया था और इस नश्वर शरीर को तिनके के समान त्याग कर 'हिंद दी चादर' कहलाये।

गुरु जी का जीवन संघर्षमय जीवन था। उन्होंने आंधी में जलते दीये के समान अपनी जीवन-ज्योति को दूसरों को मार्गदर्शन देने के लिए बहुत देर तक प्रज्वलित रखा। उन्होंने दलित मानवता का मार्ग प्रशस्त किया। धर्म की रक्षा हेतु उनका दिव्य एवं अद्वितीय बलिदान उनके निर्भीक होने का एक अनुपम उदाहरण है। वास्तव में देखा जाये तो निर्भय व्यक्ति ही दूसरों को अभय दान दे सकता है। भयभीत व्यक्ति इन सब बातों से वंचित रहता है।

गुरु जी की सम्पूर्ण बाणी तथा उनके जीवन-दर्शन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुरु जी का जीवन एक आदर्श, तपस्वी, संयमी, त्यागी, वैरागी, संत का जीवन था। उन्होंने कथनी एवं करनी को एक करके अपनी महानता का परिचय दिया और समाज को एक नई दिशा दी। मानव समाज उनके बलिदान का ऋणी है और सदा रहेगा। भले ही उनका बलिदान तत्कालीन परिस्थितियों की मांग के अनुरूप था लेकिन उनका निर्भयता का सिद्धांत जीवन के हर क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि गुरु जी व्यक्ति, समुदाय और राष्ट्र सभी स्तरों पर अभय दान देने और निर्भीक रहने के समर्थक थे। वर्तमान युग में उनका यह अमोघ मंत्र आधुनिक दूषित परिवेश को निर्मल बनाने और जीवन में कुछ सुख-सुमन खिलाने में अतीव लाभकारी सिद्ध होगा। सबका सटीक समाधान *"भै काहू कउ देति नहि नहि भै मानत आन"* में विद्यमान है। जीना है तो शान से जीओ! यही है श्री गुरु तेग बहादर साहिब का प्रेरणादायक दृढ़ संकल्प।

गुरु जी की सम्पूर्ण बाणी में उनकी निर्भयता का संकल्प विशेषतः उभरकर सामने आता है, इसीलिए उन्होंने निर्भयता को आध्यात्मिक रंग देकर उसे जीने उपयोगी बना दिया है। सांसारिक दुखों और कष्टों से मुक्ति हेतु निर्भयता सबसे प्रमुख तत्त्व है। अतः प्रभु-भजन के लिए प्रभु की शरण में जाने या उसके प्रति आत्मसमर्पण के लिए भी गुरु जी ने जीव को निर्भय बनने और दूसरों को अभय दान देने की युक्ति बताई है, क्योंकि निर्भय-चित्त व्यक्ति ही अपने उत्तरदायित्व को निभाने में सफल सिद्ध हो सकता है। ❁

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी : एक शाश्वत सत्य

*-डॉ. आशा अनेजा**

पंजाब के युगनायक, संत, मार्गदर्शक, महान धर्म-प्रचारक, उद्‌भट योद्धा, संगीतज्ञ तथा उत्कृष्ट विचारक के रूप में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की जो बाणी साहित्य के आंचल में पिरोयी है वह शाश्वत सत्य के रूप में ज्योतिमान है। सिक्ख धर्म के नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के ज्योति-जोत समा जाने के पश्चात् गुरगद्दी पर आसीन हुए। गुरु जी का जन्म ५ वैसाख, संवत १६७८ को श्री अमृतसर में हुआ था। गुरु जी बहुमुखी तथा विलक्षण व्यक्तित्व के स्वामी थे। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित गुरु-परंपरा में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। "इन्होंने सिक्खों को संगठित तथा सशक्त बनाया। उन्होंने एक महान बाणीकार के रूप में आध्यात्मिक, धार्मिक एवं साहित्यिक सौष्ठव से युक्त बाणी का प्रणयन किया, जिसने जनमानस में धैर्य, निडरता, आत्मविश्वास आदि भावों को उजागर किया। एक महामानव के रूप में गुरु जी ने सिक्ख धर्म के लिए ही नहीं अपितु हिंदू धर्म की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग किया।"[१] गुरु जी ने सिक्खों को शस्त्रबद्ध किया तथा मुगल शासकों के अत्याचारों का सामाना करने के लिए उन्हें सशक्त बनाया। 'हिंद की चादर-- गुरु तेग बहादर' के नाम से याद किए जाने वाले गुरु जी की अमृत सदृश बाणी हमारी साहित्य सरिता में उस उताल लहर की भांति दूर से ही दिखाई पड़ती है, जिसमें आज भी मानव स्नान करके अपनी मानसिक और शारीरिक मलिनता को धोकर शांति का अनुभव करता है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने ५९ शबद तथा ५७ सलोकों की रचना की, जोकि पंद्रह रागों में निबद्ध हैं। गउड़ी, आसा, देवगंधारी, बिहागड़ा, सोरठि, जैतसरी, धनासरी, टोडी, तिलंग, बिलावलु, रामकली, मारू, बसंतु, सारग और राग जैजावंती में इनकी बाणी रचित हुई है। गुरु जी की समस्त बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में इनकी बाणी 'महला ९' के अंतर्गत सुरक्षित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु जी की बाणी दो काव्य-शैलियों-- 'शबद' और 'सलोक' में निबद्ध होकर संग्रहीत हुई है। 'शबद' पदों को कहा जाता है। 'शबद' का भाव वो बाणी है, जिसमें गुरु साहिब परमात्मा एवं उसकी आज्ञा अथवा निज़ाम सम्बंधी अपने व्यक्तिगत अनुभव को प्रकट करते हैं।

गुरु जी की सम्पूर्ण बाणी जीवन के उन शाश्वत मूल्यों से जुड़ी हुई है जो आज भी प्रासंगिक हैं। इस बाणी का जितना महत्त्व सत्रहवीं शताब्दी में था उससे अधिक आज है। बाणी में गुरु जी ने मानव-जीवन की नश्वरता तथा उस परम तत्व की सर्वव्यापकता को सिद्ध किया है। प्रभु-भक्ति में लीन तथा युद्ध में खड़ग चलाने में प्रवीण गुरु जी ने वैराग्यमयी बाणी की रचना करके अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन"* के अनुरूप गुरु जी ने न भय खाने तथा न ही भय देने का संदेश दिया। गुरु जी ने अपनी बाणी में स्पष्ट कहा कि नाम-सिमरन से ही सुख की प्राप्ति हो सकती है :

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥

**३०६/१, खुड्ड मुहल्ला, लुधियाना-१४१००८, मो. ९४१७९-७७२००*

जो कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हूं गति पाई ॥ (पन्ना १००८)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब फरमान करते हैं कि प्रभु की लीला अपरंपार है। उसकी गति जानने में मानव असमर्थ है। योगी, जती, तपी आदि सब अपने-अपने यत्न करके हार गये हैं। वह (प्रभु) इतना बलशाली है कि मानव को राजा से रंक और रंक से राजा बना देने तथा भरे हुए को क्षण भर में खाली व रिक्त को भरने की सामर्थ्य रखता है :

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥रहाउ॥
अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥
सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥ (पन्ना ५३७)

गुरु जी मानते हैं कि मनुष्य सांसारिक विषय-विकारों के प्रति आसक्त होकर अपने जीवन के बहुमूल्य भाग अर्थात् यौवनावस्था को नष्ट कर देता है। वह धन, स्त्री, पुत्र तथा भौतिक पदार्थों को ही जीवन की सार्थकता मान लेता है, जबकि वास्तविकता इससे भिन्न है :

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥रहाउ॥
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥ (पन्ना ५३६)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब जगत के सम्पूर्ण सुख-साधनों को मिथ्या मानते हैं। वे मानते हैं कि जग की रचना झूठ है। इस संसार में जो कोई आविर्भूत होता है, उसका तिरोहित होना अनिवार्य है। यह संसार स्वप्न के समान है। सारी सृष्टि धुएं का एक पहाड़ है, जिसका कोई अस्तित्व नहीं :

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीत ॥ (पन्ना १४२९)

गुरु जी की बाणी का केंद्र-बिंदु मनुष्य है। अपनी सारी बाणी में गुरु जी ने मनुष्य को इस मायावी संसार के आडंबरों, आकर्षणों, प्रलोभनों तथा बंधनों के प्रति सचेत रहने का संदेश दिया है। गुरु जी मानते हैं कि माया अपने रंगों और रूपों से मनुष्य को मोहित कर उसे पथ-भ्रष्ट कर देती है। माया का बंधन मनुष्य के विवेक को हर लेता है। माया के साथ-साथ मनुष्य मन की चंचलता, मिथ्या अभिमान तथा इंद्रियों के असंयमित व्यवहार के कारण अपने विवेक का नाश कर लेता है :

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥ (पन्ना १४२७)

गुरु जी स्पष्ट कहते हैं कि हरि की शरण में ही मनुष्य का कल्याण निहित है। प्रभु-भक्ति में ही मनुष्य आनंद प्राप्त कर सकता है। मनुष्य की वास्तविक मुक्ति की व्याख्या करते हुए वे कहते हैं कि जो मनुष्य हर्ष-शोक, स्तुति-निंदा, कंचन-लोहा, शत्रु-मित्र आदि को समान समझता है वह प्राणी वास्तव में मुक्त है। गुरु जी ने कहा है कि परमात्मा को वनों में पाने का भ्रम झूठा है, व्यर्थ है :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥ (पन्ना ६८४)

ईश्वर सारी सृष्टि का कारण-कर्ता है। उसी ने सारी सृष्टि की रचना की है : *"साधो रचना राम बनाई ॥"* उसी ईश्वर की इच्छा से ही सब कुछ होता है-- *"हरि भावै सो होइ ॥"* गुरु जी कहते हैं कि जिस प्रकार पुष्प में भीनी-भीनी सुगंध छिपी रहती है; जिस प्रकार दर्पण में प्रतिबिंब छिपा रहता है, उसी प्रकार सर्वव्यापक

प्रभु भी प्रत्येक जीव में समाया हुआ है, उसे अपने घट में ही खोजना चाहिए :

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥
(पन्ना ६८४)

गुरु जी की बाणी के बारे में कहा गया है कि "इन सलोकों में जहां उदासीनता है, वहां बहुत अधिक शक्ति भी है; जहां घोर निराशावाद है, वहां यथार्थ और आशावाद भी है।"[२] गुरु जी कहते हैं कि सच्चे गुरु की शिक्षा और ईश्वर की कृपा संकट में घिरे मनुष्य का उद्धार करती है। व्यक्ति को गज की तरह पूरी दीनता सहित, अजामिल की तरह पूरी एकाग्रता सहित तथा ध्रुव की तरह पूरे अटल भाव से ईश्वर के प्रति समर्पित हो जाना चाहिए। प्रभु तो करुणाशील, भक्तवत्सल, दीनानाथ तथा कृपालु है। सतसंगति और प्रभु का नाम-सिमरन मनुष्य के कल्याण में सहायक होते हैं। साधना के इस मार्ग पर मनुष्य को बाहरी आडंबर, सांसारिक मोह-माया तथा अभिमान का त्याग करके ही चलना चाहिए, तभी उसे ईश्वर-प्राप्ति हो सकती है। गुरु जी ने जो विचार बाणी में रखे वैसा ही अपना जीवन जिया। "गुरु तेग बहादर साहिब की कथनी और करनी में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। कथनी और करनी में समानता के कारण इनकी बाणी में विलक्षण जीवंतता आ गई है, इसीलिए इनकी बाणी परिमाण में सीमित होते हुए भी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।"[३] गुरु जी की बाणी जनहित, लोक-मंगल तथा सबके उत्थान के लिए है। "गुरु जी ने अपने सलोकों में श्रेष्ठ आत्मा का चित्र प्रस्तुत किया है। उनमें मौलिकता, जोश एवं शक्ति है। सांसारिक और पारिवारिक मोह की अस्थिरता और नश्वरता पर आपकी बाणी में विशेष बल दिया गया है। आपकी बाणी में मनुष्य को शुद्ध आत्मसम्मान की प्रेरणा दी गयी है। आपकी भाषा खड़ी बोली है।"[४]

शुद्ध साहित्यक ब्रज भाषा के साथ-साथ गुरु जी ने यत्र-तत्र पंजाबी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया है। अपने पदों अथवा शबदों को रागों में बांधकर ज्ञान की भक्ति के साथ-साथ कीर्तन संग भी जोड़ दिया है। संगीतात्मक शब्दों द्वारा निर्गुण ईश्वर के साथ तादात्मय स्थापित करना मनुष्य के लिए आसान तथा प्रभावशाली रहा है। इसी संगीतात्मकता के गुण ने बाणी के कलात्मक सौंदर्य को पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया है।

नि:संकोच रूप से कहा जा सकता है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी समाजोमुख है, शाश्वत सत्यों से जुड़ी हुई है और मनुष्य की चेतना को जागृत करने वाली है। मनुष्य सदैव सुख की आकांक्षा करने वाला रहा है। उसके जीवन का चरम लक्ष्य सुख-प्राप्ति ही रहा है। क्या भौतिक सुख-साधनों को जुटा लेने, सम्बंधियों की भीड़ इकट्ठी कर लेने और असीम धन के भंडार भर लेने पर ही मनुष्य सुखी हुआ है? कदापि नहीं। आज के आधुनिक, औद्योगिक युग में अनेक मनुष्यों ने सम्पूर्ण भौतिक उन्नति और विकास प्राप्त कर लिया है। इस भौतिक उन्नति की दौड़ में नैतिक मूल्य पीछे छूट गये हैं। ज्ञान-विज्ञान और प्रकृति पर पूर्ण रूप से विजय का दंभ भरने वाला मनुष्य आज पहले से भी कहीं अधिक लाचार और असुरक्षित हो गया है। उसे जीवन जीने के लिए अनेक तनावों और दबावों से गुजरना पड़ रहा है। समाज में फैले मादक द्रव्यों के जाल, अपराध-वृद्धि, अनेक प्रकार के रोग, मानसिक विकृतियां तथा विध्वंसक प्रवृत्तियों का निरंतर विकास हमें स्पष्ट बताता है कि इस बिगड़ी व्यवस्था को सामान्य करने लिए 'बाणी' का आधारभूत तत्व ही सहयोगी हो सकता है। जिस अमर, शाश्वत

सत्य की बात श्री गुरु तेग बहादर साहिब अपनी बाणी में पूरी स्पष्टता से कह गये हैं उसको जीवन में उतारने से ही समाज सुव्यवस्थित रूप धारण कर सकता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब यदि मान, मोह, अभिमान और माया के त्याग की बात करते हैं, किसी से भय न करने और भय न देने की बात करते हैं, तो वे समाज की हर बुरी व्यवस्था को नकारने की बात ही करते हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के ये वचन उनकी बाणी के महान सत्य को सहज ही उजागर कर देते हैं :

मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥
कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥ (पन्ना ८३१)

तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥
जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥ (पन्ना १२३१)

संदर्भ-सूची :

१. डॉ. तारन सिंघ, गुरू ग्रंथ साहिब जी दा साहितिक इतिहास, फकीर सिंघ एंड संस, श्री अमृतसर, १९६३, पृष्ठ ४३४
२. वही
३. मेघ रमेश कुंतल, नवम गुरु पर बारह निबंध, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८२, पृष्ठ ३३
४. प्रेम प्रकाश सिंघ, गुरु तेग बहादर : जीवन, दर्शन और विचारधारा, पृष्ठ ३४०

कविता

श्रेय पथ पर अविनाशी आनंद

कोई दुख से शोकमग्न है, कोई सुख से हर्षित।
दोनों ही अज्ञान-कूप में, हैं माया से मोहित।
सुख-दुख क्षणभंगुर लहरों से, चंचल मन उलझाते।
जिसका मन गंभीर समंदर, उसे डिगा न पाते।
शोक-हर्ष से परे तत्त्व में, असली परमानंद।
कभी नहीं वो घटता-बढ़ता, रहता नित्य अखंड।
नहीं खोलते ज्ञान-चक्षु हम, आंखों वाले अंधे।
अंदाजे से पकड़े जिनको, वो माया के फंदे।
चर्म-चक्षु जो दिखलाते हैं, वह सब कुछ है नश्वर।
इन्हें पा लिया तो क्या पाया, खोया दुर्लभ अवसर।
दुर्लभ मानव देह मिली, फिर भी जोड़ा सामान।
मानो कौड़ी के बदले, खोयी हीरे की खान।
वही सार्थक जीवन है जो, करता 'मैं' की शोध।
वही सफल है जिसको होता, सच्चे सुख का बोध।
श्रेय मार्ग का राही बन वो, पहले सहता पीर।
दुनिया के सब तीर झेलता, बनकर धीर-गंभीर।
खुद से भी लड़ता, गिर जाता, फिर उठता है वीर।
प्रभु-भरोसे के बल पर, बाधायें देता चीर।
प्रेय मार्ग के दृश्य मनोरम, छोड़ें सौ-सौ तीर।
श्रेय मार्गी कांटों पर ही, चलता धरकर धीर।
कोशिश हो इस जीवन में, अपनी मंजिल पायें।
जिसने जो रस्ता नापा, बेकार कभी न जाये।
अगले जीवन में संचित साधन, बनता है आधार।
और वहीं से आगे बढ़ता, हो जाता उद्धार।
सदा-सदा को कट जाते, दुखों के सारे बंध।
वही श्रेष्ठ मानव पाता है, अविनाशी आनंद।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो : ०९४११६०७६७२

भक्त नामदेव जी की भक्ति-भावना

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

भक्त नामदेव जी महाराष्ट्र में जन्मे-पले थे। उनका संबंध 'वारकरी संप्रदाय' से था, जिसके धर्म-प्रचारकों को प्राय: 'संत' पुकारा जाता है, किंतु एक मराठी विद्वान डॉ. रा. रा. गोसावी ने उनके लिए 'भक्त राज' शब्द का प्रयोग किया है।[१]

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त नामदेव जी के ६१ पद संकलित हैं। भक्त कबीर जी, भक्त धंना जी, भक्त सधना जी आदि की तरह भक्त नामदेव जी के नाम के आगे भी सम्मानसूचक शब्द 'भक्त' ही जोड़ा गया है। ईश्वर को अपना सर्वस्व समर्पित करके उसकी भक्ति में लीन व्यक्ति पर 'भक्त' शब्द पूरी तरह सुशोभित होता है। संस्कृत कोशों में 'भक्त' शब्द की निरुक्ति और अर्थ-छवियां इस प्रकार उपलब्ध होती हैं :

(क) भक्त : (विशेषण, भक्ति युक्ते) : १. अपने पूज्य के प्रति अनुराग (अर्थात् प्रेम भरपूर भक्ति); २. विशेष रूप से अपने भगवान के साथ लगाव।[२]

(ख) भक्त ('भज' धातु से कृत प्रत्यय जोड़कर), 1. A worshipper; 2. A dorer; 3. Devotee, 4. Votory; 5. Faithful attendant.[3]

इन सभी अर्थों में आराधना, श्रद्धा, पूजा तथा दृढ़ विश्वास का भाव निहित है। भक्त नामदेव जी ने स्वयं इस शब्द का व्याख्यात्मक अर्थ निम्नलिखित तुकों में व्यक्त किया है :

राजा राम जपत को को न तरिओ।
गुर उपदेसि साध की संगति ॥
भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥१॥रहाउ॥ . . .
नामा कहै भगति बसि केसव
अजहूं बलि के दुआर खरो ॥ (पन्ना ११०५)

भक्त नामदेव जी की भक्ति-भावना में निम्नलिखित तत्व विद्यमान हैं :

(क) सद्‌गुरु महिमा : 'अद्वय तारक उपनिषद्' में 'गुरु' शब्द की निरुक्ति बताकर उसके व्यक्तित्व का सही रूप इस प्रकार समझाया गया है :

'गु' शब्द का अर्थ है-- 'अंधकार' और 'रु' शब्द का अर्थ है-- रोकने वाला। अत: जो 'अंधकार' अर्थात् 'अज्ञान' को रोकने में समर्थ हो, वह 'गुरु' कहला सकता है।

सर्वगुण-संपन्न 'गुरु' सौभाग्यशाली व्यक्ति को ही प्राप्त होता है। इस विषय में भक्त नामदेव जी का कथन है :

जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥
सो भजि परि है गुर की सरना ॥
(पन्ना ११६५)

जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥
जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥
जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥
जउ गुरदेउ अठारह भार ॥
बिनु गुरदेउ अवर नही जाई ॥
नामदेउ गुर की सरणाई ॥ (पन्ना ११६७)

गुरु ज्ञानेंद्रियों को सुदृढ़ बनाता है। उसके द्वारा लगाए गए ज्ञान रूपी सुरमे के कारण मनुष्य अत्यधिक सूझवान बनकर, राम-नाम में लीन होकर अपने जीवन में सफलताएं बटोर लेता है, यथा :

सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥

**फ्लैट नं. ९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन सोसाइटी, पाम बीच रोड, सेक्टर १८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६*

गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥
(पन्ना ८५७)

वस्तुत: गुरु ही सच्चे श्रद्धालु का अभूतपूर्व मार्गदर्शक होता है। वह सदैव अपने भक्तों को सुकर्मों की ओर प्रेरित करता है, जो कि जीवन की सभी आपदाओं से मुक्ति पाने की सबसे बड़ी कारगर औषधि प्रतीत होने लगती है। इस संदर्भ में भक्त जी के मनोहर वचन श्री गुरु ग्रंथ साहिब से उद्‌धृत हैं, यथा :

सुक्रित मनसा गुर उपदेसी
जागत ही मनु मानिआ ॥ (पन्ना ४८५)
. . . सतिगुर बुधि सिखलाई ॥
सो अवखध मै पाई ॥ (पन्ना ८७३)

(ख) नाम-संकीर्तन का स्वरूप : भले ही भक्त नामदेव जी आरंभ में नाथपंथियों के संपर्क में रहे हों, फिर भी उन्होंने उनके हठयोग को अंगीकार नहीं किया। स्वतंत्रचेत्ता होने के कारण वे निराकार भक्ति में लीन होकर उसके मुख्य तत्व 'नाम संकीर्तन' को वरीयता देते रहे। उनकी दृष्टि में प्रभु-नाम-स्मरण ही एक ऐसा नुसखा है, जो कि मनुष्य के भ्रम रूपी रोग को दूर कर सकता है। वे तो नाम-जप को ही बेसहारों का सहारा और सर्वोत्तम धर्म मानते हैं, यथा :

हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥
हरि के नामु लै ऊतम धरमा ॥
हरि हरि करत जाति कुल हारी ॥
सो हरि अंधुले की लाकरी ॥
प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥
जासु जपत भै अपदा टरी ॥ (पन्ना ८७४)

'नाम-संकीर्तन' करने वाले के लिए 'हरि' (भगवान) 'अंधुले की लाकरी' (असमर्थ को सामर्थ्य प्रदान करने वाला) होता है, फिर भी जप और ध्यान के समय बगुले की भांति आंखें मीचकर बैठ जाना ही काफी नहीं। ऐसी स्थिति में मन की भटकन बहुधा शांत नहीं होती। अत: मनुष्य को चाहिए कि नाम-जप के उपलक्ष्य में सांसारिक उपलब्धियों का विचार छोड़कर शुद्ध मन से प्रभु की आराधना करे। अनेक दृष्टांतों को अपनाकर भक्त जी ने अपना सही मंतव्य निम्नलिखित पद में व्यक्त किया है, यथा :

सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥
उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥
काहे कउ कीजै धिआनु जपंना ॥
जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥
(पन्ना ४८५)

शुद्ध चित्त द्वारा जपा हुआ प्रभु का नाम भक्त के हृदय की धड़कन के समान हो जाता है। जब भी समय मिले वह उसका गायन कर सकता है। ऐसी प्रवृत्ति वाले भक्त को प्रभु-दर्शन निरंतर होने लगता है और वह बड़ा धैर्यवान बन जाता है। निराकार-भक्ति मूलक भक्त जी के निम्नलिखित पदों में इन्हीं तथ्यों की सुगंधि आती है :

जब देखा तब गावा ॥ तउ जन धीरजु पावा ॥
जोती जोति समानी ॥ मै गुर परसादी जानी ॥
नेरै नाही दूरि ॥ निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥
(पन्ना ६५६)
भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥
आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥(पन्ना ४८५)

गुरु की ओर से वरदान के रूप में प्राप्त हुआ भगवद्-नाम भक्त-जनों के समस्त दुखों तथा व्याधियों का नाश कर देता है। अत: सच्चा भक्त आजीवन नाम-स्मरण में लीन रहकर अपने जीवन को सफल बना लेता है। एतद्‌र्थ भक्त नामदेव जी का कथन है :

सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥१॥रहाउ॥
नामदेउ सिमरनु करि जानां ॥

जगजीवन सिउ जीउ समानां ॥२॥१॥(पन्ना ४५७)

प्रभु-नाम की यह सौगात पल्ले बांधने वाला भक्त केवल सांसारिक इच्छाओं का त्याग करने में ही सफल नहीं होता, बल्कि वह भव सिंधु (संसार रूपी समुद्र) को पार करने में भी समर्थ हो जाता है, यथा :

सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥
भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥ (पन्ना ८७३)

(ग) नाम-सिमरन में सर्वदेव-एकता : पैतृक संस्कारों के कारण भक्त नामदेव जी पंढरपुर (महाराष्ट्र) नामक कसबे के रहने वाले थे। अपने चिंतन पर निराकार भक्ति का रंग चढ़ जाने पर वे सभी देवताओं को एक ही रूप वाले समझने लगे थे। निराकार भक्ति में किसी भी मूर्ति की पूजा पर बल नहीं दिया जाता, बल्कि नाम-जपने की प्रेरणा दी जाती है।

भक्त नामदेव जी ने प्रभु-दर्शन पा लेने के बाद मुक्त-भाव से प्रभु-वाचक नामों का काव्य-सौंदर्य किस प्रकार प्रदान किया, उसकी झलकियां प्रस्तुत हैं :

नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥
गुरु भेटत अलखु लखाइआ ॥ (पन्ना ८७४)
सवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ . . .
सरब विआपक अंतर हरी ॥ (पन्ना १२९२)
ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥
(पन्ना १३१८)
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिआ तूं सरब मही ॥ (पन्ना ४८५)

भक्त नामदेव जी द्वारा प्रयुक्त सभी प्रभु-वाचक नाम निराकार प्रभु के सूचक हैं, जो कि सर्वव्यापी हैं और भक्त नामदेव जी के उपयुक्त पद से इसकी सुगंधि *(थान थनंतरि . . . तू सरब मा ही)* आती है। इसकी पुष्टि के लिए उनके दो पद और उद्धृत हैं :

आदि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥
सरब निरंतरि रामु रहिआ
रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥
अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥
घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ ॥(पन्ना १३५)

संदर्भ सूची :

१. डॉ. रा. रा. गोसावी (संपादक), श्री सकल संत गाथा, पहला भाग, पृष्ठ २५०
२. सुखानंद नाथ : शब्दार्थ चिन्तामणि, तृतीय भाग, पृष्ठ ३९६
३. डॉ. ब्रज मोहन तथा डॉ. बद्रीनाथ कपूर : हिंदी-अंग्रेज़ी कोश, पृष्ठ ४०२

कविता

दीवाली का संदेश

दीवाली!
अमावस की काली रात
मगर है जगमग-जगमग
क्योंकि यहां हैं जगमगाती पंक्तियां
जो रोशन करती हैं दुनिया को।
ये तारे हैं या दीप?
एक माला में गुथे हुए
देते हैं संदेश--
मुस्कराते रहो!
जीवन के अंधियारों में
जलाओ आशाओं के दीप!

-बीबी जसप्रीत कौर जस्सी, मकान नं. ११, सेक्टर १-ए, गुरु ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना-१४१०१०

भक्त नामदेव जी : संक्षिप्त जीवन तथा निर्गुण विचारधारा

*-प्रो (डॉ) दीनानाथ 'शरण'**

अंग्रेजी के प्रख्यात कवि एच डब्लू लांगफेलो ने ठीक ही लिखा है :

Lives of Great men all remind us
We can make our life sublime.
And departing leave behind us
foot-prints on the sands of time.

वास्तव में संतों-महापुरुषों का जीवन हमें याद दिलाता है कि उनके सदाचरणों एवं सदुपदेशों के पथ पर चलकर हम भी अपना जीवन महान बना सकते हैं और समय की शिला पर अपनी अमिट छाप छोड़ सकते हैं। महान संत, महापुरुष भक्त नामदेव जी का जीवन भी ऐसा ही था जिनके आदर्शों पर चलने की आज भी परम आवश्यकता व प्रासंगिकता है।

ऐसे महान पुरुष का प्रादुर्भाव हमारे देश में उस समय हुआ था जिस समय हमारे देश में, विशेषत: पंजाब और महाराष्ट्र में राजनैतिक एवं धार्मिक हलचल मची हुई थी।

उस समय की धार्मिक दशा यह थी कि धर्म के नाम पर बहुत ही दुराचार फैला हुआ था। नाथ-पंथियों का प्रभाव विशेषत: देश के पश्चिमी भागों-- पंजाब और राजपूताने में था। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत नामदेव जी नाथपंथी योगी ही थे। इन नाथपंथियों ने भगवद्-भक्ति के बाहरी विधानों के प्रति उपेक्षा प्रकट की, वेद-शास्त्रों के अध्ययन को व्यर्थ बताया और तीर्थाटन आदि को निष्फल माना। इनकी भाषा नागर, अपभ्रंश या ब्रज भाषा से अलग, एक 'सधुक्कड़ी' भाषा थी जिस पर दिल्ली के आस-पास की बोली का प्रचुर प्रभाव था। राजस्थानी, पंजाबी से मिली-जुली सम्मिश्रित इस भाषा को आचार्य पं रामचंद्र शुक्ल ने 'सधुक्कड़ी' भाषा का नाम दिया है।

ये नाथपंथी अपनी सिधाई की धांक जमाकर सच्चे धर्म की भावना से जनता को विमुख करते जा रहे थे। "सामान्य अशिक्षित या अर्द्धशिक्षित जनता पर इनकी रचनाओं का प्रभाव इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता था कि वे शुभ कर्मों के मार्ग में तथा भगवद्-भक्ति की स्वाभाविक हृदय पद्धति से हटकर अनेक प्रकार के तंत्र-मंत्र और उपचारों में जा उलझे और उनका विश्वास अलौकिक सिद्धियों पर जा जमा?" *(हिंदी साहित्य का इतिहास, पं रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ ४४)*

ऐसे घोर संकट-काल में भक्त नामदेव जी ने जनता के एक बहुत बड़े भाग को संभाला, तंत्रों-मंत्रों और उपचारों से ध्यान हटाकर ईश्वर की परम सत्ता और शक्ति के प्रति लोगों की भक्ति और विश्वास को जगाया। भक्त नामदेव जी की यह बहुत बड़ी उपलब्धि है जिस पर विशेष शोध-कार्य किये जाने एवं शोध-ग्रंथ लिखे जाने की आवश्यकता है।

लंदन से प्रकाशित एक पुस्तक के अनुसार भक्त नामदेव जी का जन्म १२६९ तथा देहावसान सन् १३४४ ई में हुआ था। ***(The secred Writtings of the Sikhs-- Ruskin House, George Allen & Unwin Ltd.,***

**दरियापुर गोला, बांकीपुर, पटना-८०००४ (बिहार)*

Museum Street, London, P. 223) इस पुस्तक में यह भी विवरण दिया गया है कि **"Namdev was born at Narsi Bamni in Maharashtra. A tailor by profession, he turned to religious life when still quite young."**

आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल के विचारानुसार भक्त नामदेव जी का जन्म संवत् १३२८ और देहावसान संवत् १४०८ ई में हुआ तद्नुसार जन्म सन् १२७१ और देहावसान सन् १३५१ ई है। महाराष्ट्र में भक्त नामदेव जी का जन्म शक संवत् ११९२ और देहावसान शक संवत् १२७२ प्रसिद्ध है। ये दक्षिण के नरसी बामनी (सतारा ज़िला) के (दर्जी) थे। पीछे चलकर पंढरपुर के बिठोबा के मंदिर में भगवद्-भजन करते हुए अपना दिन बिताते थे। *(दृष्टव्य- हिंदी साहित्य का इतिहास, पं. रामचंद्र शुकल, पृष्ठ ४५, ४७)*

इनके पिता का नाम दमसेती और माता का नाम गोनाबाई था। इनका विवाह गोबिंद सेठी की बेटी राजाबाई से हुआ था, जिससे इन्हें एक पुत्री और चार पुत्र उत्पन्न हुए।

भक्त नामदेव जी द्वारा उच्चरित बाणी और भक्ति का स्वरूप : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त नामदेव जी के ६१ शबद संकलित हैं। इन शबदों में निर्गुण-निराकार परमेश्वर की आराधना है तथा पूजा-विधान के वाह्य अवदानों की व्यर्थता पर ज़ोर दिया गया है, जैसे कि :

आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥
बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥१॥
जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥
महा अनंद करे सद केला ॥१॥रहाउ॥
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥२॥
आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥३॥
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सरब मही ॥४॥ *(पन्ना ४८५)*

भक्त नामदेव जी ने उस परम प्रभु के प्रति अपनी गहरी आस्था और अटूट लगन की अभिव्यक्ति की है :

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥ *(पन्ना ६९३)*

भक्त नामदेव जी की बाणी में स्पष्टत: भक्ति के दो स्वरूप दिखाई देते हैं-- १. सगुण और २. निर्गुण। हमारा मुख्य सरोकार उनकी निर्गुण भक्ति धारा के साथ है।

भक्त नामदेव जी ने निर्गुण भक्ति की ओर प्रवृत्त होकर मूर्ति-पूजा की निरर्थकता एवं परम प्रभु की आराधना और अंत: साधना पर ज़ोर दिया, जैसे कि :

-पांडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥
लै करि ठेगा टगरी तोरी लांगत लांगत जाती थी ॥
पांडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ *(पन्ना ८७४)*
-हिंदू अन्हा तुरकू काणा ॥
दुहां ते गिआनी सिआणा ॥
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥
नामे सोई सेनिआ जह देहुरा न मसीति ॥
(पन्ना ८७५)

इस प्रकार भक्त नामदेव जी की बाणी-

निराकार-निर्गुण-सर्वव्यापी परम सत्ता, परम प्रभु की ओर प्रेरित एवं प्रवृत्त है। वे सगुण भक्ति से ऊपर, सगुणोपासना से परे, निर्गुणोपासना को पहुंचे हुए संत थे।

भक्त नामदेव जी की भाषा का स्वरूप दो प्रकार का है-- १. उनकी सगुणोपासना वाली रचनाओं में उनकी भाषा ब्रज भाषा अथवा परंपरागत प्रचलित काव्य-भाषा है। २. भक्त नामदेव जी की निर्गुण बाणी की भाषा नाथपंथियों के द्वारा प्रयुक्त खड़ी बोली है जिसमें राजस्थानी, पंजाबी, उर्दू फारसी के भी शब्दों का सम्मिश्रण है। ऐसी भाषा को आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल ने 'सधुक्कड़ी भाषा' का नाम दिया है। हमें इस नाम से थोड़ा एतराज़ है, क्योंकि यह 'सधुक्कड़ी' शब्द किसी भी भाषा को नीचा दिखाना या अवमूल्यन करने जैसा है, अत: ऐसी भाषा को हम 'संत भाषा' कहना बेहतर समझते हैं। भक्त नामदेव जी की भाषा 'संत भाषा' है। भक्त नामदेव जी की लोकप्रियता का एक आधार-स्तंभ उनके द्वारा प्रयुक्त यही लोक भाषा है जिसमें संस्कृत एवं ब्रज भाषा जैसा 'पंडिताऊपन' नहीं है।

सामान्य निष्कर्ष : विश्व के महान संतों-भक्तों के बीच भक्त नामदेव जी का स्थान निश्चय ही महान है। वे पहुंचे हुए भक्त थे। संत-पुरुष भक्त नामदेव जी की बाणी प्रकाश-स्तंभ है जो लोगों को सत्य पथ दिखा रही है।

कविता

मत खेलो जीवन से!

होकर चूर नशे में हकूमत के
खेलते हो तुम जो जीवन से
मृत्यु का खतरनाक खेल
ऐ दुनिया भर के हुक्मरानो!
रखना चाहिए याद तुमको यह
कि नहीं होता जीवन किसी खेल की तरह
कि नहीं होता जीवन हंसी-खेल की तरह
अंदरूनी ज्ञान की आंखों से
पूरे ब्रह्मांड को देखिए ध्यान से!
अंदरूनी ज्ञान की आंखों से
जानिए रहस्यमय शक्ति के सारतत्व को!
जीवन के बाद मृत्यु और बाद मृत्यु के जीवन
सिलसिला यह रहता है चलता ही
करने वाले हैं हम मज़ाक मृत्यु को
हंस-हंसकर चरखड़ियों पर चढ़ने वाले हैं हम
हमें मौत की सज़ा तज़वीज़ करने से पहले
अपनी मौत के बारे में सौ बार सोच लेना!
और हां, यह बात भी अच्छी तरह याद रखना
कि हम अपने जीवन की लौ से
संपूर्ण संसार को उज्जवल कर दें!
कण-कण को रौशन दीपक बना दें!
जुल्म के रथ पर सवार होकर
सत्ता के सिंहासन पर बैठ कर
तुम कोई लड़ाई नहीं जीत सकते
तुम किसी का दिल नहीं जीत सकते
इसलिए ऐ ज़ालिम हुक्मरानो!
जीवन से मृत्यु का खेल मत खेलो!
जुल्म के काले साये से जल्दी मुक्त हो जाओ
और दुनिया को उन्मुक्त-भाव से जीने दो!

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर', बी-एक्स ९२५, महल्ला संतोखपुरा,
होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो ९८७२२-५४९९०

बंदी छोड़ दिवस

*-डॉ. जसमित्तर सिंघ**

सिक्ख गुरु साहिबान के जन्म तथा ज्योति-जोत समाने के दिवसों (गुरुपर्वों) के अलावा होला-महल्ला, वैसाखी तथा बंदी छोड़ दिवस (दीपावली) सिक्ख जगत के प्रमुख त्योहार हैं, जो प्रत्येक वर्ष सिक्ख संगत बड़ी श्रद्धा तथा उत्साह से मनाती है। होला महल्ला तथा वैसाखी तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब (ज़िला रोपड़) में तथा बंदी छोड़ दिवस श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर में मनाया जाता है। हस्त लेख में हम बंदी छोड़ दिवस सम्बंधी विचार करते हैं।

सिक्खों के लिए इस दिवस का बड़ा अहम ऐतिहासिक महत्त्व है। सिक्खी रहन-सहन तथा पर्वों के साथ मौलिकता एवं यथार्थवाद जुड़ा है अर्थात् सिक्ख संस्कारों तथा त्योहारों के पीछे ऐतिहासिक प्रमाणिकता है, जिससे अंधविश्वास तथा फिज़ूल के कर्मकांडी जीवन से ऊपर उठी हुई जीवन की सार्थकता जुड़ी है।

सिक्ख गुरु साहिबान ने संगत के रूप में आपसी मेल-मिलाप के महत्त्व को उजागर किया है। गुरबाणी सिक्ख को संगत में मिल बैठने, आपसी मतभेद दूर करने तथा ऊंच-नीच का भेद मिटाकर सांझीवालता कायम करने का पैग़ाम देती है। सिक्ख-त्योहारों पर होने वाले विशेष समारोहों के पीछे भी मुख्य भावना यही होती है। गुरबाणी में फरमान है :

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ *(पन्ना ११८५)*
मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥ *(पन्ना ४९८)*

सिक्ख धर्म में 'बंदी छोड़ दिवस' के नाम से विख्यात इस पर्व की पृष्ठभूमि छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी से जुड़ती है। भाई कान्ह सिंघ नाभा रचित 'महान कोश' के पन्ना ४७६ पर दर्ज इंदराज के मुताबिक सिक्खों में इस पर्व पर दीये जलाने की रस्म बाबा बुड्ढा जी ने चलाई, क्योंकि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब दीपावली वाले दिन ग्वालियर के किले से श्री रिहा हुए थे, इसलिए खुशी में रोशनी की गयी।

कई ऐतिहासिक हवालों के मुताबिक मुगल बादशाह जहांगीर ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को इसलिए गिरफ्तार किया था क्योंकि उन्होंने श्री गुरु अरजन देव जी को मुगल राज्य द्वारा किए गए जुर्माने की अदायगी नहीं की थी। किंतु यह बात सही नहीं लगती। एक अन्य मत इस सम्बंधी ज्यादा सार्थक लगता है कि श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद सिक्ख सिर्फ 'संत' ही नहीं रहे थे, वे 'सिपाही' भी बन गये थे। छठम पातशाह द्वारा 'मीरी-पीरी' की दो कृपाणें धारण करने तथा सिक्खों के श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की अगुआई तले शस्त्रधारी होने को इतिहासकारों ने एक ऐतिहासिक मोड़ कहा है।

प्रो. एच. आर. गुप्ता के अनुसार, "सिक्खों के शस्त्रधारी होने पर मुगल हकूमत को भय लगने लग गया था कि सिक्ख कहीं बगावत न कर दें। जहांगीर बादशाह ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गिरफ्तार करके ग्वालियर के किले में नज़रबंद कर दिया, जहां उस समय के बागी राजाओं (जिनमें से ज्यादातर हिंदू थे) को भी बंदी बनाया हुआ था।

एक अन्य रिवायत के अनुसार गुरु-घर के विरोधी चंदू ने भी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के खिलाफ जहांगीर को काफी भड़काया, जिस पर जहांगीर ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गिरफ्तार करके ग्वालियर के किले में कैद कर लिया। गुरु साहिब के इस किले में बंदी रहने की अवधि के बारे में विद्वानों का एक मत नहीं। कोई यह समय ज्यादा बताता है तो कोई कम। खैर, जब बादशाह जहांगीर की संतुष्टि हो गयी तो उसने गुरु साहिब की रिहाई के हुक्म जारी किए तथा गुरु साहिब के प्रति बड़े इज्जत-मान का प्रकटावा किया। गुरु साहिब के कहने पर ही अन्य कैदी (बागी) राजाओं, जिनकी संख्या ५२ के लगभग बतायी जाती है, भी जहांगीर को रिहा करने पड़े। इसी कारण श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को 'बंदी छोड़ दाता' तथा इस दिवस को 'बंदी छोड़ दिवस' कहा जाता है।

दूसरे बंदियों की रिहाई ने जहां गुरु जी के यश में बढ़ावा किया, वहीं उन्होंने उदारता की गवाही भरते हुए सांप्रदायिकता तथा कौमप्रस्ती से कहीं आगे बढ़कर सर्वसांझीवालता का सबूत दिया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब दीपावली के दिन ग्वालियर के किले से रिहा होकर श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर पहुंचे तो सिक्खों ने दीपमाला करके, आतिशबाज़ी चलाकर, मिठाइयां बांटकर खुशी का प्रकटावा किया, जिस पर प्रत्येक वर्ष सिक्ख इस दिवस की याद को 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में ताज़ा करते हैं।

बंदी छोड़ दिवस का सम्बंध सिक्खों की एक और अहम शख़्सियत भाई मनी सिंघ जी से भी जुड़ता है। सिक्ख मर्यादा के अनुसार श्री अमृतसर साहिब के दर्शन-स्नान का सिक्खों के लिए विशेष महातम माना जाता है, तभी रोज़ाना 'अरदास' में श्री अमृतसर साहिब के दर्शन-स्नान का विशेष ज़िक्र आता है। गुरबाणी में इसकी महानता सम्बंधी फरमान है :

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥
बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥
हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥

(पन्ना १३६२)

सिक्खों द्वारा इस अहम दिवस पर श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर 'सरबत्त खालसा' के रूप में एकत्रित होकर पंथक हितों के लिए 'गुरमते' के रूप में महत्त्वपूर्ण फैसले लेने की प्रथा थी। दशम पातशाह के ज्योति-जोत समाने के बाद इस समारोह में और भी बढ़ोत्तरी हो गयी। उनके ज्योति-जोत समाने के उपरांत कुछ समय तो पंथक अगुआई का कार्य बाबा बंदा सिंघ बहादर के सुपुर्द रहा। बाबा बंदा सिंघ बहादर की शहीदी के उपरांत यह कार्य गुरु-घर के अनन्य सिक्ख भाई मनी सिंघ जी के सुपुर्द हो गया।

जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, समय की हकूमत सिक्खों पर कड़ी निगरानी रखने लगी। सिक्खों के कहने पर भाई मनी सिंघ जी ने मुगल हकूमत की ओर से बंदी छोड़ दिवस पर श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर में धार्मिक समारोह करने के लिए अनुमति ले ली, जिसके बदले भाई मनी सिंघ जी ने सरकारी खज़ाने में कुछ राशि टैक्स के रूप में जमा करवानी स्वीकार कर ली। डॉ रतन सिंघ (भंगू) के 'प्राचीन पंथ प्रकाश' के अनुसार :

दुआली को थो मेला लाया,
तुरकन ने थो टका चुकाया।
दस हज़ार रुपय्या ठहिराया,
टकन खातर तिन दरोगा बहाया ॥२०॥

(पृष्ठ २९६)

किंतु जब भाई मनी सिंघ जी को मुगलों की इस चाल का पता चल गया कि मुगल

हकूमत सिक्खों के इस समारोह के समय अचानक हमला करके सिक्खों का सामूहिक कत्लेआम करने की साजिश रच रही है तो उन्होंने सभी जगह संदेश भेजकर सिक्खों को बंदी छोड़ दिवस पर श्री अमृतसर इकट्ठा होने से मना कर दिया, जिस कारण समारोह न हो सका तथा भाई मनी सिंघ जी ने मुगल खज़ाने में टैक्स के रूप में राशि जमा न करवाई। मुगल हकूमत ने इसी बहाने भाई साहिब को बंदी बना लिया तथा उनको इसलाम धर्म कबूल करने के लिए मज़बूर किया, किंतु भाई साहिब का सिक्खी सिदक कायम रहा और उन्होंने मुगल हकूमत को जवाब दिया :

मैं बंद बंद अब चहौं कटाया,
इम कहिकै उन इमै अलाया।
अब पैसे हम पै कछु नाहीं,
लै जान हमारी नगदी माहीं। (पृष्ठ २९८)

तो इस सम्बंधी काज़ियों-मुल्लाओं ने फ़तवा दे दिया :

खान कहयो, होहु मुसलमान,
तद छोडैंगे तुमरी जान।
सिंघन कहयो, हम सिदक न हारैं,
कई जनम पर सिदक सु गारैं ॥४०॥ . . .
तब काज़ी ने जिम ही कहयो,
तिवें मुफ़त ने फतवा दयो ॥४१॥
बंद बंद जुदो सिंघ मनी करावो,
इम कर चहीयत जगत दिखावो।
होनी सी सो उन मुख बोली,
उन मुख भी स्राप कुंजी खोल्ही ॥४२॥
(पृष्ठ २९८)

इस तरह भाई साहिब भाई मनी सिंघ जी १७९१ बिक्रमी अर्थात् १७३४ ई को लाहौर के नखास चौंक में शहीद कर दिए गये। कुछ विद्वान लिखते हैं कि भाई मनी सिंघ जी को बंदी छोड़ दिवस पर शहीद किया गया, किंतु ऐतिहासिक हवाले इसकी पुष्टि नहीं करते। विशेष बात इस सम्बंधी यह है कि भाई साहिब की शहीदी बंदी छोड़ दिवस मनाने के सम्बंध में हुई थी।

सिक्खों के लिए दीपावली का दिन दो महान शख़्सियतों श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब तथा शहीद भाई मनी सिंघ जी की याद को ताज़ा करके बंदी छोड़ दिवस के रूप में अपने इतिहास पर गर्व करने की याद दिलाता है।

कुछ पाठक इस वृतांत को पढ़कर इस तरह महसूस करेंगे कि सिक्खों के लिए गुरु पातशाह की रिहाई तथा भाई मनी सिंघ जी की शहादत एक समान ही थी। हां, सिक्खों को गुरु साहिबान द्वारा यही शिक्षा दृढ़ करवाई गई है :

-- दुखु सुखु गुरमुखि सम करि जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइआ ॥ (पन्ना ९०७)
-- आवत हरख न जावन दूखा नह विआपै मन रोगनी ॥
सदा अनंदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी ॥ (पन्ना ८८३)

अत: हम कह सकते हैं कि इस शुभ अवसर पर सिक्ख अपने गौरवमयी इतिहास को याद करके इस पर फ़ख्र का इज़हार करते हैं।

चाहे सारा सिक्ख जगत इस दिवस को, जहां कहीं भी कोई है, बड़ी श्रद्धा से मनाता है, परंतु विशेष तौर पर सिक्ख संगत में इस दिवस पर श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर में धूमधाम से पहुंचने के लिए विशेष उत्साह देखने को मिलता है। श्री दरबार साहिब को अलौकिक ढंग से सजाया जाता है। रात को दीपमाला तथा आतिशबाजी का नज़ारा संगत में विशेष आकर्षण का कारण होता है।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

भाई बचित्तर सिंघ शहीद

*-सिमरजीत सिंघ**

भाई बचित्तर सिंघ का जन्म सिक्ख धर्म के महान शहीद भाई मनी सिंघ जी के घर गांव अलीपुर समाली, ज़िला मुलतान (पाकिस्तान) में हुआ। भाई साहिब के पूर्वज छठम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय से गुरु-घर के पक्के श्रद्धालु सिक्ख थे। भाई मनी सिंघ जी के दादा जी भाई बलू राउ जी के सपुत्र-- भाई मलूका, भाई माई दास, भाई रुड़ीआ, भाई रूपीआ, भाई जैमल, भाई बीरीआ, भाई नेता, भाई साहू, भाई सुंदर, भाई माधो तथा भाई सुहेला थे। इनमें से भाई माई दास के घर भाई मनी सिंघ जी का जन्म हुआ। भाई मनी सिंघ जी का विवाह खैरपुर निवासी भाई लक्खी राय (जो बाद में लक्खी शाह के नाम से प्रसिद्ध हुए) की सपुत्री बीबी सीतो जी से हुआ। भाई लक्खी शाह का परिवार भी गुरु-घर का श्रद्धालु था। भाई लक्खी शाह नवम पातशाह साहिब श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के समय दिल्ली के चांदनी चौंक से बड़ी बहादुरी से गुरु जी के धड़ को उठा दिल्ली के पास अपने निवास रायसीना में ले गये थे तथा अपने घर को आग लगाकर गुरु जी के पावन शरीर का अंतिम संस्कार किया था।

भाई बचित्तर सिंघ को उनके पिता भाई मनी सिंघ जी ने अपने अन्य पुत्रों-- भाई उदै सिंघ, भाई अनिक सिंघ, भाई अजब सिंघ, भाई अजाइब सिंघ सहित श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अर्पित किया हुआ था। भाई अजब सिंघ, भाई अनिक सिंघ तथा भाई अजाइब सिंघ चमकौर साहिब की जंग में शहीद हुए। भाई उदै सिंघ शाही टिब्बी पर दुश्मनों का मुकाबला करता हुआ शहीदी प्राप्त कर गया था और भाई बचित्तर सिंघ बुरी तरह से जख़्मी हो गये थे।

१७५६ बिक्रमी की वैसाखी को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच प्यारों का चुनाव करने के बाद खंडे-बाटे की पाहुल तैयार करने का आदेश किया। इस समय भाई मनी सिंघ जी ने अपने भाइयों तथा पांच सपुत्रों समेत खंडे की पाहुल प्राप्त की। भाई संतोख सिंघ जी ने 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की रुत ३, अंसू २० में इस घटना के बारे में ज़िक्र करते हुए बयान किया है :

पुरि मुलतान अलीपुरि नेरे।
भाई दास रजपूत बसेरे ॥
तिस के भनी राम सुत होयो।
आइ तहां गुरदरशन जोयो।
पंच पुत्र ले अपने साथ।
शरनी परयो रहयो गुरनाथ ॥
सो पंचहुं भ्राता करि खरे।
सिंघ नाम तिन के गुर धरे।
बडो बचित्र सिंघ भट भयो।
उदे सिंघ दूसर बिदतयो ॥
अनक सिंघ अरु अजब सिंघ पुन।
पंचम भयो अजाइब सिंघ गुनि।
अंम्रित खंडे को तिन दीना।
मनहुं पंच पांडव बल पीना ॥

भाई बचित्तर सिंघ बहादुर योद्धा था। १७०० ई में बहुत-से पहाड़ी राजाओं ने मिलकर

*संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश, मो ९८१४८-९८२२३

श्री अनंदपुर साहिब पर आकर्मण कर दिया तथा श्री अनंदपुर साहिब को चहुं ओर से घेरा डाल लिया। १ सितंबर, १७०० ई को जब पहाड़ी राजाओं ने श्री अनंदपुर साहिब में लोहगढ़ के किले का दरवाज़ा तोड़ने के लिए एक हाथी को शराब से मस्त करके छोड़ दिया तब 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार, "बूढ़े वज़ीर परमानंद ने कहा कि कल की जंग गुरु के सात किलों में से एक लोहगढ़ किले के सिक्खों के साथ लड़ी जाये, ठीक रहेगी। देखना अब यह है कि लोहगढ़ किले का दरवाज़ा बड़ा मज़बूत है तथा इसे कैसे तोड़ा जायेगा. . . वज़ीर परमानंद फिर बोला, एक या दो फौलादी तवियां बांध उस पर दोधारी सांग खींच कर बांध दी जाये तथा अच्छा रहेगा।"

इस बात की खबर गुरु जी के पास गुप्तचरों द्वारा पहुंच गई। गुरु जी ने बहुत ऊंचे कद के मालिक श्री अमृतसर से आये दुनी चंद को हाथी का मुकाबला करने के लिए तैयार रहने के लिए कहा। गुरु जी द्वारा हाथी से लड़ने के हुक्म को सुनकर दुनी चंद डर गया। उसने रात को श्री अनंदपुर साहिब से भाग जाने की योजना बनाई तथा रस्सी द्वारा किले से उतरते समय गिर गया। उसकी टांग टूट गई। श्री अमृतसर पहुंचकर कुछ दिनों बाद सांप के काटने से उसकी मृत्यु हो गई। 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार, "किला अनंदगढ़ में संध्या के बाद गुप्तचर सिक्ख चतर सिंघ बराड़ ने आकर आज की सारी गाथ सतिगुरु को सुनाई, जिसे सुन गुरु जी मुस्कराए।. . . भाई आलम सिंघ नचना बोला-- जी गरीब निवाज, डरता दुनी चंद कायर होकर यहां से भाग गया है। इतना तो बताएं कि सुबह जो बला किला लोहगढ़ पर आ रही है, इसका मुकाबला कौन करेगा? . . . सतिगुरु ने चतर सिंघ से खबर पाकर भरे दरबर में चहुं ओर देखा कि हाथी के मुकाबले में कौन-सा योद्धा भेजा जाये? लाल सिंघ आदि पच्चीस सिक्ख जो रात्रि के समय गुरु जी के पलंग की सेवा में रहते थे, इनमें भाई बचित्तर सिंघ पर नज़र जा पड़ी . . .। वचन हुआ, सिंघा! किला लोहगढ़ में जाकर राजाओं के आ रहा मदमस्त हाथी का सामना करना है, तैयारी करिए! गुरु जी ने इसे वह बरछा दिया. . .।"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई बचित्तर सिंघ को हाथी का मुकाबला करने का आदेश दिया। सिक्ख इतिहास के अनुसार जब शराब से मस्त चिंघाड़ता हुआ हाथी किले के दरवाजे के पास पहुंचा तो भाई बचित्तर सिंघ ने घोड़े पर सवार होकर बड़ी दिलेरी से हाथी के माथे में बरछा मारा जो हाथी के माथे को भेद गया। ज़ख्मों की ताब न झेलता हुआ दर्द से कराहता हुआ हाथी पीछे की तरफ दौड़ पड़ा और अपनी ही फौज के सिपाहियों को रौंदता हुआ भाग गया। गुरु जी ने भाई बचित्तर सिंघ की बहादुरी की दाद दी। भाई संत राम छिब्बर ने अपनी रचना 'पुरातन वार भेड़ा पा: १०' में इस घटना का ज़िक्र इस तरह किया है :

बरछा सिंघ बचित्र का मुल महिंगो होया।
लाया जो तन गज हसत के मीन शीख प्रोया।
सो राजपूतां मारके जम हाथी होआ।

'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार "बचित्तर सिंघ गुरु जी का हुकम पाकर अरदास करके किला लोहगढ़ की तरफ आया . . .। सबसे आगे मदमस्त हाथी, इसके पीछे घुड़सवार हुआ राजा केसरी चंद जसवालिया चला आ रहा है। गुरु दरबार में सतिगुरु के निकट बैठे मुसाहिब आलम सिंघ ने इसे आते हुए देखा। . . . भाई उदै सिंघ सामने आकर खड़ा हुआ, हाथ जोड़कर बोला कि जैसे रावर की मर्जी, हाज़िर हूं। गुरु जी ने इसे दूसरा बरछा दीवान साहिब सिंघ से

कहकर मंगवा दिया। उदै सिंघ गुरु जी का हुक्म पाकर अराकी पर सवार होकर किला लोहगढ़ में आ पहुंचा . . .।"

"उधर सवा पहर दिन चढ़े राजा अजमेर चंद कहिलूरी बमै फौज किला लोहगढ़ के नज़दीक आ पहुंचा। भाई बचित्तर सिंघ ने देखा समय नज़दीक आ चुका है। यह पहले अरदास करके और साथी सिंघों से आज्ञा लेकर घोड़े पर सवार होकर किला लोहगढ़ से बाहर आया . . .। बचित्तर सिंघ सति श्री अकाल का जैकारा गजाकर आंख झपकते ही बिजली की तरह घोड़े को दौड़ाकर हाथी के निकट जा पहुंचा। भाई साहिब ने दोनों पांव का भार घोड़े की रकाब में डालकर ऐसे ज़ोर से हाथी के माथे में बरछा मारा कि उसके माथे की तवियों को भेद कर बीच में फंस गया। बचित्तर सिंघ ने तेज़ी से ज़ोर के साथ बरछा हाथी के माथे से खींचा, हाथी चिंघाड़ता हुआ पीछे की तरफ मुड़ आया। इसने सिर के साथ बांधी तेग से और पैरों से रौंदकर कई पर्वती यमपुरी रवाना कर दिए। यह देख भाई उदै सिंघ . . . सति श्री अकाल का जैकारा बुलाकर घोड़े को एड़ी मारकर केसरी चंद के सामने जा खड़ा हुआ . . .। उदै सिंघ ने जवाबी हमला श्री साहिब (कृपाण) से ऐसा किया जिससे केसरी चंद का शीश धड़ से अलग हो गया। इस बहादुर योद्धे ने फुर्ती से पर्वतियों के देखते-देखते . . . वापस किला अनंदगढ़ की तरफ आ गया।"

पहाड़ी राजाओं को अपनी पराजय नज़र आई तो उन्होंने गुरु जी के साथ धोखा करने की सोची तथा पहाड़ी राजा अजमेर चंद कहिलूरीए ने अन्य पहाड़ी राजाओं-- करम प्रकाश, बीर सिंह जसवालिया, मदन लाल कुनाड़िया, गोपाल चंद गुलेरिया, घमंड चंद कांगड़िया आदि को इकट्ठा किया। इन्होंने अपने साथ गुज्जरों आदि को भी शामिल कर लिया। पहाड़ी राजाओं ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब पर हमला कर दिया। पहले ही हमले में रंघड़ों का बहादुर जरनैल जगत उल्लाह मारा गया जिसके कारण उसकी फौज मैदान छोड़कर भाग गयी। पहाड़ी राजाओं की फौज का भी बहुत ज्यादा नुकसान हुआ। अपनी इज्जत बचाने के लिए राजाओं ने गुरु जी को संदेश भेजा कि अगर गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दें तो पहाड़ी राजा अपना घेरा हटा लेंगे। गुरु जी उनको परखने के लिए श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़कर हरदो नमोह नामक गांव के पास एक पहाड़ी पर बने निरमोहगढ़ के किले में चले गये। पहाड़ी राजाओं ने अपनी खाई कसमों को भुला दिया और उन्होंने यहां पर गुरु जी की सेना को घेरा डाल लिया। यहां पर सिक्ख सेना की पहाड़ी राजाओं की सेना के साथ भारी लड़ाई हुई, जिसमें भाई बचित्तर सिंघ ने अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए। गुरु जी ने अपने सिक्खों के साथ सतलुज दरिया पार करके बसाली गांव के मुखिया के बुलावे पर वहां चले गये तथा कुछ दिन उनके पास ही रहे।

दिसंबर, १७०४ ई को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पक्के तौर पर अनंदगढ़ का किला खाली कर दिया। शाही सेना और पहाड़ी राजाओं की फौजों ने गुरु जी के काफिले के साथ धोखा करके पीछे से हमला कर दिया। गुरु जी ने भाई उदै सिंघ को पचास सिंघों समेत शाही टिब्बी पर मोर्चा लगाकर उनको रोकने का आदेश दिया। गुरु जी ने भाई बचित्तर सिंघ को भाई जीवन सिंघ के बाद एक सौ सिंघों का जत्था देकर सरसा नदी के किनारे से रोपड़ की तरफ शाही सेना को रोकने के लिए भेजा। भाई वीर सिंघ (बल्ल) ने इसका ज़िक्र 'सिंघ सागर' में किया है :

आइ लरे तह नीच पहारीये बीर ऊदै सिंघ जंगु मचाइयो।
सौ असवार दै सिंघ बचित्र को रोपर ते तिह ओर पठाइयो।

सरसा नदी के पार मलकपुर रंघड़ों के मैदान में भाई बचित्तर सिंघ ने पीछा करती आ रही नाहर ख़ान मलेरकोटिये की फौज का डटकर मुकाबला किया। यह मुकाबला करते समय रंघड़ों के साथ हुई मुठभेड़ में भाई बचित्तर सिंघ को गहरे जख़्म लगे। पीछे से आ रहे साहिबज़ादा अजीत सिंघ के जत्थे ने उनको जख़्मी हालत में देखकर इसकी ख़बर साहिबजादा अजीत सिंघ को दी। साहिबज़ादा अजीत सिंघ उनको उठाकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास कोटला निहंग ले गए। इस सम्बंध में भाई रतन सिंघ (भंगू) ने 'प्रचीन पंथ प्रकाश' में लिखा है :

ज़ख़्मी होइ तह बचित्र सिंघ वरयो,
पठाण खान उस चंगे करयो।
और सिंघ जो ज़खमी गये,
वै भी उस थै चंगे करये ॥

'कोटला निहंग ख़ान' का पहला नाम 'कोट पठाणा' था। इस गांव का सम्बंध श्री गुरु हरिगोबिंद सिंघ जी के समय से सिक्खों के साथ है। यहां के निवासी चौधरी शमस ख़ान गुरु जी के पास घोड़े लेकर कीरतपुर साहिब जाया करते थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने ही हिंमत चंद हंडूरिये, जिसको ग्वालियर के किले से रिहा करवाया था, उसका नसर अली रोपड़ के हाकिम के साथ आपस में समझौता करवाया था तथा इनके राज्यों की हदबंदी सरसा नदी तय की थी। सप्तम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिराय साहिब जी के समय इस परिवार का गुरु-घर के साथ संपर्क बना रहा। आलम ख़ान के बाद चौधरी नौरंग ख़ान कोट का सरदार बना। इसने अपने बेटे निहंग ख़ान के नाम पर कोट का नाम बदलकर कोटला निहंग ख़ान रखा था। यह गुरु-घर का श्रद्धालु था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पहले भी यहां दो बार आ चुके थे। गुरु जी को इस परिवार पर पूरा भरोसा था। गुरु जी ने भाई बचित्तर सिंघ को यहां छोड़ दिया तथा खुद अपने काफिले के साथ चमकौर साहिब की ओर रवाना हो गए। गुरु जी ने निहंग ख़ान को एक कृपाण, एक ढाल और एक कटार निशानी के तौर पर बख़्शिश किए। किसी मुखबर ने रोपड़ चौंकी में जाकर गुरु जी के कोटले निहंग ख़ान में ठहरे होने की सूचना दे दी। सूचना मिलने पर जाफिर अली ख़ान ने हवेली को घेर लिया। उसने हवेली की तलाशी लेनी शुरू कर दी। सारी हवेली में उसको कोई सिक्ख न मिला। वो तलाशी लेता हुआ एक कोठड़ी के पास आया, जिसमें भाई बचित्तर सिंघ जख़्मी हालत में थे तथा निहंग खां की सपुत्री बीबी मुमताज उसकी देखभाल कर रही थी। जाफिर अली जब उस कोठड़ी में प्रवेश करने लगा तो निहंग ख़ान ने उसको कहा कि इस कोठड़ी में उसकी पुत्री और दामाद हैं जिसके कारण जाफिर अली उस कोठड़ी के बाहर से ही वापिस चला गया। बीबी मुमताज ने अपने पिता के जाफिर अली को कहे वचन सुन लिए तथा उसने किसी और से निकाह करवाने से इंकार कर दिया, जबकि उसकी सगाई सरहिंद के पास बस्सी पठाणा में हुई थी। बीबी मुमताज ने पिता द्वारा कहे वचनों पर पहरा देने का फैसला कर लिया। अगली सुबह भाई बचितर सिंघ जख़्मों की ताब न झेलते हुए शहीदी प्राप्त कर गए। भाई बचित्तर सिंघ की याद में यहां एक गुरुद्वारा साहिब भी सुशोभित है।

भाई बचित्तर सिंघ की शहीदी के बाद बीबी मुमताज उस कोठड़ी में ही रहकर नाम-सिमरन करती अपना जीवन-यापन करने लग

गई। कोटला निहंग ख़ान के पास ही नारंगपुर, झांडीआ तथा पुखराली के बीच एक छोटे-से गांव बड़ी में चौधरी निहंग ख़ान ने एक किला बनवाया हुआ था। बीबी मुमताज अपने आखिरी समय में उस किले में जाकर नाम-सिमरन करने लग गई। सीना-ब-सीना चली आ रही रिवायत के अनुसार बीबी मुमताज लगभग १३० वर्ष की आयु भोगकर अकाल पुरख के चरणों में जा विराजी। इस स्थान पर आजकल बीबी मुमताज की याद में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। यहां एक प्राचीन कुआं भी है।

स्रोत पुस्तकें :

१. पंजाब कोश : स. रछपाल सिंघ
२. सिक्ख पंथ विशव कोश : डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)
३. महान कोश : भाई कान्ह सिंघ नाभा
४. तवारीख गुरू खालसा
५. पुरख भगवंत : प्रि. सतिबीर सिंघ
६. ज्ञानी गरजा सिंघ की ऐतिहासिक खोज : स. गुरमुख सिंघ
७. श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ : भाई संतोख सिंघ
८. सिंघ सागर : कवि वीर सिंघ (बल्ल)
९. गुरू कीआं साखीआं : प्रो. पिआरा सिंघ (पदम)
१०. भाई मनी सिंघ : डॉ. रतन सिंघ (जग्गी)

आदर्श कविता

कविता, जिसमें बुद्धि से अधिक हृदय मुखर हो।
शब्द से अधिक भाव प्रखर हो।
कविता, जिसमें विचारों का संगीतमय प्रवाह हो।
सृजन में अल्हड़-सा उछाह हो।
कविता, जो समाप्त होने तक निर्निमेष पढ़ी जाये।
पढ़ते समय 'मैं' का मान ही न रह जाए।
कविता, जो मन को फूल-सा हल्का कर दे।
इरादों में चट्टान-सी दृढ़ता भर दे।
कविता, जिसे पढ़कर मन कहीं खो जाये।
मन का कलुष जो धो जाये।
कविता, जो दृष्टि को नया प्रकाश दे।
हवा में उड़ते विचारों को धरती दे, आकाश दे।
कविता, जो गहराई में चलती ही जाये।
ऊंचाइयां चढ़ती ही जाये।
कविता, जिसमें प्रेम का प्राकट्य हो।
सौंदर्य हो, लालित्य हो।
ज्ञान का प्रबोध हो।
सत्य की ही खोज हो।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो. : ०९४११६०७६७२

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर

*-बीबी ब्रिजइंदर कौर**

महत्त्वपूर्ण सिक्ख लहरों में से २०वीं सदी के प्रथम दशक की सिक्ख लहर 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' थी। यह वो लहर थी जिससे गुरुधामों की बिगड़ चुकी मर्यादा को पुन: व्यवस्थित किया तथा सेवा-संभाल खालसा पंथ के हाथों में आई। इसके फलस्वरूप शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अस्तित्व में आई। सिक्ख कौम की राजनीतिक सरगर्मियों को नेतृत्व देने वाली संस्था 'अकाली दल' इसी लहर की देन है। यह लहर गुरुद्वारों को आज़ादी देने वाली लहर थी। इस लहर के उद्यम के पीछे कई कारण थे।

अंग्रेजी हकूमत के समय सिक्ख जगत में कूका तथा सिंघ सभा लहर का आरंभ हो चुका था जो सिक्खों में जागृति पैदा कर रही थीं। सिंघ सभा लहर को गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर का आधार माना जाता है, क्योंकि सिक्खों में धार्मिक एवं बौद्धिक चेतनता पैदा करने में सिंघ सभा लहर का हाथ है। इसी चेतनता के कारण यह बात सिक्ख जगत से बर्दाश्त नहीं होती थी कि सिक्खी के प्रतीक धर्म-स्थानों पर सरकार या सरकारी पिट्ठू, महंत तथा पुजारी काबिज हों और धर्म-स्थानों की जायदाद को अपने निजी हितों के लिए इस्तेमाल करें। सिक्ख गुरुद्वारा को गुरु का घर मानता है, जहां जाकर उसे सोझी (ज्ञान) प्राप्त होती है :

गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ (पन्ना ७३०)

सिक्खों के लिए गुरुद्वारा एक पवित्र स्थान है जिसमें वे अधर्म को सहन नहीं कर सकते।

१८वीं सदी का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि जब भी किसी ने सिक्खों के पवित्र धर्म-स्थानों को अपवित्र करने की कोशिश की तो सिक्खों ने उसे बुरी तरह से लताड़ा। मस्से रंघड़ ने जब श्री हरिमंदर साहिब की पवित्रता को भंग करने की कोशिश की तो भाई सुक्खा सिंघ-भाई महिताब सिंघ ने उसे टपका दिया। इसी संदर्भ में जब सिंघ सभा लहर ने सिक्ख कौम को बौद्धिक एवं धार्मिक पक्ष से चेतंन किया तो सिक्खों के लिए श्री ननकाणा साहिब तथा अन्य गुरुद्वारा साहिब का अपमान होता देख पाना असहनीय था।

गुरुद्वारा साहिबान में गुरु-मर्यादा का अनस्तित्व : श्री गुरु नानक देव जी के समय से धरमसाल एक मर्यादापूर्ण कार्यवाही का प्रतीक बना हुआ था। श्री गुरु नानक देव जी के बाद शेष गुरु साहिबान ने इस मर्यादा को परिपक्वता दी। उदासी महंतों के आने से गुरुद्वारा साहिबान में मूर्ति-पूजा शुरू हो गई; गुरुद्वारा साहिबान में 'आरती' सनातनी विधि-विधान के अनुसार होने लग गई, शंख एवं घड़ियाल बजने लग गए, जात-पात एवं छुआ-छूत का बोलबाला गुरुद्वारा साहिबान में होने लग गया। श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर की परिक्रमा में बुत ही बुत नज़र आने लगे थे। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश केवल नाममात्र ही रह गया था। कहने से तात्पर्य, शिवाला तथा गुरुद्वारा में कोई अंतर नहीं रह गया था।

महंतों की आचारहीनता : १८वीं सदी में गुरुद्वारों की सेवा-संभाल का कार्य उदासी एवं निरमले साधुओं के पास था। राज्य की स्थापना के बाद भी सिक्खों का ध्यान राज्य-विस्तार की तरफ लगा रहा। भले ही महाराजा रणजीत सिंघ ने गुरुद्वारा साहिबान के नाम भारी मात्रा में

जागीरें आदि लगा दी थीं मगर गुरुद्वारा साहिबान के अंदरूनी प्रबंध के लिए अभी काफी कुछ करना शेष था।

अंग्रेजी राज्य के समय इन महंतों ने माया (धन) की अधिकता होने के कारण ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करना आरंभ किया तथा गुरुद्वारा साहिबान को ऐशप्रस्ती के अड्डे बना लिया। महंतों तथा पुजारियों ने गुरुद्वारा साहिबान की मर्यादा व वातावरण को अपने गृहस्थी एवं निज़ी स्वार्थों के अनुसार ढालकर भ्रष्ट किया हुआ था।

अंग्रेजों की नीति : पंजाब पर कब्जा करने के बाद अंग्रेजों ने पंजाब में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए ईसाई प्रचारकों को अधिक से अधिक सहायता देना आरंभ कर दिया। उचित या अनुचित ढंग से उन्होंने लोगों के धर्म में दख़ल देना आरंभ कर दिया। सिक्ख नेताओं को अंग्रेजों ने हर तरह के लालच देकर अपनी ओर करने का यत्न किया। अंग्रेज जानते थे कि गुरुद्वारे सिक्खों की ताकत का स्रोत हैं। यही कारण था कि अंग्रेज गुरुद्वारा साहिबान पर महंतों का कब्जा उचित बताते थे और उनकी मदद भी करते थे। सरकार की इस नीति के विरुद्ध सिक्खों में भारी आक्रोश था। उनकी यह कुटिल नीति इस हद तक चली गई कि उन्होंने श्री हरिमंदर साहिब को बिक्रय करने का विचार भी बना लिया।

इस लहर के विकास के दौरान अलग-अलग जगहों पर निम्नलिखित घटनाएं घटित हुईं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

गुरुद्वारा श्री रकाबगंज साहिब का मामला : यह मामला उस समय उठा जब अंग्रेजों ने दिल्ली को राजधानी बनाने का मन बनाया। वायसराय के रिहायशी मकान के लिए गुरुद्वारे के महंत से गुरुद्वारे की कुछ ज़मीन प्राप्त कर ली। १९१४ ई में जब गुरुद्वारे की दीवार का कुछ हिस्सा गिरा दिया गया तो सिक्खों ने सरकार की इस कार्यवाही का विरोध किया और अंग्रेज सरकार द्वारा इस जगह की बजाय मंत्रीबार कालोनी में १५० करोड़ जमीन की पेशकश को ठुकरा दिया। सितंबर माह में दीवार का निर्माण करने के लिए १०० सिंघों ने काम आरंभ किया, जो दिसंबर तक खत्म करना था, मगर सरकार ने इससे पहले ही दीवार सम्पूर्ण करवा दी। इस तरह यह मसला सिक्खों की अंग्रेजों के विरुद्ध पहली फ़तह का प्रतीक है।

गुरुद्वारा साहिब बाबे दी बेर, सियालकोट का मामला : इस स्थान का सेवादार सेवा सिंह १९१८ ई में परलोक गमन कर गया। उसकी जगह उसके नाबालिग पड़पोते गुरचरन सिंघ को महंत बनाया गया। गुरुद्वारे की ज़मीन का इंतकाल उसके नाम करवाया गया। केश कत्ल किए हुए गंडा सिंह को इसका अंगरक्षक एवं सलाहकार बनाया गया। सिक्ख यह सब सहन नहीं कर पा रहे थे मगर सरकार इसकी मदद कर रही थी। इस गुरुद्वारे को आज़ाद करवाने के लिए सिंघों ने मोर्चा आरंभ कर दिया। परिणामस्वरूप बहुत-से सिंघों को जेल में जाना पड़ा। आखिर ६ अक्तूबर, १९२० ई को सरकार ने गुरुद्वारे का प्रबंध सिंघों की चुनी हुई १३ सदस्यीय कमेटी के हवाले करना स्वीकार कर लिया। यह जीत बड़ी जीत थी जिसने इस लहर को विकसित किया।

श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर कब्जा : गुरुद्वारा साहिब बाबे दी बेर पर कब्जा होने के बाद सिंघों ने शेष गुरुद्वारा साहिबान पर भी कब्जा करने का मन बनाया और अपना ध्यान केंद्रीय धर्म-स्थान श्री हरिमंदर साहिब पर केंद्रित किया। १० अक्तूबर, १९२० ई को जलियां वाला बाग में रामदासी सिंघों का एक समारोह हुआ जिसमें बहुत-से रामदासियों ने अमृत छका। १२ अक्तूबर को भाई महिताब सिंघ के नेतृत्व में ये नए सजे सिंघ देग (कड़ाह

प्रशाद) करवाने के लिए श्री हरिमंदर साहिब पहुंचे। श्री हरिमंदर साहिब के पुजारी ने अरदास करने से मना कर दिया। इसी समय खालसा कॉलेज के प्रोफेसर तथा विद्यार्थी भी आ गए। प्रिंसीपल बावा हरिकिशन सिंघ के कहने पर अरदास की गई। जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर तथा जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर भी वहां पहुंचे हुए थे। झगड़े का निपटारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हुकमनामे पर छोड़ दिया गया। सोरठि राग में श्री गुरु अरजन देव जी का यह शबद आया :

निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥ . . . (पन्ना ६३८)

हुकमनामे के उपरांत कड़ाह प्रशाद बांटा गया। पुजारियों ने प्रशाद ले तो लिया मगर खाया नहीं। इसके बाद सारी संगत श्री अकाल तख़्त साहिब पर गई। वहां के पुजारी ने पहली घटना देखकर भाग जाने में अपनी भलाई समझी। श्री अकाल तख़्त साहिब की सेवा जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर के नेतृत्व में १३ सिंघों को सौंपी गई। इस प्रकार १९२० ई को श्री अकाल तख़्त साहिब की सेवा-संभाल सिंघों को प्राप्त हुई।

गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब पर कब्जा : १८ दिसंबर, १९२० ई को स. अमर सिंघ के नेतृत्व में २५ सिंघों का जत्था गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब पहुंचा तो बिना किसी विरोध के गुरुद्वारा साहिब पर कब्जा हो गया। इसके बाद तरनतारन के गुरुद्वारा साहिब पर कब्जा किया गया। कई गुरुद्वारा साहिबान पर कब्जा हो जाने के कारण तरनतारन के गुरुद्वारा साहिब का महंत, कमिश्नर मिस्टर किंग को लाहौर जा मिला, जिसने थोड़े समय के लिए उसकी सहायता करने का भरोसा दिलवाया। सरकार की इस शह पर महंत ने सरदार लछमण सिंघ तथा खालसा सेवक दल के जत्थों को गुरुद्वारा साहिब में कीर्तन करने से रोक दिया और एक महिला का अपमान भी किया। जब इस महिला ने अपनी सारी गाथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर आकर सुनाई तो सिंघों में भारी आक्रोश आ गया। उन्होंने जोश में आकर तरनतारन के गुरुद्वारा साहिब पर २६ जनवरी, १९२१ ई को कब्जा करने का कार्यक्रम बनाया। इस बात का पता जब महंत को चला तो उसने अंदरखाते तैयारी कर ली। चाहे दिन भर समझौते की बात चलती रही मगर अंधेरा होने पर महंत के आदमियों ने सिंघों पर हमला बोल दिया। इस हमले में १७ सिंघ घायल हुए। भाई हज़ारा सिंघ तथा भाई हुकम सिंघ शहीदी प्राप्त कर गए। अगले दिन जब महंत पर मुकद्दमा दर्ज करने की बात उठी तो सिंघों ने "पुजारी हमारे ही भाई हैं" कह कर मना कर दिया। इस बात का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने सिंघों से लिखित क्षमा-याचना की तथा गुरुद्वारा साहिब का सारा प्रबंध उनके हवाले कर दिया।

इसके बाद गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध एक कमेटी के हवाले किया गया जिसके अध्यक्ष स. बलवंत सिंघ तथा सचिव भाई मोहन सिंघ वैद्य को बनाया गया था।

श्री ननकाणा साहिब के गुरुद्वारा साहिब पर कब्जा : श्री ननकाणा साहिब का साका इस लहर के विकास में निष्काम कुर्बानी तथा खुद को कुर्बान करने की अद्वितीय उदाहरण है। शुरू से ही इस स्थान की सेवा उदासी साधू करते थे। महाराजा रणजीत सिंघ ने ५०० बीघा जमीन इस गुरुद्वारे के नाम लगाकर इस गुरुद्वारे की आमदन में भारी वृद्धि की। आमदनी बढ़ने के कारण गुरुद्वारे का पुजारी शराबी, कबाबी तथा व्यभिचारी हो गया। वहां आए-गए यात्रियों का अपमान किया जाता था।

इस बात को मुख्य रखते हुए गुरुद्वारा साहिब के सुधार के लिए अक्तूबर, १९२० ई को

ज़िला शेखूपुरा के गांव धारोवाली में एक दीवान सजाया गया जिसमें गुरुद्वारे को आज़ाद करवाने के लिए प्रस्ताव पारित किया गया। महंत ने इसके विपरीत उपद्रव मचाने की तैयारी कर ली। २६ जनवरी, १९२१ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा महंत को एक पत्र भेजा गया। उस पत्र का महंत पर कोई प्रभाव न पड़ा। आखिर सिंघों ने १९ फरवरी को श्री ननकाणा साहिब पर कब्जा करने का निर्णय कर लिया।

भाई लछमण सिंघ के नेतृत्व में १९ फरवरी को प्रात: ६ बजे २०० सिंघों का जत्था गुरुद्वारा साहिब में दाख़िल हुआ और उन्होंने 'आसा की वार' का कीर्तन करना आरंभ कर दिया। महंत नारायण दास ने उन पर गोलियां बरसानी आरंभ कर दीं। भाई लछमण सिंघ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबिआ में बैठे थे। गोली लगने से वे शहीद हो गए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप को भी कई गोलियां लगीं। यह दुखदाई समाचार सुनते ही सिक्खों ने श्री ननकाणा साहिब की तरफ कूच कर दिया। मिस्टर किंग भी वहां पहुंचा। मौके की नज़ाकत को देखते हुए उसने गुरुद्वारा साहिब की चाबियां शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को दे दीं। २१ फरवरी को चाबियां सिंघों को दे दी गईं। महंत तथा उसके साथियों पर मुकद्दमा चलाया गया। १२ अक्तूबर, १९२१ ई को महंत तथा उसके ७ साथियों को फांसी की सज़ा सुनाई गई। महंत द्वारा हाईकोर्ट में अपील करने पर वो बरी हो गया।

तोशेखाने की चाबियों का मोर्चा : तोशेखाने की चाबियों का मोर्चा तब शुरू हुआ जब ७ नवंबर, १९२१ ई को ज़िला मजिस्ट्रेट, श्री अमृतसर ने लाला अमरनाथ के माध्यम से श्री दरबार साहिब के तोशेखाने की चाबियां मंगवा लीं और कप्तान बहादर सिंघ को श्री दरबार साहिब का प्रबंधक नियुक्त किया। २९ अक्तूबर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने यह निर्णय लिया कि चाबियां शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष के पास होनी चाहिए। जगह-जगह पर धार्मिक दीवान आयोजित किए गए और लगभग १९३ सिंघों को गिरफ्तार कर लिया गया। ६ दिसंबर को कमेटी ने निर्णय लिया कि कोई भी सिक्ख तब तक चाबियां लेने न जाए जब तक कैदी सिक्खों को रिहा नहीं कर दिया जाता। सिक्खों में बढ़ता आक्रोश देखकर सरकार ने ११ जनवरी, १९२२ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को प्रमाणित जमात मान कर गिरफ्तार सिंघों को रिहा कर दिया। सिंघों की रिहाई के पश्चात श्री अकाल तख़्त साहिब पर एक भारी दीवान सजा। उस समय एक सरकारी कर्मचारी चाबियां लेकर श्री अकाल तख़्त साहिब पर आया। बाबा खड़क सिंघ ने खड़े होकर संगत से चाबियां लेने की इजाजत मांगी और संगत ने जैकारों द्वारा इसे स्वीकृति दी।

गुरु के बाग का मोर्चा : सिक्खों एवं महंत सुंदर दास के मध्य मोर्चा लगा। एक समझौते के अनुसार महंत ने ३१ जनवरी, १९२० ई को अमृत छककर ११-सदस्यीय कमेटी के अधीन सेवा करनी स्वीकार कर ली थी, मगर श्री ननकाणा साहिब के साके के बाद सुंदर दास अपने वादे से मुकर गया। २३ अगस्त, को गुरुद्वारे की सेवा-संभाल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पास आ गई। पांच सिंघों ने जब लंगर के लिए गुरुद्वारे में से कीकर (बबूल) का वृक्ष काट लिया तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। २६ अगस्त को मीटिंग करके कमेटी के सदस्य स. महिताब सिंघ, प्रोफेसर साहिब सिंघ तथा स. भाग सिंघ को गिरफ्तार कर लिया। गुरु के बाग को जाने वाले सारे रास्ते बंद कर दिए गए। श्री अकाल तख़्त साहिब से १००-१०० सिंघों का जत्था गुरु के बाग के लिए भेजना शुरू कर दिया। जाने से पहले जत्थे का प्रत्येक सिंघ श्री अकाल तख़्त साहिब पर यह प्रण करता कि मैं

आखिरी दम तक गुरु के बाग की तरफ शांतमयी ढंग से बढ़ता जाऊंगा, चाहे मुझे कितनी ही मुश्किलों का सामना करना पड़े। राह में जत्थे के सिंघों की मार-कुटाई की जाती; केशों से पकड़कर, मार-पीटकर, बेहोश करके पानी में फेंक दिया जाता। इतनी सख़्ती के बावजूद भी किसी सिंघ ने जवाबी कार्यवाही नहीं की। इस मोर्चे की आवाज़ सारी दुनिया में फैल गई और देश में हाहाकार मच गई। एक पादरी, जिसने अपनी आंखों से यह नज़ारा देखा, उसके शब्द थे-- "आज मैंने हज़ारों ईसा सूली चढ़ते देखे हैं।"

गिरफ्तार किए सिंघों की गिनती १३०० तक पहुंच गई। ९ सितंबर को राह में पड़ती पुलिस की चौकी हटा ली गई। १७ नवंबर, १९२२ को गिरफ्तार सिंघों की गिनती ५६०५ तक पहुंच गई, जिनमें ३५ सदस्य शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के थे। आखिर मई, १९२३ ई को सरकार ने सभी को रिहा कर दिया। इस मोर्चे ने संसार को सिक्खों की बहादुरी, सहनशीलता एवं चढ़दी कला का प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है।

जैतो का मोर्चा : इस मोर्चे का मुख्य कारण ९ जुलाई, १९२३ ई को अंग्रेज सरकार द्वारा नाभा के महाराजा रिपुदमन सिंघ को तख़्त से उतार कर देहरादून भेजना था। सिक्खों ने अंग्रेजों की इस कार्यवाही को अपना अपमान समझा, इसलिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने निर्णय लिया कि महाराजा को इंसाफ दिलाया जाए। ९ सितंबर, १९२३ ई को समूह पंथ द्वारा नाभा दिवस मनाया गया; जगह-जगह अखंड पाठ साहिब, जुलूस एवं महाराजा के हक में अरदासें की गईं। १२ अक्तूबर, १९२३ ई को सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा अकाली दल को कानून के विरोधी करार दे दिया और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ६० सदस्य गिरफ्तार कर लिए। उन पर बगावत का दोष लगाया गया। गुरुद्वारा गंगसर साहिब के सजे दीवान में सिक्खों को गिरफ्तार किया गया और पाठ कर रहे पाठी भाई निरंजन सिंघ को उठा दिया गया। सरकार की इस कार्यवाही के विरुद्ध रोष के रूप में समूह सिक्ख पंथ की ओर से मोर्चा लगा दिया गया। २५-२६ सितंबर, १९२३ ई को श्री अकाल तख़्त साहिब से शांतमयी रहने का प्रण लेकर २५-२५ सिक्खों का जत्था जैतो को रवाना होने लगा। जनवरी, १९२४ ई के आखिर तक तीन हज़ार सिक्ख गिरफ्तार हो चुके थे। २१ फरवरी को जब एक जत्था बैंडबाजा तथा झूलते निशान साहिब लेकर जैतो पहुंचा तो गुरुद्वारा टिब्बी साहिब के समीप मिस्टर विलसन ने शर्तें लगानी आरंभ कर दीं। जत्था आगे बढ़ता रहा। किसी शरारती तत्व द्वारा मिस्टर विलसन की घोड़ी को छेड़ने पर उसके द्वारा गोली चलाने का हुक्म दे दिया। जत्था चलती गोलियों में भी आगे बढ़ता गया। काफी सिक्ख घायल हो गए और उनकी कोई मरहम-पट्टी न की गई। बारिश होने के कारण ४०-५० सिक्ख शहीद हो गए। इसके बाद १४ मार्च को नौजवानों का जत्था जैतो पहुंचा जिसे सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद ५००-५०० के जत्थे जाने आरंभ हो गए। मई, १९२४ ई को सर मैलकम पंजाब का गवर्नर बना। उसने कुछ शर्तों पर श्री अखंड पाठ साहिब करने की छूट दे दी तथा गिरफ्तार सिक्खों की रिहाई का हुक्म दे दिया। १९२५ ई में पंजाब कौंसिल में गुरुद्वारा एक्ट पास करके २१ जुलाई, १९२५ ई को जत्थे को श्री अखंड पाठ साहिब करने की अनुमति दी। शहीदी जत्थे के लिए श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ कर दिए, जिनका भोग ६ अगस्त, १९२५ ई को पड़ा। इसके साथ ही यह मोर्चा समाप्त हुआ। १०० से अधिक सिंघ शहीद हुए। सरकार ने गुरुद्वारा एक्ट पारित करके गुरुद्वारे का प्रबंध शिरोमणि

गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हवाले कर दिया। इस लहर ने मुख्य रूप में सिक्खों को जो कुछ दिया उसका उल्लेख इस प्रकार दिया जाता है :

गुरुद्वारों का प्रबंध व सेवा-संभाल खालसा पंथ को प्राप्त हुई। परिणामस्वरूप, ऐतिहासिक गुरुद्वारों का प्रबंध, जो आचरणहीन महंतों के पास था, १९२५ ई के गुरुद्वारा एक्ट के अधीन शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को मिल गया। इस प्रकार गुरुद्वारों का प्रबंध लोकतांत्रिक ढंग से होने लगा। ऐसा होने से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को आर्थिक पक्ष से लाभ हुआ, क्योंकि गुरुद्वारा साहिबान की ज़मीन की आमदन जो पहले महंत खाते थे, वो अब इस कमेटी को मिलने लगी, जिससे धर्म-प्रचार तथा अन्य जरूरी पंथक कार्यों को करना आसान हो गया।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा अकाली दल का निर्माण : इन दोनों का अस्तित्व इस लहर के कारण रूपमान हुआ। श्री अकाल तख़्त साहिब पर पंथ का कब्जा हो जाने के बाद पंथक एकत्रता के लिए एक हुकमनामा जारी किया गया। इसके अनुसार १५-१६ नवंबर, १९२० ई को अमृत वेले श्री अमृतसर में एक भारी एकत्रता हुई, जिसमें सिक्ख रियासतों के प्रतिनिधियों के अलावा बरमा तथा अमेरिका की सिक्ख संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस एकत्रता में ही बहुसम्मति से १७३ सदस्यों की कमेटी बनाई गई जिसका नाम शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी रखा गया। इस कमेटी में ३६ सदस्य सरकार की तरफ से नियुक्त किए गए। अध्यक्ष स. सुंदर सिंघ मजीठा, उपाध्यक्ष स. हरबंस सिंघ तथा सचिव स. सुंदर सिंघ रामगढ़ीआ को नियुक्त किया गया। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रयत्न का सदका ही अकाली दल अस्तित्व में आया। १२ दिसंबर, १९२० ई को इसकी एकत्रता में धार्मिक एवं अन्य कार्यों के लिए एक पंथक कमेटी बनाने का विचार किया गया। परिणामस्वरूप, १३ दिसंबर, १९२० ई को अकाली दल अस्तित्व में आया। इसका पहला जत्थेदार स. बलवंत सिंघ तथा सचिव स. तेजा सिंघ को बनाया गया। धीरे-धीरे यह संस्था खालसा पंथ के राजनीतिक कार्यों को करने वाली बन गई। देश की आज़ादी के बाद अकाली दल एक राजनीतिक पार्टी का रूप धारण कर गया।

गुरुद्वारों की पवित्रता पुन: बहाल हुई : इस लहर द्वारा सिक्खों ने अपने खून के साथ गुरुद्वारों की अपवित्रता को धो दिया। श्री ननकाणा साहिब तथा अन्य जगहों पर गिरा खून इसकी गवाही भरता है। गुरुद्वारों का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधीन आने से गुरुद्वारों में गुरमति मर्यादा को पुन: लागू किया गया। श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा से बुत उठा लिए गए। इस प्रकार गुरुद्वारे पुन: सिक्खी रहन-सहन एवं सिक्खी जीवन की प्रतिनिधता करने लगे।

राजनीतिक क्षेत्र में देन : मूल रूप में चाहे यह धार्मिक तथा समाज-सुधारक लहर थी, मगर धीरे-धीरे यह देश की आज़ादी की लहर बन गई। गुरुद्वारों की स्वतंत्रता की लड़ाई में सिक्खों को अंग्रेजी सरकार के साथ टक्कर लेनी पड़ी। अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध सिक्खों की सफलता को देखते हुए तत्कालीन कांग्रेस पार्टी को यह लहर यूं लगी जैसे यह देश की आज़ादी के लिए संघर्ष कर रही है। महात्मा गांधी ने सिक्खों को ये शब्द कहे थे कि "भारतवर्ष एक 'गुरुद्वारा' है और इसे सिक्खों ने आज़ाद करवाना है।"

गुरु का बाग के मोर्चे ने सिक्खों के इस सिद्धांत को मूर्तिमान किया कि सिक्खों की जो वचनबद्धता थी उसे उन्होंने अपने जीवन के अंतिम समय तक भी पूरा करने का यत्न किया। गुरुद्वारा सुधार लहर या अकाली लहर ने सिक्खों को हर पक्ष से चढ़दी कला प्रदान की।

नवंबर १९८४ का सिक्ख कत्लेआम

*-स. त्रिलोक सिंघ**

अक्तूबर-नवंबर ही वो महीने हैं जिनमें दशहरा व दीपावली के त्यौहार आते हैं और ये त्यौहार समस्त हिंदू जगत में बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। इन त्यौहारों पर चारों ओर चांदनी-सी चमकती रोशनी, रंग-बिरंगी लड़ियां और दीपों की कतारें सजाकर भव्य प्रकाश किया जाता है। श्री हरिमंदर साहिब में भी (छठी पातशाही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ग्वालियर किले से रिहा होने की खुशी में) बंदी छोड़ दिवस मनाते हुए भव्य दीपमाला और आतिशबाजी की जाती है।

सन् १९८४ के ३१ अक्तूबर से प्रारंभ सिक्ख कत्लेआम, जो वक्त की सरकार के इशारे पर किया गया, ने कितने ही बच्चों को यतीम कर दिया, कितनी ही मां-बहनों के सुहाग सदा के लिए उजाड़ दिये और उनके घर-बार जला दिये। इन जले घरों से उठता हुआ धुआं इतना सघन, प्रबल एवं प्रगाढ़ था कि कोई भी प्रकाश की किरण इसे चीर नहीं सकती। निर्दोष सिक्खों का कत्लेआम करवाना, वक्त की सरकार के माथे पर इतनी गहरी कालिख पोत गया है कि कोई भी यत्न इसे उतार नहीं सकता। सिक्ख इतिहास में यह कत्लेआम सदा-सदा के लिए 'सिक्ख नसलकुशी' के नाम से अंकित रहेगा।

गत २८ वर्षों से पीड़ित माताओं-बहनों की चीखें, मातम एवं सिसकियां अभी तक कानों में इस प्रकार गुंजायमान हैं कि उनके सम्मुख बड़े-बड़े पटाखों आदि की आवाज़ भी गौण पड़ जाती है। यह सब कुछ तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की मृत्यु के कारण जान बूझकर सिक्ख समुदाय को निशाना बनाकर उसे खत्म करने का नियोजित षड़यंत्र था। तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह उस दिन विदेशी दौरे से वापिस आये थे। उनकी गाड़ी पर भी उग्र भीड़ द्वारा पथराव किया गया, क्योंकि वे सिक्ख थे। जहां राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति की सुरक्षा भेदी जा सकती हो वहां आम सिक्खों की जान-माल की सुरक्षा कौन करता?

समय की सरकार की शह पर पुलिस प्रशासन मूक एवं अपंग दर्शक बनकर सिक्खों को कटता, मरता और जलता देखता रहा। उस समय तो रक्षक ही भक्षक बन गये थे। वहिशीपुने की कोई ऐसी सीमा नहीं थी जिसे पार न किया गया हो। कर्त्तव्यनिष्ठ सिक्ख अधिकारियों को उनकी ड्यूटी से हटा लिया गया, ताकि इस कुकृत्य को अंजाम देने में कोई बाधा न आए और कत्ल का नंगा नाच बेरोक-टोक चलता रहे।

तत्कालीन मनोनीत प्रधानमंत्री का कथन कि "जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिल जाती है" ठीक हो सकता है, पर मेरा प्रश्न है कि धरती जब हिलती है तो वह उस क्षेत्र की सभी चीजों को प्रभावित करती है न कि चुन-चुनकर किन्हीं विशेष को ही। कितना बचकाना वक्तव्य था यह एक जिम्मेदार व्यक्ति का। पेड़

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

**ए-१५, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली-११०००१*

गुरमति विचारों का केंद्र
गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल, श्री अमृतसर

-स. बिक्रमजीत सिंघ*

श्री हरिमंदर साहिब (श्री अमृतसर) परिसर का हर कोना अपने आप में ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्त्व रखता है, जिस कारण यहां आकर प्रत्येक जीव धन्य हो जाता है। श्री हरिमंदर साहिब का समूचा वातावरण दिव्य मंडल का दृश्य पेश करता है।

वैसे तो लगभग प्रत्येक ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब में गुरमति विचारों, कथा समागमों इत्यादि के लिए 'दीवान हाल' बने हुए हैं, परंतु श्री हरिमंदर साहिब परिसर में सुशोभित 'गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल' का नाम ऐतिहासिक एवं धार्मिक पक्ष से विशेष वर्णननीय है। यह वो पवित्र स्थान है जहां पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने प्रकृति और आध्यात्मिकता के सुमेल वाली 'बारह माहा' बाणी का उच्चारण कर समूची मानवता को प्रभु-प्राप्ति का साधन दिया।

असल में 'मंजी' शब्द से अभिप्राय 'चारपाई' है जिस पर लोग बैठते व सोते हैं। सिक्ख धर्म में इस शब्द के प्रयोग का अपना एक विशेष महत्त्व है। तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी ने सिक्खी के प्रचार को और अधिक तीव्र गति प्रदान करने के लिए २२ गुरसिक्ख प्रचारक नियुक्त किये। ये प्रचारक बाद में '२२ मंजीदार' कहलाए। इन २२ प्रचार-केंद्रों को सिक्ख इतिहास में '२२ मंजियों' के नाम से जाना जाता है। गुरु जी ने उन २२ प्रचारकों को अपने मुख्य सिक्ख के रूप में मान्यता दी तथा एक 'मंजी' पर बैठकर गुरु-घर की मर्यादा, उपदेश तथा हुक्मों की जानकारी संगत को देने के लिए आदेश किया। 'मंजी' पर बैठने से ये प्रचारक खुद-ब-खुद संगत में सम्मानित हो जाते थे। इस तरह सिक्ख धर्म में 'मंजी' शब्द के प्रयोग की अन्य प्रथा किसी गुरुधाम अथवा गुरु-स्थान को 'मंजी' कहने की भी है। अगर इसकी पृष्ठभूमि में जाएं तो पता चलता है कि सिक्ख गुरु साहिबान धर्म-प्रचार अथवा परोपकार के लिए जहां-जहां जाते वहां पर उनके बैठने के लिए एक 'थड़ा' (चबूतरा) बना दिया जाता। उस 'थड़े' के आस-पास श्रद्धालु सिक्ख बैठकर गुरु साहिब का उपदेश श्रवण करते। सत्कार से उन थड़ों को 'थड़ा साहिब' कहा जाने लगा। मौसमी मज़बूरियों-- बारिश, तेज धूप, हवा, इत्यादि के कारण उन 'थड़ों' वाले स्थानों पर संगत की तरफ से छत एवं कमरे बनाए जाने लगे। यही कमरे बाद में 'मंजी साहिब' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

इसी तरह श्री हरिमंदर साहिब परिसर में स्थित गुरुद्वारा मंजी साहिब वाला स्थान उस समय अस्तित्व में आया जब श्री गुरु अरजन देव जी अमृत-सरोवर की कार-सेवा करवा रहे थे। उस समय गुरु जी इस स्थान पर दीवान सजाया करते थे। सिक्खों पर मुगलों द्वारा की जाती सख़्ती के दौर में जब श्री हरिमंदर साहिब के पवित्र सरोवर को मुगलों की तरफ से अपवित्र करने की कोशिश की जा रही थी तो इसके

*S/o S. Ranjeet Singh, 2946/7, Bazar Loharan, Chowk Lashmansar, Sri Amritsar. M : 87278-00372

विरोध में बाबा दीप सिंघ जी के साथ आए जिन सिक्ख योद्धाओं ने मुगलों की फौज से टक्कर लेते समय शहीदियां प्राप्त कीं उनका सामूहिक अंतिम संस्कार भी इसी स्थान पर पूरब दिशा में किया गया। यह शहीदी स्थल (शहीदगंज) इस जगह पर आज भी मौजूद है।

श्री हरिमंदर साहिब में निरंतर बढ़ती संगत की तादाद को देखकर और गुरमति विचारों के लिए जरूरत को मुख्य रखते हुए संगत के सहयोग से इस पावन स्थान की कार-सेवा कर बाबा बिशन सिंघ और बाबा करतार सिंघ 'ठट्ठे टिब्बे' वालों ने लगभग १४० फुट लंबा और १०० फुट चौड़ा विशाल 'दीवान हाल' बना कर एक २० फुट लंबी और १५ फुट चौड़ी स्टेज बना दी है। स्टेज के दोनों तरफ एक-एक कमरा है। इसमें से एक कमरे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश है और यहां पर श्री अखंड पाठ साहिब भी किया जाता है।

गुरुद्वारा मंजी साहिब दीवान हाल में हर रोज अमृत वेले 'आसा की वार' के कीर्तन के उपरांत श्री हरिमंदर साहिब से आए 'मुख वाक' की कथा की जाती है। शाम को गुरु-इतिहास से संबंधित 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की कथा के दीवान सजते हैं।

अगर हम पंजाब के इतिहास में लगे अलग-अलग अकाली मोर्चों की बात करें तो मोर्चों के समय भी इस पावन स्थान की विशेष महत्ता रही है। इस स्थान पर पंथक, धार्मिक एवं राजसी गतिविधियों के तहत सिक्ख अगुओं व सिक्ख जत्थेबंदियों की एकत्रताएं होती थीं। सिक्खों और पंजाब के हकों के लिए सिक्ख अकाली अगुओं द्वारा जब गिरफ्तारियां दी जाती थीं तब इसी स्थान से रणनीति आदि बनाने के लिए भारी इकट्‌ठ-समागम किये जाते थे। इसी कड़ी में इस महान स्थान का महत्त्व आज भी बरकरार है।

वर्तमान समय में इस स्थान पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर की तरफ से अलग-अलग गुरमति समागम करवाए जाते हैं, जिनमें प्रकाश पर्व श्री गुरु नानक देव जी, प्रकाश पर्व श्री गुरु रामदास जी, बंदी छोड़ दिवस (दीवाली) के अलावा भक्त साहिबान से संबंधित दिवस; सिक्ख योद्धाओं के शहीदी दिवस भी शामिल हैं। विशेषत: श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश पर्व के अवसर पर विभिन्न स्कूली बच्चों के गुरबाणी कीर्तन मुकाबले, कविता मुकाबले और भाषण मुकाबले भी करवाए जाते हैं। कीर्तन परंपरा में रागों को प्रफुल्लित करने के लिए विशेष रूप से 'राग दरबार' का आयोजन भी इस स्थान पर किया जाता है।

पंथ-प्रसिद्ध कथावाचक और श्री अकाल तख़्त साहिब से 'भाई गुरदास जी अवार्ड' से सम्मानित ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन भी इसी स्थान से प्रकाश पर्व श्री गुरु रामदास जी से लेकर बंदी छोड़ दिवस तक गुरमति-कथा की सेवा अपने अंतिम समय तक निभाते रहे हैं।

संगत की मांग को मुख्य रखते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से श्री हरिमंदर साहिब से आए रोज़ाना के 'मुख वाक' की कथा का सीधा प्रसारण सुबह के समय गुरबाणी कीर्तन के सीधे प्रसारण के तुरंत बाद टेलीविज़न पर हर रोज़ किया जा रहा है, जिससे देश-विदेश की संगत इस महान और पवित्र स्थान से जुड़कर भरपूर आनंद ले रही है।

गुरबाणी चिंतनधारा : ६४

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥
ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥
ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥
ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥
ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥
ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥
ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥
ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥
नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥
(पन्ना २७३)

आठवीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी के हृदय-घर में सदैव पारब्रह्म परमेश्वर के प्रेम का गहरा रंग चढ़ा रहता है, जिसके फलस्वरूप परमेश्वर सदैव ब्रह्मज्ञानी के अंग-संग निवास करता है। ब्रह्मज्ञानी को हमेशा प्रभु-नाम का ही सहारा है और प्रभु-नाम ही उसका परिवार है अर्थात् प्रभु का नाम ही ब्रह्मज्ञानी का वास्तविक परिवार बन जाता है। ब्रह्मज्ञानी सदैव जागृत अवस्था में रहता है अर्थात् वह विकारों के आक्रमणों से सुचेत रहता हुआ कभी अज्ञानता की नींद नहीं सोता, बल्कि हमेशा ज्ञान के प्रकाश में जागता रहता है। ब्रह्मज्ञानी हमेशा के लिए 'मैं-मेरी' वाली अर्थात् अहंकार वाली बुद्धि का त्याग कर देता है। ब्रह्मज्ञानी के हृदय में आनंद के सागर प्रभु जी का निवास होता है इसलिए उसके हृदय-घर में सदैव आनंद बना रहता है। उसके हृदय में निरंतर सहज सुख का निवास रहता है, जिसके कारण उसका हृदय आनंद भरपूर रहता है। ब्रह्मज्ञानी के हृदय में सुख और अलौकिक शांति का स्थाई निवास हो जाता है। पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी इस सहज अवस्था के कारण अमर पद की प्राप्ति कर लेता है, अतः उसकी आत्मिक ऊंची अवस्था का कभी नाश नहीं होता।

संसार में विचरण करते हुए जीव जैसी संगत में रहता है उसका प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। जीव अपनी संगत से पहचाना जाता है। उपरोक्त पउड़ी के संदर्भ में ब्रह्मज्ञानी की संगत अकाल पुरख के साथ सदैव बनी रहती है, इसलिए पारब्रह्म परमेश्वर, जो कि अनंत गुणों का भंडार है और बेअंत दयालु होने के साथ-साथ सदैव अमर-अजर स्वरूप है, उस पारब्रह्म की संगत की रंगत ब्रह्मज्ञानी पर हूबहू दृष्टिगत होती है।

ब्रह्मज्ञानी अपने अस्तित्व को पारब्रह्म में अभेद कर देने के कारण सदैव आनंद की अवस्था में निवास करता है तथा समस्त बंधनों से मुक्त होकर अविनाशी प्रभु में ही निवास करता है। गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि साधसंगत में आकर जिसने अटल आत्मिक आनंद का ठिकाना हासिल कर लिया उसका हृदय सांसारिक पदार्थों हेतु कभी नहीं डगमगाता, यथा :

डेरा निहचलु सचु साधसंग पाइआ ॥
नानक ते जन नह डोलाइआ ॥(पन्ना २५६)

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

अत: ब्रह्मज्ञानी पारब्रह्म परमेश्वर की तरह ही अमर एवं अविनाशी है।

ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥
ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥
ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥
ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥
ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥
ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥
ब्रहम गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥
ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥

प्रस्तुत असटपदी की छठी पउड़ी में गुरु साहिब ने ब्रह्मज्ञानी के महाप्रतापी स्वरूप, उसके निर्मल उपदेश और महान दर्शन की महिमा का गुणगान किया है। गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म का ज्ञाता होता है अर्थात् ब्रह्मज्ञानी अकाल पुरख परमेश्वर का वाकिफ़ (जानकार) बन जाता है। उसका केवल एक निरंकार प्रभु से ही प्यार होता है। ब्रह्मज्ञानी सदा निश्चिंत बना रहता है। उसे किसी प्रकार की कोई चिंता या फिक्र नहीं रहता। ब्रह्मज्ञानी का उपदेश दूसरों को निर्मल एवं पवित्र करने वाला होता है। ब्रह्मज्ञानी वही बन सकता है जिसे प्रभु खुद बनाता है अर्थात् ब्रह्म का ज्ञान उसे ही प्राप्त हो सकता है जिसे परमेश्वर खुद करवाता है। ब्रह्मज्ञानी का प्रताप (ख्याति) सर्वत्र फैल जाता है अर्थात् उसका नाम (महिमा) बहुत ऊंचा है। ब्रह्मज्ञानी का दर्शन बड़े भाग्य से नसीब होता है। बड़ी किस्मत वाले लोग ही ब्रह्मज्ञानी के दर्शन करने का सौभाग्य हासिल करते हैं। ब्रह्मज्ञानी से सदा कुर्बान जाएं। शिव जी (आदि देवता) भी ब्रह्मज्ञानी के दर्शन को आतुर रहते हैं। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में स्पष्ट करते हैं कि अकाल पुरख वाहिगुरु स्वयं ब्रह्मज्ञानी का ही रूप है अर्थात् दोनों में कोई भिन्न-भेद नहीं, दोनों समान रूप हैं।

वस्तुत: ब्रह्मज्ञानी निर्गुण निराकार का सगुण साकार रूप है। देवता भी ब्रह्मज्ञानी के दर्शन पाकर स्वयं को धन्य मानते हैं, इसलिए वे सदैव मानव देही पाने को लालायित रहते हैं, क्योंकि कर्म-भूमि केवल मनुष्य के पास है, बाकी सब भोग-भूमियां हैं। देव लोक के देवता भी ब्रह्मज्ञानी के दीदार कर उस परिपूर्ण परमेश्वर की भक्ति में लीन होकर प्रभु का मिलाप पाना चाहते हैं, उसमें एक रूप होने की तमन्ना रखते हैं। ब्रह्मज्ञानी का गुणानुवाद करते हुए भट्ट कल जी की बाणी भी उल्लेखनीय है। श्री गुरु नानक देव जी की महिमा का बख़ान करते हुए भट्ट कल जी अपने हृदयोदगार प्रेमपूर्वक अभिव्यक्त करते हैं कि मैं श्री गुरु नानक देव जी के सुयश का गायन करता हूं, जिसने राज और योग दोनों का आनंद लिया है अर्थात् जो गृहस्थी भी है और संसार से निर्लिप्त होकर निरंकार परमेश्वर के साथ जुड़ा भी है। ऐसे निरंजन श्री गुरु नानक देव जी का यश जनक आदि योगियों सहित मुनिजन, साधुजन, सनक जैसे सिद्ध पुरुष भी करते हैं। गुरबाणी का प्रमाण है :

कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥
गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सरब कला ॥
गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ (पन्ना १३८९)

ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥
ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥

ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥
ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥
ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ब्रह्मज्ञानी की महिमा अवर्णनीय मानते हुए पावन फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी की कीमत को आंका नहीं जा सकता अर्थात् उसकी महिमा शब्दों द्वारा करनी नामुमकिन है। समस्त गुण, ज्ञान तथा सम्पूर्ण ब्रह्मांड ब्रह्मज्ञानी में ही समाया हुआ है अर्थात् उसका हृदय सब कुछ जानता है। सारे गुण उसके मन में समाहित हैं। ब्रह्मज्ञानी की ऐसी ऊंची आध्यात्मिक अवस्था का कौन भेद पा सकता है? कोई नहीं। ब्रह्मज्ञानी को सदा नमस्कार है। ब्रह्मज्ञानी की महिमा का आधा अक्षर भी बयान नहीं हो सकता अर्थात् तिल-मात्र महिमा करने की योग्यता भी किसी में नहीं है, पूर्णतया गुणों को बयान करना तो दूर की बात है। ब्रह्मज्ञानी समस्त जीवों हेतु पूजनीय मालिक है। ब्रह्मज्ञानी की ऊंची अवस्था का अंदाजा भला कौन लगा सकता है! उसकी ऊंची अवस्था तो केवल कोई उसकी अवस्था तक पहुंचा महापुरुष ही लगा सकता है, अन्यथा कोई नहीं। ब्रह्मज्ञानी के गुणों के सागर का कोई आदि-अंत नहीं है अर्थात् वह अनंत गुणों का मालिक है। पंचम पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी मार्गदर्शन करते हैं कि हे जीव! तू सदैव ब्रह्मज्ञानी के चरणों में नमस्कार करता रह, सिज़दा करता रह।

वस्तुत: ब्रह्मज्ञानी की महिमा पारब्रह्म परमेश्वर की तरह अनंत है। ब्रह्मज्ञानी सारी सृष्टि का मालिक है। उसकी उपमा कोई ब्रह्मज्ञानी ही जान सकता है। वैसे भी गुरबाणी आशयानुसार जैसे पारब्रह्म परमेश्वर का अंत पाना किसी जीव का जीवन-मनोरथ नहीं; जैसे उसका नाम जपकर, उसकी सिफत-सलाह कर उसके गुणों को आत्मसात करते हुए उसी में विलीन हो जाना ही जीव का परम लक्ष्य है, ठीक वैसे ही ब्रह्मज्ञानी का भेद जानने की अभिलाषा को त्यागकर उसकी संगत का लाभ परमेश्वर की बंदगी करते हुए प्राप्त करने की भरपूर कोशिश के साथ अरदास विनती भी करनी चाहिए। हर गुरसिक्ख रोज अरदास करते हुए विनती करता है कि *"सेई गुरमुख पिआरे मेल, जिन्हां मिलिआं तेरा नाम चित आवै।"* अर्थात् ऐसे गुरमुख प्यारों का मिलाप हो, जिनके दर्शन-मात्र से तेरा नाम स्मरण हो तथा हृदय में तेरे नाम का निवास हो।

गुरु पंचम पातशाह ने सुखमनी साहिब में अन्यत्र भी समझाया है कि जैसे पिता के जन्म की जानकारी बच्चे को नहीं हो सकती, ठीक वैसे ही वाहिगुरु का अंत वाहिगुरु के बनाए जीव नहीं पा सकते :

पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥
सगल परोई अपुनै सूति ॥
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ (पन्ना २८४)

जिस पर प्रभु कृपा करता है वह जीव उसके गुण-गायन करता हुआ उसी में ही लीन हो जाता है।

ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥
ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥
ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥
ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥

ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥
नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥

आठवीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में ब्रह्मज्ञानी को साक्षात पारब्रह्म का रूप मानते हुए श्री गुरु अरजन देव जी पावन फरमान करते हैं कि ब्रह्मज्ञानी सारी सृष्टि का सृजनहार (रचयिता) है। ब्रह्मज्ञानी अमर अविनाशी है। वह कभी आवागमन के चक्कर में नहीं पड़ता। ब्रह्मज्ञानी मुक्ति-दाता अर्थात् मुक्ति का मार्गदर्शक है। ब्रह्मज्ञानी प्रभु-मिलाप की युक्ति बताकर प्रभु परमेश्वर के साथ जोड़ने वाला सेतु है। ब्रह्मज्ञानी पूर्ण पुरुष है, विधाता है। ब्रह्मज्ञानी अनाथों का नाथ अर्थात् बेसहारों का सहारा है। वो सबकी सहायता करने वाला है। ब्रह्मज्ञानी के रहमतों वाले हाथ सब जीवों के सिर पर हैं। यह दृश्यमान जगत ब्रह्मज्ञानी का ही है अर्थात् सृष्टि की समस्त आकार रचना ब्रह्मज्ञानी द्वारा निर्मित और साकार हुई है। ब्रह्मज्ञानी स्वयं पारब्रह्म परमेश्वर है। ब्रह्मज्ञानी की शोभा कोई अन्य ब्रह्मज्ञानी ही कर सकता है अर्थात् ब्रह्मज्ञानी जैसा कोई दूसरा हो तभी उसकी शोभा की जा सकती है। गुरु पंचम पातशाह इस असटपदी की अंतिम पंक्ति में ब्रह्मज्ञानी को समस्त जीवों का मालिक कथन कर रहे हैं।

सम्पूर्ण असटपदी में गुरु साहिब पंचम पातशाह ने ब्रह्मज्ञानी को मानवता के उद्धार हेतु जीवन-युक्ति समझाकर, प्रभु-सिमरन में जोड़कर, जीते-जी मुक्ति का मार्ग दर्शाने वाला माना है। प्रभु की तरह अविनाशी ब्रह्मज्ञानी का कोई अंत नहीं पा सकता। ब्रह्मज्ञानी निरंकारस्वरूप सदा स्थिर रहने वाला है, यथा-- *"ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥"* इसी भाव को कलगीधर पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'चौपई साहिब' में पूर्ण गुरु के रूप में दर्शन कराए हैं। पावन बाणी में गुरु साहिब का फरमान है कि सब कुछ काल वश है, केवल परिपूर्ण परमात्मा, ब्रह्मज्ञानी पूर्ण गुरु के रूप में प्रकट होकर जीवों का उद्धार कर रहा है, यथा :

काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥
काल पाइ सिवजू अवतरा ॥ . . .
आदि अंति एकै अवतारा ॥
सोई गुरू समझियहु हमारा ॥

अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

गुर सिखी बारीक है . . . १९

–डॉ सत्येंद्रपाल सिंघ*

प्रसिद्ध फकीर बाबा बुल्ले शाह के जीवन से सम्बंधित एक घटना के अनुसार एक दिन वे नदी के किनारे बैठकर रब को याद कर रहे थे। तभी उन्होंने एक स्त्री को गाजर बेचते हुए देखा। जो भी ग्राहक उसके पास गाजर खरीदने आता, ढेर में से अच्छी गाजरें चुनने का प्रयास करता। गाजर बेचने वाली स्त्री उसे रोक देती और कहती कि वह एक सिरे से मिलीजुली गाजरें ही तोलेगी, छांटने नहीं देगी। ग्राहकों को मज़बूरी में मिलीजुली गाजरें ही खरीदनी पड़तीं। कुछ देर बाद एक आदमी आया जिसे देखते ही गाजर बेचने वाली स्त्री का व्यवहार बदल गया। स्त्री ने स्वयं चुन-चुनकर अच्छी गाजरें छांटी और उस आदमी को दे दीं। बाबा बुल्ले शाह यह देखकर हैरान रह गये। जब वह आदमी गाजरें लेकर चला गया तो बाबा बुल्ले शाह उस स्त्री के पास गये और पूछा कि "तुमने केवल उस आदमी को ही चुनकर अच्छी गाजरें क्यों दीं?" स्त्री ने कहा कि "फकीर जी! वह मेरा पति है। दो प्रेम करने वालों के बीच में कोई लेखा-जोखा, हिसाब-किताब नहीं होता।" गाजर बेचने वाली स्त्री की यह बात बाबा बुल्ले शाह के मन में भीतर तक घर कर गयी। उन्होंने हाथ में पकड़ी हुई माला को दूर फेंक दिया और कहा कि रब के प्रति प्रेम हो तो उसे याद करने में गिनती कैसी? जिसे प्रेम करते हैं उससे बस, प्रेम ही करते जाते हैं। प्रेम की यह भावना प्रेम करने से ही उत्पन्न होती है और इसका स्वाद भी वही जान सकता है जो प्रेम कर रहा है। सिक्ख गुरु साहिबान ने प्रेम को परमात्मा की भक्ति से जोड़कर भक्ति को निखारा, नवेला रूप प्रदान किया। उन्होंने परमात्मा-भक्ति को प्रेमा-भक्ति अर्थात् प्रेममयी भक्ति का नाम दिया। उन्होंने कहा कि मन में प्रेम-भाव हो तो ही परमात्मा को पाया जा सकता है जो नितांत सरल राह है। प्रेम के अतिरिक्त सारे प्रयास व्यर्थ हैं :

सहस सिआणप लख कंमि न आवही।
गिआन धिआन उनमानु अंतु न पावही।
लख ससीअर लख भानु अहिनिसि ध्यावही।
लख परकिरति पराण करम कमावही।
लख लख गरब गुमान लज्ज लजावही।
लख लख दीन ईमान ताड़ी लावही।
भाउ भगति भगवान सचि समावही ॥

(वार २१:७)

भाई गुरदास जी कहते हैं कि जब तक मनुष्य के हृदय में परमात्मा के प्रति प्रेम नहीं, श्रद्धा नहीं तब तक वो चाहे जितनी बुद्धि, युक्तियों का प्रयोग कर ले कितना ही जप-तप कर ले, परोपकार वाले कर्म कर ले, अपने दीन और ईमान को स्थिर रखने का यत्न करता रहे, विनम्रता धारण किये रहे, इन सबका कोई अर्थ नहीं। परमात्मा को मन में प्रेम-भाव रखकर ही पाया जा सकता है। वह तो बड़ा ही भाग्यशाली है जो परमात्मा के प्रेम में लीन होकर परमात्मा का स्मरण करता है :

हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥
वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३*

गुरि पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥१॥
मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥
मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥२॥
हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥
कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥
हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥३॥ (पन्ना ९४)

प्रेमा-भक्ति के लक्षण जो ऊपर बताये गये हैं वे एक गुरसिक्ख के लक्षण हैं। गुरसिक्ख परमात्मा को देखे बिना रह नहीं पाता। परमात्मा को देखे बिना उसे अपना अस्तित्व लुप्त होता जान पड़ता है। परमात्मा को पाने के लिये उसे कहीं कंदराओं में, ऊंचे पर्वतों पर अथवा वन में नहीं जाना पड़ता। गुरसिक्ख की दृष्टि इतनी सक्षम हो जाती है कि उसे परमात्मा अपने अंदर और बाहर सर्वत्र दिखने लगता है। अंतर की दृष्टि शुद्ध होती है तभी परमात्मा का रूप दिखता है और गुरसिक्ख समूची सृष्टि के साथ प्रेम का व्यवहार करने लगता है। मनुष्य किसी के साथ कठोर, अन्यायी तभी होता है जब उसे परमात्मा नहीं दिखता अर्थात् उसके मन में परमात्मा की सर्वव्यापकता का विश्वास नहीं होता है। गुरसिक्ख को विश्वास है कि परमात्मा का घट-घट में वास है और उसके अंदर प्रेम का ऐसा प्रवाह चल रहा है कि वह पल भर भी परमात्मा को देखे बिना नहीं रह सकता, क्योंकि परमात्मा तो उसके जीवन का आधार है। परमात्मा का प्रेम ही तो उसके जीवन को स्पंदित रख रहा है। वह तो दिन-रात परमात्मा के प्रेम में लीन रहता है स्वयं को तृप्त रखने के लिये :

अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥
जब लगु दरसु न होइ किउ अंम्रितु पीवीऐ राम ॥
किउ अंम्रितु पीवीऐ हरि बिनु जीवीऐ तिसु बिनु रहनु न जाए ॥
अनदिनु प्रिउ प्रिउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाए ॥ (पन्ना १११३)

एक गुरसिक्ख का जीवन सांसों पर नहीं चलता वरन् उसकी सांसें परमात्मा के प्रेम पर चलती हैं। वह सांसों पर नहीं, परमात्मा के प्रेम पर ज़िंदा रहता है :

हरि का नामु जन कउ धारै ॥
सासि सासि जनु नामु समारै ॥ (पन्ना १८९)

जब गुरसिक्ख परमात्मा के प्यार में अपने अस्तित्व को विलीन कर देता है तब परमात्मा प्रत्यक्ष नज़र आता है :

खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥
नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥ (पन्ना २६०)

मनुष्य दुखों से घिरा हुआ है। उसका मन अशांत है, ग्लानि से भरा हुआ है। उसने पाप-कर्मों से भौतिक सुख-सुविधा के साधन तो एकत्र कर लिये हैं, फिर भी उसे आंतरिक सुख नहीं है। मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे जाने से, पूजा-पाठ करने, से दान-पुण्य कर देने से ही कोई परमात्मा से नहीं जुड़ जाता, बल्कि इसके लिए अपनी जीवन-जाच को भी बदलना होगा। परमात्मा के साथ जुड़े होने का, उसके रंग में रंगे होने का प्रभाव मनुष्य की हर कार्य-प्रणाली से स्पष्ट नज़र आना चाहिए। सारे धर्म-कर्म करने के बाद भी मनुष्य ने अपने जीवन के अलग ही लक्ष्य तय किये हुए हैं। उसे पद-प्रतिष्ठा चाहिए, धन-सम्पदा चाहिए, वंश-परिवार चाहिए, शक्ति-अधिकार चाहिए। यदि ये सब उसे प्राप्त हो गया है तो उसमें वह निरंतर वृद्धि के लिये प्रयत्नशील है। इन सबसे ही उसका जीवन चलता है और इनमें अभाव से उसका

जीवन रुकता है। परमात्मा के दरबार में भी वह प्राय: परमात्मा से इन्हें पाने के लिए जाता है, कुछ त्यागने के लिये नहीं।

समर्पण का भाव एक गुरसिक्ख की विशेषता है, जिसके मन में प्रेम का सागर हिलोरे मार रहा है। उसे ज्ञान है कि जीवन का सार परमात्मा की शरण में ही है :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
(पन्ना १३३)

मनुष्य अपने कर्मों और संशयों के कारण परमात्मा से दूर होता जाता है और परेशान होता रहता है। परमात्मा की शरण में आने पर ही उसके संशय मिट पाते हैं और जीवन का भटकाव दूर हो पाता है। जैसे दूध के बिना गाय का कोई उपयोग नहीं है; जैसे फसल को जल से सींचा न जाये तो उसका कोई दाम नहीं रहता, वैसे ही हरि के बिना जीवन का कोई ठौर नहीं है। जहां परमात्मा की चर्चा नहीं है वह गांव, नगर निवासयोग्य नहीं है। ऐसे गांव, नगर दहकते हुए तंदूर की तरह हैं। गुरसिक्ख जानता है कि परमात्मा से प्रेम का सम्बंध ही परम सम्बंध है। उस सम्बंध के न होने पर सारे शेष सम्बंध निरर्थक हैं। परमात्मा के प्रेम का आभूषण नहीं तो शरीर के सारे श्रृंगार बेमानी हैं। गुरसिक्ख परमात्मा को अपने जीवन का आधार बनाकर चलता है और इससे ही उसका चित्त शांत होता है।

गुरसिक्ख अपनी बुद्धि-चतुराई पर भरोसा करना छोड़ देता है, अपने ज्ञान-ध्यान को दरकिनार कर देता है। वह परमात्मा के अनुरूप चलने में सुख का अनुभव करता है।

तुम्ह गउहर अति गहिर गंभीरा तुम पिर हम बहुरीआ राम ॥
तुम वडे वडे वड ऊचे हउ इतनीक लहुरीआ राम ॥
हउ किछु नाही एको तूहै आपे आपि सुजाना ॥
अंम्रित द्रिसटि निमख प्रभ जीवा सरब रंग रस माना ॥
चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥
नानक ठाकुर सरब समाणा आपन भावन करीआ ॥ (पन्ना ७७९)

एक गुरसिक्ख कभी भी अपनी इच्छा नहीं चलाता, क्योंकि वह परमात्मा को अपना खसम मानकर उससे प्रेम कर रहा है और उसे ज्ञानवान, सूझवान तथा श्रेष्ठ मान रहा है, इसलिए उसी की मर्जी से जीवन व्यतीत करता है। इस तरह जीवन जीने में उसे आनंद की भी प्राप्ति होती है। वह जानता है कि परमात्मा की आज्ञा मानने में ही उसका हित है और न मानने में अहित है। वह परमात्मा की दृष्टि से ही पूरे संसार को देखता है। परमात्मा से उसका प्रेम उसे परमात्मा की आज्ञा मानना ही नहीं वरन् सर्वत्र परमात्मा को विद्यमान देखते हुए उसके अनुरूप व्यवहार करना भी सिखाता है। उसका प्रेम परमात्मा के लिये ही नहीं उसके द्वारा सृजित सारी सृष्टि के लिए है।

इस सम्बंध में श्री गुरु अंगद देव जी के समय एक सिक्ख भाई मोना की साखी से एक निश्चित संदेश ग्रहण करना सरल होगा। भाई मोना लंगर में सेवा करता था, किंतु अपने अंदर भरे अहंकार के कारण लंगर में आये लोगों के

साथ दुर्व्यवहार करता रहता था। जब उसकी शिकायत सिक्खों ने गुरु साहिब से की तो उन्होंने भाई मोना को बुलाकर इसका कारण पूछा। भाई मोना ने कहा कि वह गुरु का सेवक है न कि अन्य लोगों का। श्री गुरु अंगद देव जी ने कहा कि यदि तुम मेरे सेवक हो तो जंगल में जाकर लकड़ियां एकत्र करो, उसकी चिता बनाओ और स्वयं का दाह संस्कार कर लो। गुरु जी की आज्ञा मानकर भाई मोना ने जंगल में जाकर लकड़ियां काटकर चिता तैयार कर ली और उसमें आग भी लगा ली, किंतु स्वयं उस पर लेटने की हिम्मत न कर सका। इस बीच वहां एक चोर आ गया और उसने भाई मोना से पूरी बात पूछी। सारा वृत्तांत जानकर चोर के मन में मुक्ति की इच्छा जागृत हो गयी और वह चुराकर लाई जेवरों से भरी गठरी भाई मोना को सौंपकर उस चिता में कूद गया। सिपाहियों द्वारा चोरी के जेवरों के साथ भाई मोना को गिरफ्तार कर फांसी पर लटका दिया गया। फलत: गुरु की आज्ञा को मानने के लिए मन में समर्पण की भावना का होना आवश्यक है। जहां यह भावना होती है वहां सिक्ख का प्रेम गुरु के अलावा गुरु के शिष्यों के साथ भी एक समान रहता है। यह शक्ति प्रेम से ही प्राप्त होती है। गुरसिक्ख परमात्मा पर विश्वास करता है और इसीलिए बिना किसी तर्क, बिना किसी संशय के उसकी आज्ञा का पालन करता है।

गुरसिक्ख परमात्मा से प्रेम करता है तभी परमात्मा का सच्चा स्वरूप जान पाता है। इस सच्चे स्वरूप को जानकर वह इतना अभिभूत हो जाता है कि परमात्मा के प्रेम का रस उसके रोम-रोम को सराबोर कर देता है और वह सदैव परमात्मा की बात करने में ही सुख पाता है :

मिलि हरि जसु गाईऐ हां ॥
परम पदु पाईऐ हां ॥
उआ रस जो बिधे हां ॥
ता कउ सगल सिधे हां ॥
अनदिनु जागिआ हां ॥
नानक बडभागिआ मेरे मना ॥ (पन्ना ४१०)

जो परमात्मा के रस में डूब गये उनके सारे कार्य सिद्ध हो गये अर्थात् उनका जीवन सफल हो गया। वे दिन-रात परमात्मा से जुड़े रहते हैं और इस कारण स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं। उनके मन में सदैव इच्छा रहती है कि वे परमात्मा का गुणगान करें, क्योंकि ऐसा करने से ही उन्हें मोक्ष प्राप्त होता है।

गुरसिक्ख वही है जिसे गुर-शबद (परमात्मा) में अपार सुख प्राप्त होता है :

तू सुणि हरि रस भिंने प्रीतम आपणे ॥
मनि तनि रवत रवंने घड़ी न बीसरै ॥
किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥
ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥
ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥
नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥ (पन्ना ११०७)

परमात्मा को पाने के लिये उससे प्रेम का सम्बंध स्थापित करना और उस प्रेम में सराबोर हो जाना कि स्वयं का अस्तित्व भी मिट जाये और मन परमात्मा से एकाकार हो जाये, एक ऐसा अनूठा मार्ग है, जो गुरसिक्ख की विशेषता है। इस मार्ग पर चलकर मनुष्य और परमात्मा के बीच की सारी दूरियां मिट जाती हैं।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : २

पंथ के बेताज बादशाह : बाबा खड़क सिंह

*-स. रूप सिंह**

गुरु-पंथ की सर्वोच्च संस्था श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा सम्मानित, पंथ के बेताज बादशाह के रूप में जाने जाते रहे, गुरु-पंथ की सम्मानित शख़्सियत बाबा खड़क सिंह का जन्म ६ जून, १८६२ ई को सियालकोट में प्रसिद्ध कारखानेदार तथा ठेकेदार स. हरी सिंह राय बहादुर के घर हुआ। प्राथमिक विद्या इन्होंने सकाट मिशन हाई स्कूल, सियालकोट से प्राप्त कर, स्नातक सरकारी कॉलेज, लाहौर से की। फिर ये वकालत की पढ़ाई करने के लिए इलाहाबाद चले गए, किंतु इनके पिता जी के परलोक गमन कर जाने के कारण इन्हें पढ़ाई बीच में ही छोड़कर घर वापिस आना पड़ा तथा इन्होंने सियालकोट की नगर निगम में सेवा शुरू कर दी। इस समय दौरान ही इनको श्री गुरु सिंघ सभा, सियालकोट व खालसा हाई स्कूल, सियालकोट के मुखिया चुन लिया गया। १९१२ ई में सिक्ख शैक्षणिक कान्फ्रेंस, जो सियालकोट में हुई, उसकी स्वागती कमेटी के मुखिया बाबा खड़क सिंघ थे। आप जी ने १९१५ ई में चीफ खालसा दीवान द्वारा करवाई गयी शैक्षणिक कान्फ्रेंस की अध्यक्षता की। १९२० ई में आप जी सिक्ख लीग के अध्यक्ष चुने गए। इनके पिता स. हरी सिंह को अंग्रेज राज्य के समय 'राय बहादुर' का खिताब मिला, परंतु बाबा खड़क सिंघ पहले सिक्ख अगुआ थे जिन्होंने अंग्रेज सरकार का हर जगह, हर तरीका प्रयोग करके विरोध किया। 'गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर' में ये प्रमुख सुधारक सिक्ख अगुआ के तौर पर संसार के समक्ष हुए। वास्तव में खालसा बहादुरी के तौर पर जो एकत्रिता जलियां वाला बाग में की गयी उसमें बहुत सारे पढ़े-लिखे प्रोफेसर तथा सुधारक सिक्ख अगुआ शामिल थे, जिनमें बाबा खड़क सिंघ, प्रिं. तेजा सिंघ, स. सुंदर सिंघ मजीठिया आदि प्रमुख थे। इस तरह खालसा बरादरी के सिंघों को अमृत छकाने, कान्फ्रेंस करने पर श्री हरिमंदर साहिब तथा श्री अकाल तख़्त साहिब पर हाज़िर होने में इन अगुआ लोगों का मुख्य हाथ था। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अस्तित्व में आने के पहले सरकार द्वारा जो ३६ सदस्यीय कमेटी बनाई गई थी, बाबा खड़क सिंघ उसके भी अध्यक्ष थे। १४ अगस्त, १९२१ ई को स. सुंदर सिंघ मजीठिया द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्षता पद से त्याग-पत्र देने पर बाबा खड़क सिंघ को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया। वास्तव में महंतों-पुजारियों तथा सरबराहों ने गुरुद्वारा प्रबंध तथा जायदाद को मनमर्जी-ऐशोइशरत एवं अंग्रेज अफसरशाही को खुश करने के लिए खूब प्रयोग किया। इसकी सबसे घिनौनी मिसाल जलियां वाला बाग के साके के मुख्य दोषी जनरल डायर को श्री दरबार साहिब में सम्मानित करना तथा उसको सिक्ख घोषित करना था।

महंतों-पुजारियों की कुरीतियों को मात देने के लिए गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर तथा अकाली

**निर्देशक, सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड, शि. गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००१; मो. ९८१४६-३७९७९*

लहर चलायी गयी। इस लहर का मुख्य लक्ष्य गुरुद्वारा प्रबंध को सिक्ख सिद्धांतों, मर्यादा तथा परंपरायों के अनुसार चलाना, महंतों की गुंडागर्दी को खत्म करना, गुरुद्वारा-जायदाद को संगतीय प्रबंध में लाना, गुरबाणी के उद्देश्य तथा शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना माना गया।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर तले पहला गुरुद्वारा बाबे दी बेर, सियालकोट पंथक प्रबंध में आया, जो बाबा खड़क सिंघ की जन्म-भूमि थी। फिर श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर; श्री दरबार साहिब, तरनतारन; गुरुद्वारा पंजा साहिब, गुरुद्वारा जन्म स्थान श्री ननकाणा साहिब आदि ऐतिहासिक महत्ता वाले स्थान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंध तले आये।

बाबा खड़क सिंघ ने अपनी ज़िंदगी के कीमती २० वर्ष जेल में बिताए। आप जी को १५ बार जेल-यात्रा करनी पड़ी। श्री दरबार साहिब के तोशेखाने की चाबियां, जो ज़िलाधिकारी, श्री अमृतसर ने धक्केशाही से छीन ली थीं, का मोर्चा इनकी सूझबूझ तथा सियानप से १७ जनवरी, १९२२ ई को जीता गया। वास्तव में नयी चुनी गयी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया सचिव चुने गये, जो सरकार द्वारा स्थापित पहले सरबराह (मैनेजर) थे। १९ अक्तूबर, १९२१ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की मीटिंग में फैसला किया गया कि तोशेखाने की चाबियां शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष बाबा खड़क सिंघ के हवाले की जायें, परंतु ज़िलाधिकारी श्री अमृतसर ने चाबियां पुलिस द्वारा स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया से खुद ले लीं, जिस पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने मोर्चा लगा दिया।

अंततः सरकार को सिक्ख-शक्ति के आगे झुकना ही पड़ा और तोशेखाने की चाबियां संगत में बाबा खड़क सिंघ के सुपुर्द की गयीं। इस पंथक विजय पर महात्मा गांधी ने बधाई की तार दी : "भारत की आज़ादी की पहली लड़ाई जीत ली गयी है, बधाई हो!"

१९२२ ई के अप्रैल महीने में इनको दोबारा गिरफ्तार कर लिया गया तथा निरंतर १९२७ ई के जून महीने तक वे जेल में रहे। बाबा खड़क सिंघ ने जेल-यात्रा के समय अपने पद-पदवी एवं शैक्षणिक योग्यता के अनुसार सहूलतें नहीं लीं बल्कि अन्य सिक्ख कैदियों की तरह साधारण कोठड़ी में ही रहे। अंग्रेज सरकार ने जेल में सिक्खों द्वारा काली दसतार सजाने और हिंदू लोगों को गांधी टोपी पहनने पर पाबंदी लगा दी। बाबा खड़क सिंघ आक्रोश में आ गए। उन्होंने ककारों के अलावा सारे वस्त्र उतार दिए। पूरी सर्दी में नग्न शरीर में ही रहे। आखिर सरकार को झुकना पड़ा। गुरुद्वारा एक्ट पास हो जाने पर सरदार बहादुर महिताब सिंघ की अगुआई में नर्म ख़्याल वाले अगुओं ने सरकार की शर्तें प्रवान कर लीं तथा जेल से बाहर आ गए, किंतु बाबा खड़क सिंघ आदि को सरकार की शर्तें प्रवान नहीं थीं।

इनके साथी स. तेजा सिंघ समुंदरी जेल में ही परलोक सिधार गये, किंतु शर्तों अधीन रिहायी प्रवान नहीं की। ८ अगस्त, १९२२ ई को गुरु के बाग का मोर्चा लग गया। यह मोर्चा १७ नवंबर, १९२३ ई तक निरंतर चलता रहा। हज़ारों निहत्थे अकाली वर्कर इस मोर्चे के दौरान अंग्रेज सरकार के जब्र-जुल्म का शिकार हुए।

सिक्ख गुरुद्वारा कानून बनने तथा इसको पंथक प्रवानगी मिलने पर जून, १९२६ ई में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का चुनाव

हुआ। अकाली दल के मुकाबले सरदार बहादुर पार्टी को बुरी तरह से पराजय का सामना करना पड़ा। नामज़दगियों के बाद २ अक्तूबर, १९२६ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के कार्यालय में ११ बजे एकत्रिता हुई, जिसमें १५० सदस्य हाज़िर हुए। एकत्रिता में चेयरमैन स. मंगल सिंघ को चुना गया। बाबा खड़क सिंघ सर्वसम्मति से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष चुने गये, जो कि उस समय लाहौर जेल में नज़रबंद थे। इस एकत्रिता में मास्टर तारा सिंघ को सदस्य नामज़द किया गया, जो चुनाव के समय उपाध्यक्ष चुने गये। इस एकत्रिता में पहले शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का नाम प्रवान किया गया। इस मीटिंग में सिक्ख कैदियों की रिहाई, कार्यालय के कार्य पंजाबी भाषा में करने तथा जात-पात के विरोध का प्रस्ताव पारित किया। बाबा खड़क सिंघ की अध्यक्षता में ही सिक्ख रहित मर्यादा निर्धारित करने का ऐतिहासिक फैसला हुआ। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के हिसाब को संगतीय रूप में पारदर्शी करने के लिए मासिक पत्र 'गुरुद्वारा गज़ट' प्रकाशित करना शुरू किया।

१९२९ ई में कांग्रेस पार्टी ने श्री अमृतसर में वार्षिक कान्फ्रेंस की। उसी समय बाबा खड़क सिंघ ने सिक्ख कान्फ्रेंस बुला ली, जिसमें ऐतिहासिक इकट्ठ हुआ। इसने कांग्रेस पार्टी की कान्फ्रेंस को बुरी तरह से प्रभावित किया तथा सिक्खों की नाराज़गी दर्ज करवायी। बाबा खड़क सिंघ फरवरी, १९२६ ई से लेकर १२ अक्तूबर, १९३० ई तक निरंतर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष के कार्यभार को संभालते रहे। इनके बाद मास्टर तारा सिंघ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष चुने गये। बाबा खड़क सिंघ १९३९ ई तक सिक्ख राजनीति में सरगर्म रहे। इसी समय इन्होंने 'सेंट्रल अकाली दल' नाम की एक पार्टी बनायी, किंतु इस कार्य में वे ज्यादा सफल नहीं हो सके। इसका कारण शायद यह है कि जिस कांग्रेस पार्टी को सिक्ख दुश्मन मानते थे, उनके साथ इन्होंने समझौता कर लिया था।

बाबा खड़क सिंघ के ८६वें जन्म दिन के समय भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने इनको सम्मान एवं सत्कार के रूप में चांदी का बना हुआ भारत का राष्ट्रीय ध्वज भेंट किया तथा कहा कि राष्ट्रीय ध्वज के गौरव को कायम रखने तथा मान-मर्यादा को ऊंचा उठाने के लिए बाबा जी के हाथों से और अच्छा हाथ कोई नहीं।

देश के विभाजन के समय इनको सियालकोट छोड़कर दिल्ली आना पड़ा। इन्होंने अपना निवास अलीगंज रोड, नई दिल्ली में किया। वास्तव में इनके इकलौते पुत्र स. प्रिथीपाल सिंघ की कुल्लू-मनाली सड़क पर घटित एक हादसे में मृत्यु हो गयी, जिसके बाद इन्होंने राजनीतिक जीवन से सन्यास ले लिया। ज़िंदगी के अंतिम दिनों में ये अकेले पड़ गये। पंथ के बेताज बादशाह कहलाने वाले बाबा खड़क सिंघ को ज़िंदगी की अंतिम घड़ियां निराशा में दिल्ली में व्यतीत करनी पड़ीं। ६ अक्तूबर, १९६५ ई को ८५ वर्ष की उम्र में दिल्ली में ये परलोक गमन कर गये।

इनके तीन पौत्र-- स. जगत सिंघ, स. जगजीत सिंघ तथा स. मनजीत सिंघ हैं, जो ठेकेदारी का पैतृक कार्य करते हैं। बाबा खड़क सिंघ की याद में भारत सरकार ने एक मार्ग का नाम 'बाबा खड़क सिंघ मार्ग' रखा है।

गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर बाबा खड़क सिंघ की योग्य अगुआई में आज़ादी लहर से जुड़

गयी। बाबा खड़क सिंघ स्वतंत्र सिक्ख-सोच के धारणी थे। उदाहरण के तौर पर इन सिक्ख नेताओं ने एक से ज्यादा बार ऐलान किया कि वे असहयोग वाले हैं। वे कोई भी सफाई पेश करने के लिए तैयार नहीं, क्योंकि उनके मन में विदेशी सरकार, अदालतों तथा इसके कानून के प्रति कोई आस्था नहीं। अदालत में बाबा खड़क सिंघ द्वारा दिया बयान एक उदाहरण है जो उनकी दिलेरी, स्पष्टता, स्वतंत्रता, सिक्ख सोच तथा सिक्खी भावना की तर्जमानी करता है।

"सरकार इस ज़ोर-जबरदस्ती की एक पार्टी है तथा जज इसका मुलाज़िम है इसलिए मैं कोई बयान देने की इच्छा नहीं रखता। सिक्ख पंथ के अध्यक्ष के रूप में मेरी पदवी वह है जो अमेरिका, फ्रांस तथा जर्मन के प्रधानों की है।" *(बाबा खड़क सिंघ, लेखक डॉ. महिंदर सिंघ, पृष्ठ ३७)*

सत्य-संतोष, सिक्खी सिदक, भरोसे, सादगी तथा चढ़दी कला के सद्गुणों के धारक बाबा खड़क सिंघ कथनी तथा करनी के शूरवीर बली थे। बाबा खड़क सिंघ तथा सिक्ख नेताओं की दिलेरी का सदका, सिक्ख संगत भय-रहित हो गई तथा तन-मन-धन से विशाल अंग्रेज साम्राज्य के विरुद्ध डट गयी। ☸

नवंबर १९८४ का सिक्ख कत्लेआम

(पृष्ठ ४७ का शेष)

गिरने की बात नहीं थी, बल्कि पेड़ से बांधकर, सत्ता के नशे में अंधे होकर केवल सिक्खों को ही चुन-चुनकर निशाना बनाने की बात थी।

आज तक सिक्ख न्याय के लिए आशा लगाये बैठे हैं, परंतु असंभव लगता है कि किसी गुनहगार को सज़ा दी जाये। पहला कारण **Justice delayed, Justice not delivered.** दूसरा, 'खुदा मेहरबान तो गधा पहलवान' वाली कहावत है। इस कांड की व्यूह-रचना करने वाले, पुलिस प्रशासन को कार्यवाही न करने की हिदायत देने वाले, साक्ष्य एकत्रित करने वाले, सभी तो मिले हुए हैं। पूछताछ एवं पड़ताल जहां से प्रारंभ हुई लगभग वहीं की वहीं खड़ी है। कुछ खास लोगों के नाम सामने आये भी, परंतु उन पर भी कोई कार्यवाही नहीं हुई और अब भी वे सरेआम देश की राजनीति में सम्मानित दर्जा पाये हुए हैं जो कि सिक्खों के ज़ख़्मों पर नमक छिड़कने वाली बात है। "जो एक को मारे वह कातिल और जो हजारों-लाखों को मारे वह हाकिम" शायद यही दसतूर निभाया जा रहा है सिक्खों की भावनाओं को आहत करके।

चार दिन तक सिक्ख कत्लेआम की घिनौनी कार्यवाही करवाना, कातिलों व गुंडों को हथियार उपलब्ध करवाना, पुलिस द्वारा पीड़ित सिक्खों की कोई शिकायत न सुनना और उन्हें भगा देना; यदि कहीं सिक्ख विरोध आदि के लिए इकट्ठा होने लगे तो पुलिस द्वारा उन्हें कर्फ्यू का डर देकर इकट्ठे न होने देना और कातिलों की मदद करना जो कि कर्फ्यू में भी सरेआम घटनाओं को अंजाम दे रहे थे, ऐसे हालात थे जो कि देश की आज़ादी के लिए सर्वाधित संख्या में शहीद होने वाली कौम का नामो-निशान मिटाने के तुल्य थे।

आइये! हम सभी मिलकर उन सिक्ख शहीदों को प्रणाम करें जो इस कत्लेआम में शहीद हुए थे। साथ ही यह भी प्रण लें कि जब तक कातिलों को सज़ा नहीं मिलती तब तक न्याय हेतु संघर्ष जारी रखेंगे। ☸

ख़बरनामा

धर्म प्रचार कमेटी द्वारा ली जाने वाली इस वर्ष की धार्मिक परीक्षा की डेटशीट जारी

श्री अमृतसर : 4 अक्तूबर : सिक्ख पंथ की धार्मिक जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा दुनियावी विद्या के साथ-साथ धार्मिक विद्या के प्रचार-प्रसार के लिए आरंभ की गयी मुहिम तले पूरे भारत भर में जिन स्कूलों/कॉलेजों के विद्यार्थियों ने फार्म भरे हैं, उनकी इस वर्ष की धार्मिक परीक्षा 16 तथा 17 नवंबर, 2012 को ली जायेगी।

धार्मिक परीक्षा में पूरी तैयारी के साथ बैठने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि धर्म प्रचार कमेटी द्वारा स्कूलों/कॉलेजों में पढ़ते बच्चों को गुरमति से जोड़ने के लिए गुरबाणी, गुर-इतिहास, सिक्ख इतिहास तथा सिक्ख रहित मर्यादा सम्बंधी सिलेबस के अनुसार ली जाती धार्मिक परीक्षा की डेटशीट जारी कर दी गई है। डेटशीट के अनुसार 16 नवंबर, 2012 शुक्रवार को गुरबाणी व गुरु-इतिहास तथा 17 नवंबर, 2012 शनिवार को सिक्ख इतिहास व सिक्ख रहित मर्यादा की परीक्षा सुबह 10:00 बजे से दोपहर १:०० बजे तक ली जाएगी। उन्होंने कहा कि धार्मिक परीक्षा विभाग के समूचे स्टाफ की मेहनत सदका यह परीक्षा सही समय पर लेने के लिए हर प्रकार के आवश्यक प्रबंध आदि पूरे कर लिए गए हैं। इस परीक्षा में से मैरिट में आने वाले विद्यार्थियों को उत्साहित करने के लिए धर्म प्रचार कमेटी द्वारा वज़ीफा तथा सर्टीफिकेट दिए जाएंगे।

उन्होंने कहा कि धार्मिक परीक्षा में शामिल होने वाले समस्त स्कूलों/कॉलेजों के प्रिंसीपल/प्रबंधक साहिबान को बताया जाता है कि अगर उनको विद्यार्थियों के रोल नंबर १० नवंबर, २०१२ तक प्राप्त नहीं होते तो वे कार्यालय, धर्म प्रचार कमेटी के फोन नंबर : 0183-2553956, 57, 58, 59; एक्स. ३०५ पर समय सुबह 10:00 बजे से 4:30 बजे तक संपर्क कर सकते हैं।

कुवैत सरकार जेल प्रशासन के विरुद्ध कार्यवाही करे : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २१ सितंबर : कुवैत देश के जेल अधिकारियों द्वारा गुरदासपुर ज़िले से सम्बंधित गांव पंनूआं के निवासी अमृतधारी सिक्ख नौजवान स. प्रगट सिंघ के केश कत्ल किए जाने का जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सख़्त नोटिस लेते हुए इसको धार्मिक आज़ादी तथा मानवीय हकों की उल्लंघना करार दिया है।

उन्होंने कहा कि सिक्ख अपने शरीर पर हर प्रकार का दुख-तकलीफ सहन कर सकता है, परंतु गुरु द्वारा बख़्शिश करारों का अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता। केश गुरु की मुहर

हैं तथा अमृतधारी सिंघ के केश कत्ल करने कदाचित बर्दाश्त नहीं। कुवैत देश के जेल अधिकारियों की इस कायरतापूर्ण कार्यवाही से सिक्ख हृदयों को भारी ठेस पहुंची है तथा इस मामले में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा विदेश मंत्री-- भारत सरकार तथा दिल्ली स्थित कुवैत देश के दूतावास को भी पत्र लिखा गया है। जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि रोज़ी-रोटी की खातिर विदेशों में जाने वाले नौजवानों को चाहिए कि वे फर्ज़ी एजेंटों के चंगुल में न आएं, बल्कि कानूनी तरीके से ही विदेशों में जाएं, ताकि दूसरे देश में जाकर किसी किस्म की मुश्किल न आए। उन्होंने फर्ज़ी एजेंटों को भी कहा कि वे विदेश भेजने के नाम पर सिक्ख नौजवानों की लूट-खसूट करने से बाज आएं। उन्होंने कहा कि देश कोई भी हो इसका मतलब यह नहीं कि किसी नागरिक की धार्मिक आज़ादी पर हमला करके उसकी मानसिकता को ठेस पहुंचाई जाए।

जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा ५६ नए प्रचारकों को नियुक्ति-पत्र दिए

श्री अमृतसर : १३ सितंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सिक्खी के प्रचार तथा प्रसार को और तेज करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब से प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा को देश के अलग-अलग राज्यों में घर-घर तक पहुंचाने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं। जो नौजवान पतित होकर, सिक्खी से दूर जाकर नशे की दलदल में गलतान हो रहे हैं उनको प्रेरित करके गुरसिक्खी की मुख्य धारा में लाने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं। इन प्रयत्नों को और आगे बढ़ाते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने धर्म प्रचार कमेटी के लिए भर्ती किए ५६ प्रचारकों को नियुक्ति-पत्र दिए, जिनमें पांच महिलाएं भी शामिल हैं।

नव-नियुक्त प्रचारकों को बधाई देते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि वे सभी भाग्यशाली हैं जिनको सिक्ख पंथ की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी में सेवा करने का मौका मिला है। उन्होंने कहा कि इस संस्था में आने का तभी फायदा है यदि गुरु को समर्पित होकर सिक्ख रहित मर्यादा के बारे में जानकारी घर-घर तक पहुंचाई जाए तथा जो नौजवान पतित हैं उनको गुरु साहिब द्वारा बख़्शिश मर्यादा के बारे में जानकारी देकर गुरसिक्खी की मुख्य धारा में शामिल किया जाए। उन्होंने कहा कि सभी प्रचारक श्री अकाल तख़्त साहिब से प्रवानित सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार ही प्रचार करें।

धर्म प्रचार कमेटी के अपर सचिव स. सतबीर सिंघ ने नव-नियुक्त प्रचारकों को दफ्तरी नियमों के बारे में विस्तार सहित जानकारी देते हुए कहा कि पंजाब प्रांत से बाहर दिल्ली, बंगाल, यू. पी., आंध प्रदेश, राजस्थान आदि मिशनों में भी प्रचारकों की ड्यूटी लगाई जाएगी। सभी प्रचारक मेहनत तथा लगन से सेवा-भावना के साथ ड्यूटी करें।

श्री अकाल तख़्त साहिब में सुशोभित ऐतिहासिक शस्त्रों की सेवा आरंभ

श्री अमृतसर : १३ सितंबर : मीरी-पीरी के मालिक श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ऐतिहासिक शस्त्र, जो श्री अकाल तख़्त में सुशोभित हैं तथा जिनके हर रोज़ शाम के दीवान की समाप्ति के उपरांत संगत को दर्शन करवाए जाते हैं, के मुट्ठे, म्यान, पिस्तौल के कवर पुरातन हो जाने के कारण उनकी सेवा बाबा नरिंदर सिंघ हज़ूर साहिब वालों ने प्रारंभ की है। जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि ज्ञानी गुरमुख सिंघ, मुख्य ग्रंथी, श्री अकाल तख़्त साहिब के विशेष प्रयत्न का सदका कार्यकारिणी की मीटिंग में सारा मामला विचारने के उपरांत सेवा करवाने का अहम फैसला लिया गया है तथा गुरु साहिब की कृपा सदका यह सेवा आरंभ हो गयी है। जो भी शस्त्र भोरा साहिब में सेवा के लिए ले जाये जाएंगे वे शाम तक दीवान समय संगत को दर्शन करवाने से पहले श्री अकाल तख़्त साहिब में वापिस सुशोभित कर दिए जाएंगे।

श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ द्वारा ऐतिहासिक सेवा की आरंभता के समय अरदास की गयी, उपरांत जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सिक्ख पंथ के वाली साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज की ऐतिहासिक श्री साहिब (कृपाण); सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की मीरी तथा पीरी की दो श्री साहिब; ज्ञानी गुरमुख सिंघ, मुख्य ग्रंथी, श्री अकाल तख़्त साहिब ने श्री अकाल तख़्त साहिब के भूतपूर्व जत्थेदार अकाली फूला सिंघ जी का खंडा; कार-सेवा वाले बाबा नरिंदर सिंघ जी हज़ूर साहिब वालों ने बाबा बुड्ढा जी की श्री साहिब तथा बाबा अवतार सिंघ (बिधी चंद संप्रदाय वालों) ने भाई जेठा जी की श्री साहिब श्री अकाल तख़्त साहिब के नीचे कार-सेवा वाले स्थान भोरा साहिब में सत्कार सहित पहुंचायी। इस अवसर पर संगत द्वारा 'सतिनाम-वाहिगुरू' का जाप किया गया।

सिंघ साहिब ज्ञानी गुरबचन सिंघ, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब ने संगत के सन्मुख होते हुए कहा कि वे जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के धन्यवादी हैं जिनके उद्यम सदका कार्यकारिणी ने अहम फैसला करके ऐतिहासिक शस्त्रों की सेवा बाबा नरिंदर सिंघ हज़ूर साहिब वालों को सौंपी तथा इस पर तुरंत अमल करवाया गया।

इस अवसर पर जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा ज्ञानी गुरबचन सिंघ, ज्ञानी गुरमुख सिंघ, बाबा नरिंदर सिंघ हज़ूर साहिब वाले तथा बाबा अवतार सिंघ (बिधी चंद संप्रदाय वालों) को सिरोपा देकर सम्मानित किया गया।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-११-२०१२